

॥ श्रीहृदयानमोनमः ॥ अथदशमस्कंधगतगर्धलिस्मृते ॥ दोहा ॥ श्रीहृदयान्प्रवतारमें कही  
 वृषरक्षणकाज ॥ देहधरेगेसोभये ॥ निकंठवमाहाराज ॥ १ ॥ याकेचरनसरोजकी ॥ सेवनकुमकर  
 द ॥ मधुकररूपीहोतहे ॥ यरमहंसकेठंद ॥ २ ॥ सोममइष्टअभीष्टहे ॥ वाकीआग्पापायु ॥ भूमानंद  
 भाषाकरुं ॥ सोइरहोउरआयु ॥ ३ ॥ डुरगरचेपंचासमे ॥ निजजनवासेलाइ ॥ सिंधुमेंश्रीहृदयने  
 मागधसंइरपाइ ॥ ४ ॥ चोपाइ ॥ छुककहीअस्तिरुपापितोउं ॥ पतिवधसेगोकातरसोउ ॥ मगध  
 राजतरसंधतांइ ॥ विधवाभइकिनतातघरुंजाइ ॥ ५ ॥ कंनिजरासंधइरपाआनि ॥ जादवुविनती  
 मिकरुंउरसानी ॥ त्रैवित्राक्षोणीसेनालाइ ॥ मधुरांरुंधिचोआरआइ ॥ ६ ॥ सोवलसिंधुवेलसम  
 देखि ॥ रुंधेपुरजनभयजूनलेखि ॥ चिंतनहरिमनुष्यभयेजोउं ॥ भूभारहरनअप्रवतारसोउ ॥ ७ ॥ भूभा  
 रसवनपवंसकीसेना ॥ हनेगेहमजरासंधवीना ॥ भटरथगतवातीसेनरेग ॥ मागधलावेगेवेरवेरो  
 ८ ॥ दोहा ॥ हरनभूतलकोभार ॥ रक्षाजियेसाधुजनकी ॥ हेअसममअप्रवतार ॥ अधर्मकुरुकेवध  
 अर्थ ॥ ९ ॥ चोपाइ ॥ धर्मरक्षालियुंअम्यदेहा ॥ धरेगेअधर्ममेदनतेहा ॥ याविधविचारकीनहरा

जवही ॥ रविजुंरथआइंनभसंतवही ॥ १० ॥ धजाकवचसारथिजूनरोइ ॥ निजआयुधदिव्यजिरा  
 जोइ ॥ हरिगामकुंकहेवउभाइ ॥ देवजतडुकुडवपरेआइ ॥ ११ ॥ आयुधजूनअसरथमेंगरी ॥ गूनु  
 हनिनिजजनलेउधारी ॥ अयनेजनमसाधकरवकाजा ॥ मारत्रैवित्राक्षोणीसवरजा ॥ १२ ॥ याविधवी  
 चारकरविरदोउं ॥ बगतधरवैवेरथसोउ ॥ आयुधधरसंगलइवलथीग ॥ निकसेपुरबाहरजूनतो  
 ग ॥ पुनिदारुकजूनतशांखवजावा ॥ अरिंकंनिउरभयकंपपावा ॥ मागधदेरवकहेदिगआइ ॥ हृदय  
 पुरुषमेअधमकहाइ ॥ १४ ॥ राकवालसेंजूधकरुंनोही ॥ मंदबधहनजाउंपलाही ॥ छुपिरहनजन  
 केउरसांइ ॥ तासेलरुमोरलजाताइ ॥ १५ ॥ दोहा ॥ बललरअधाधिरधर ॥ स्वरगलोकचलजाउ ॥ मो  
 रबाणसेंदेहतजी ॥ मोयमारमेआउ ॥ १६ ॥ चोपाइ ॥ प्रभूकहीकरसामथदेवावे ॥ कुछितवचकळ  
 मुरसुसेनगांवे ॥ मरनइछतआतूरतबानी ॥ हमनदीगुहागकरेकुगजानी ॥ १७ ॥ छुककहीमागधह  
 रिदिगजाइ ॥ सेमसमूहमेंघेरनआइ ॥ वायुवेदरसेंजनुरविछाये ॥ रतसेअनलजुसेंनलुपाये ॥ १८  
 गरुडतालेधजूनतरथोउ ॥ त्रियानदेखतजूधमेंसोउं ॥ हर्मअकासिपोलपरवारी ॥ सोकानूर

मोहपाईभारी ॥१०॥ मागध बलजनुं घनचरिआवा ॥ तिक्षणवाणधारवरसावा ॥ तासेपिडितनी  
जसेमतेई ॥ सारंगधनुषचरावतसोई ॥ २० ॥ सोरवा ॥ सरनिषंगसुनिकास ॥ धरिपणसमेतानित  
जत ॥ रथवाजीगतनरनास ॥ करततीक्षणावाणकुंसे ॥ २१ ॥ चोपाई ॥ जलतकाएचक्रहोतजेसे ॥ रा  
रतवाणानिरंतरतेसे ॥ कटेकुंभस्थलकरिभूमांई ॥ गिरततुरंगसबकुंधकराई ॥ २२ ॥ ध्वजसुतवा  
जिनायकरथतांई ॥ छिनभूतकंधरुपालगिराई ॥ गजवातीनरतनुंकटेजे ॥ रुधिरनदीचलिबर  
नुंमेंतेई ॥ २३ ॥ भुजस्रहीसिरकलकरउरुमिना ॥ केशवोवलधनुतरगकिना ॥ गजवेरयाहहृथरा  
रजाला ॥ चक्रचरमजनुंभमरिविज्ञाला ॥ २४ ॥ मणीउत्तमकेउभूषणजेई ॥ कंकरपथरनदीमेंतेई  
विवेताकुंभयप्रदभारी ॥ सगरकुंहेअतिहर्षकारी ॥ २५ ॥ रोहा ॥ सोनदिसंग्रामेकिये ॥ मूजाल  
कुंसेअरामार ॥ रुधिरकुंकीवलदेवने ॥ दुष्टकुंसेहार ॥ २६ ॥ चोपाई ॥ अणवसुंडस्तरभयदाता  
जगसुतयासेसुकुपाता ॥ सोसेनाक्षयकिनेजेई ॥ हृष्टमरामकिजिजेतेई ॥ २७ ॥ जगतनाथुलिला  
सेतेहा ॥ करहरपालहीजगकुंजेहा ॥ अरिमारियहआश्चर्यनाई ॥ मनुष्यकरेसुंघभूकहाई ॥ २८ ॥

विनरथसेनविनजितततोई ॥ जरासंधकुंपकरेसोई ॥ पकरेसिंहसिंहकुंजेसे ॥ वरुणापाससेवांधेते  
से ॥ २९ ॥ गोविंदकहिबलत्तमनमारो ॥ यासेअपनोकाजसुधारो ॥ हृष्टमरामनेछोरेजबही ॥ त  
पकरनेकुंचलेउतबही ॥ ३० ॥ गोकहीराजानितिबचलाई ॥ अर्पणप्रारधवंकेभाई ॥ तल्लतादवकी  
जितभयेई ॥ तोरलजानहीजावतेई ॥ ३१ ॥ सोरवा ॥ मरगयेनुसबसेन ॥ छोउजगसुतहरिऊने ॥  
उदासिहोयहीदेन ॥ मगधदेशगयेउचली ॥ ३२ ॥ चोपाई ॥ हरिअरिअणवतरगयेतबही ॥ अणव  
उवलदेवपुतततबही ॥ सुतमागधवंविमथुगंवासी ॥ आयेसमीपेजतमुदहासी ॥ ३३ ॥ शंखंड  
भिभेरित्तरिवेण ॥ विणामुदंगवाजेनूतरेण ॥ पुरसेपेवेजनमुदकारी ॥ सिंचेमगपताकुंधजधारी  
३४ ॥ उल्लवसेंधतोरणजामे ॥ ब्राह्मणावेदभणबहुतामे ॥ दधिअक्षतअकुरकुललाई ॥ वधान  
नारीहरिकुंमुदाई ॥ ३५ ॥ फूलेजीचनसेंदेखनारी ॥ हरिकुंरामवतउरमेंधारी ॥ रणमसुराकेभूषणजे  
ते ॥ उग्रसेनकुंलाडुदिततेते ॥ ३६ ॥ रोहा ॥ जगसंधवेरसतरे ॥ वेविशक्षोणिसेन ॥ लाडुलरेजाद  
वसे ॥ हारिगयेलजाहीन ॥ ३७ ॥ चोपाई ॥ अणवसेनजादवसबजेई ॥ सेनमारिछोरेनूपतेई ॥ नू

धर्मवारमेऽप्रायेषेले ॥ कालजवनकुंनारदवेले ॥ ३६ ॥ स्त्रील्लकीतिनिनसंगेलाई ॥ मथुरांरुंधिचक्रं  
 प्रोरःप्राई ॥ याकुंदेखविचारतरीउ ॥ जडकुंडखरीउःप्रोरसोउ ॥ ३७ ॥ अवरिकेउजवननभाई ॥ इनमं  
 गेजीलेऊंलगड ॥ इतनेमैमागधविधाइ ॥ प्राजकालपरस्कदिनःप्राइ ॥ ४० ॥ वधऊंकुंदेवेगमारी  
 लेजावेगेनिजपुरहार ॥ याकारणसिंधुविचजाई ॥ डुरगजूनएकनगररचाई ॥ ४१ ॥ नरकीउःतामेजा  
 ननपाई ॥ जादवकुतामेपोचाइ ॥ पुनिजवनःउरंगेमारी ॥ युहरिहलधरदोउविचारी ॥ ४३ ॥ सोरवा  
 द्वादश्याजोनकोर ॥ सिंधुविचविशकमासें ॥ रचेनगरचौःप्रोर ॥ सोभामवहीलाईधरी ॥ ४३ ॥ चो  
 पाई ॥ राजमृगचोकमेरिकीगारा ॥ कंचनरचितदेवःप्रागारा ॥ स्फाटिकहेमकुंभजूनःप्रकामी ॥  
 हेमशिवरपालपरजुतासी ॥ ४४ ॥ सप्तधातूरचिःप्रन्नशाला ॥ मारकतरचितभुमिजूनमाला ॥ दे  
 वडुमस्ततनुपवनजेऊं ॥ तासेहृत्तनभुपरसेगेऊं ॥ ४५ ॥ वलभिचंद्रशालसेंगते ॥ जडदेवःप्रोरदेवपु  
 रलीते ॥ चंद्रवरतकेगेहसेगऊं ॥ वरनेपूरशोभाजूनतेऊं ॥ ४६ ॥ सभासुधरमारुपारिजाता ॥ इंद्रदे  
 तहरिकुंविआता ॥ सोसभामहीबेठतजाइ ॥ घटउरमिनहीआपतताइ ॥ ४९ ॥ हयश्चेतकरणएक ॥ ३ ॥

कारा ॥ वरुणदिनमनसमवेगवारा ॥ प्रष्टकीशकुवेरदिनलाई ॥ सवलोकपालसमरधिताई ॥  
 ४६ ॥ दोहा ॥ मिनकुर्ममहापद्यतो ॥ प्रादकनीलमुकुंद ॥ शंखपद्यकोशःप्रष्टही ॥ नामहिमा  
 याकंद ॥ ४६ ॥ अधिकारःप्रागेदिये ॥ हरिनेसोसवदेव ॥ भूमिप्रगटप्रभूदेखकी ॥ प्ररपतलाई  
 ततरेवव ॥ ५० ॥ प्रभूपूनिजोगकलाऊंसें ॥ सबजनपुरपोचाइ ॥ प्रजापालवलकुंकही ॥ वितःप्रा  
 युधुचलथाइ ॥ ५१ ॥ इतिश्रीमत्तभागवत ॥ दशमस्कंधमीजेऊं ॥ जनडुर्गमेंपवायेतो ॥ भूमानंदक  
 हेऊं ॥ ५२ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदरुतभाषायार्थचारातमो ॥ ध्यायः ॥ ५०  
 दोहा ॥ मुचकुंददहगहीजवनहनि ॥ धुधुएकावनमांही ॥ पुनिमुचकुंदस्तवनकीय ॥ हरिकीसो  
 कऊंगाइ ॥ १ ॥ चोपाई ॥ शुककहीपुरसैनिकसिदपामा ॥ चलतचंदनाईशोभाधामा ॥ पितहीरा  
 गलपरःप्रगधारी ॥ श्रीवल्लउरकौस्तभकंवउरी ॥ ३ ॥ चऊंभूजपिनदिरघजूनतएऊं ॥ रक्तकमलस  
 महगधरनेऊं ॥ मंदहासगंउरकंदरधारी ॥ मुखजूनकुंडलमकोकारी ॥ ३ ॥ याविधदेवतवनकहे  
 एऊं ॥ नारदकीनलछनप्रभूतेऊं ॥ चऊंभूजश्रीवल्लकमलमाला ॥ प्रायुधविनचलतपदपाला ॥ ४

भा. द. उ.  
॥ ४ ॥

विनवाहनः प्रायुधविनजाई ॥ अन्नमेंयासेंलेऊंलराई ॥ प्रभूपजायेउनमुखहोई ॥ पकरनचोरेपि  
छेसोई ॥ ५ ॥ सोरग ॥ हस्तमेंहरिकंआय ॥ जवनजानतपलेपलमें ॥ जोगीभिताहीनपाय ॥ सो  
लेगयगिरनारगुफ ॥ ६ ॥ चोपाई ॥ जवनकहेजडकूलमेंजाई ॥ पलायनतोकुंउचितनोई ॥ यावि  
धमारतवचनारण ॥ ७ ॥ अघतरेविनपावतनतेऊं ॥ ८ ॥ वचनगिनिगयेगुफामांई ॥ पुनिजवनतीन  
केसगधाई ॥ अननरकुंदेखिकहीएऊं ॥ सोवनसाधुकिमाइतेऊं ॥ ९ ॥ मूढकहेमोकुडुराई ॥ स  
तेकुंपगमारतधाई ॥ सोनरउवकेअंखिवधारी ॥ देखसमीपपुरुषरहेवारी ॥ १० ॥ रोषसहितनर  
केहगलागी ॥ जवनकेतनूमेंधगरीआगी ॥ जारभयेसोतनकिजोई ॥ रातापुल्लतशुकसेसोई ॥  
१० ॥ नामवंशपिताकहीतोई ॥ क्युरहेसोईगुहामेंजाई ॥ कहीतेजजवनजिनजार ॥ इतनेघमकह  
ऊंहमार ॥ ११ ॥ छककहेईक्षाकुंकूलमाई ॥ माधानासतमुचुकुदनाई ॥ दानवसेइकोसबदेवा ॥  
जाचेरक्षणलियुततरेवा ॥ १२ ॥ बडुतकालकरिरक्षायकी ॥ गृहभयेरक्षाकरताकी ॥ मुचुकुं  
दमेंबोलनसबकरा ॥ हमलियुकषपायेपरचूरा ॥ १३ ॥ दोहा ॥ विनज्ञनुनिजगसनर ॥ लोक

अ. ५१  
र  
॥ ४ ॥

हिकरिकेसाग ॥ हमकुंबडुपालेतूस ॥ करिविगमबरभाग ॥ १४ ॥ चोपाई ॥ सुतदारमंत्रिअरुअ  
माति ॥ कालमेंनाशभईसबजानी ॥ कालअरुवडुशहीबलवाना ॥ पसकसाइमुहनेजगना ॥ १५  
नितकेवलयमूक्तिविनतेऊं ॥ मागऊंवरहमदेवेतेऊं ॥ मुक्तिरूकेएकहेदाना ॥ विमूविननहीअोरवी  
ख्याता ॥ १६ ॥ देवसकूलमीलकेयुकीना ॥ सुनिगजात्रिदजाचीप्रविना ॥ देवकहेगुहामहिसाऊं ॥ त  
मकुंआईजगावहीतोऊं ॥ १७ ॥ सोतवहगसेंजलगतकारा ॥ सुनिवचसुतेजवनजिनजार ॥ जवनज  
रेपीलेभगवाना ॥ मुचुकुंदरिगआइदरगना ॥ १८ ॥ घनसमपितावरअंगधारी ॥ कौसुभकवरश्रीव  
लभारी ॥ स्वतवेतंतिबाऊंचारि ॥ सुमूरवकुंडलमकराकारि ॥ १९ ॥ सबकुंदरज्ञनलायकएऊं ॥ हास्य  
प्रिनित्तदेवततेऊं ॥ सुंदरवयअरुकोरातेऊं ॥ केचारीसिंहकिद्वयहितेहा ॥ २० ॥ सोरग ॥ याविध  
सधमकीतोई ॥ घतापमिदविरहेराज ॥ महाबुधिवंतसोई ॥ पुल्लधारेहीराका ॥ २१ ॥ चोपाई ॥ कही  
मुचुकुंदरकमलपद्दामा ॥ गिरिघनवनकरजतस्वामी ॥ क्युविचोरेयामेंकहीतेऊं ॥ तेजवंतकीतेज  
त्सएऊं ॥ २२ ॥ रविशशिअग्निमेंतूमकोउ ॥ इंद्रअरुलोकपालहीसोउ ॥ तिनदेवमेंविमूत्सुमधारे

तीरकोतिरहाअंधारी ॥ ३३ ॥ जन्मकर्मगोत्रकहोतेरे ॥ कुरविनसंननइछामेरे ॥ कहनचहोतीकं  
 त्ममाई ॥ प्रथमकुरुमोरप्रभूतोइ ॥ ३४ ॥ गोनइक्षुचकुछनीजाती ॥ मांधानसतमुचुकुं दरव्याती ॥ व  
 रुजागीथकूसनेआई ॥ किनुनेअवमोइदिनउवाइ ॥ ३५ ॥ सोनिजपावसेअभ्रमयुउ ॥ पुनिन्मदर  
 शनमोयदिनेउ ॥ तवतेजमेंरहेहमछाई ॥ त्मकुं देखनस्मरथगोई ॥ ३६ ॥ सबजनकुंसेवनजोगतेऊ  
 मोईमिलेहोप्रभूत्मतेऊ ॥ मुचुकुं दनेकहाहगसंगाथा ॥ संनिचोलेघनसुनिजनाथा ॥ ३७ ॥ सोर  
 ना ॥ जन्मकर्ममोरनामकी ॥ नहिकाउगणतिकार ॥ अनंतपणंपाकोरहे ॥ मेंभिनपावेपार ॥ ३८ ॥  
 चोपाई ॥ वरुतजअधरकेनरतीउं ॥ भूरजकनकुं गततहितोउं ॥ नामकर्मगूणाजन्महमारा ॥ याकी  
 संखानहिकरनहारा ॥ ३९ ॥ तिनकालजोगपरमकहावे ॥ अनुक्रमरुषीभिअंतनपावे ॥ तदपि  
 संनुंमुचुकुंदकऊतोई ॥ अबमेरोअवतारहीमोई ॥ ४० ॥ भूमिभाररुपअसरक्षयकाजा ॥ अजती  
 वेचषरक्षणभाजा ॥ तडकुलवसुदेवगेहआई ॥ प्रगदभडुवासुदेवकहाइ ॥ ४१ ॥ कुंसुपलंबादिह  
 ममार ॥ कालजवनतवहगसेजारे ॥ कालनेमिआदिकथेजेता ॥ सतपुरुषक्षेपीहनतेता ॥ ४२ ॥ सो

॥ ५ ॥

मेंतवसुभकरनेआई ॥ किनगुहामहीप्रवेशाई ॥ त्मनेममप्रारथनाकिना ॥ चऊंकालवरमागप्रवी  
 ना ॥ ४३ ॥ हेऊंमनवांछितजोताहोई ॥ ममआश्रितइखपातनकोई ॥ छुककहीहरिनेजबयुंकिना ॥  
 पावपरियुबोलतप्रवीना ॥ ४४ ॥ सोरना ॥ कलियुगअष्टाविंशमे ॥ हरिधरेगिअप्रवतार ॥ चधुगर्ग  
 वचकहीगये ॥ सोत्सहोनिरधार ॥ ४५ ॥ चोपाई ॥ इवातवमायामीहोतनेऊं ॥ त्मकुंनोहिमजेनर  
 तेऊं ॥ इखमूलगेहमेसरुलियेउं ॥ रहतहीदागवंचिततेउ ॥ ४६ ॥ सबअंसंपननरतनपाई ॥ इल  
 भजोतगमोहिकहाई ॥ प्रभूपदकूनहीभजतविशोही ॥ ग्रहकूपमीपरपसुंतेही ॥ ४७ ॥ रासश्रीमद  
 रुनपमदपाइ ॥ सुतदारकाशमीरहेजोराई ॥ तनुमहीआत्माबुधिजोकारी ॥ इतनिउमरगइरुथह  
 मारी ॥ ४८ ॥ घटभिततूल्यकलेवरमाई ॥ यामेंनृपकेअभिमानलाई ॥ रथगतवाजीनरसेनभारी ॥ यो  
 सेंचनतोयदिनविसारी ॥ ४९ ॥ अतिचिंतासेंप्रमतमोइ ॥ जोभविषेमेंइछितहोइ ॥ सावधानअंतक  
 त्मआई ॥ गिलनमोयअहोआत्सुमाई ॥ ५० ॥ सोरना ॥ अतिशुधाकृतनारा ॥ सुंरसनासेहोव  
 चति ॥ फिरतभूपरकृतगग ॥ मोइगोलतत्मकालरुप ॥ ५१ ॥ चोपाई ॥ महागजकचनरथपरवा

रि ॥ चलने आगु नृपनामधारी ॥ भस्म किडा विटनामयाके ॥ किन कालने कलेवरताके ॥ ४२ ॥ सबदि  
 गुन्ति निःप्ररि सबमारी ॥ सब नृपन मेः सगदियां गरी ॥ मिथुन सुख लियुं र हे घरमांई ॥ नारिन चात  
 मुंउ मरकटमाई ॥ इंद्र चक्र त्रि होन काजा ॥ तपदान करि भूतल सुद्राजा ॥ ब्रह्मासें व्याकुल भोगता  
 गि ॥ सोनही पावत सुख भागी ॥ ४४ ॥ जन्मत निवकी मोक्ष जव होई ॥ तव याकुं मित्ती सत्संगोई  
 जव सुतसंग पात जन जोउं ॥ तव तोर भक्ति पावत सोउ ॥ ४५ ॥ राम कुटुंब मम नाश भयेऊं ॥ तोर ह  
 पा मोपें भइतेऊं ॥ विवेकिनृपतपो वन चारि ॥ सोद्रसाग इंद्र उर भारी ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ निरःप्रभिमा  
 न विवेकी तो ॥ सेवत हरि पद सोउ ॥ सो पद विन वर मेन ही ॥ जाचु बंध कर जोउ ॥ ४७ ॥ चौपाई ॥ याका  
 रणो घ्युं सागे ॥ बंधन रूप जानि हम भागे ॥ पुरुषोत्तम मुक्ति प्रद स्वामी ॥ इना निरंजन अंतर जामी  
 ४८ ॥ अक्षत ज्ञान मूरति तोई ॥ भक्त तू मकुं मेत सर होई ॥ तव हरि कही रास कर आगुं ॥ केवल्य तव  
 पुनि ही हिक भागुं ॥ ४९ ॥ या विधु पुनि वर दइ लोभिता ॥ तव मुचु कुंद चरन ग्रही किता ॥ वासना कर्म  
 हिक लकि तेहा ॥ षट् इंद्रि त्प्रा जूत तेहा ॥ प्रारब्धादि मिलि सब एऊं ॥ जनमान कुं जार ततेऊं ॥ ५०

में आयो प्रभु शरणो धारी ॥ इना आपत से मोकुं पाही ॥ प्रभू कहे निरमल मति तोरी ॥ वरुं से नाही लो  
 भे थोरी ॥ ५१ ॥ राकांतिक मेरा जन याकी ॥ समुधिनां ही रने बुधिताकी ॥ नही मेरा भक्त जन तेऊं ॥ प्रा  
 णायाम से मन जितितेऊं ॥ ५२ ॥ वासना जूत तो मन कहाई ॥ सो पुनि विशेष न सुख धाई ॥ हरिकहे  
 मो मे मन मिलाई ॥ विचरो मुचु कुं द भुपर जाई ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ तव भक्ति निमम विवे ॥ अनपायी  
 निहोऊं ॥ अब तू मत पर जाइके ॥ निज सुधिलिये सोई ॥ ५४ ॥ क्षत्रि होई मृगिया किये ॥ पाप लगी  
 निरधार ॥ सावधान मम आश्रीत ॥ होई के ताहि नार ॥ ५५ ॥ विष होई अोर जन्म मि ॥ सब जन सु  
 रधिर ॥ निश्चै मोकुं पाओ गि ॥ कहुं तु मकुं दी नवीर ॥ ५६ ॥ इति श्री मत भागवत ॥ दशम स्कंध मितेऊं  
 स्कृति किने मुचु कुं दने ॥ भूमाने दक हेऊं ॥ ५७ ॥ इति श्री सहजानंद स्वामि शिष्य भूमानंद उक्त भाषा  
 यां एक पं चां ज्ञात मो ध्यायुः ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ जनु भयक्त भगवान तो ॥ गये द्वारि कां धाई ॥ रुन्नी  
 णि कुं के संदेश से ॥ वाचन में मुद पाई ॥ १ ॥ चौपाई ॥ छुक कहे हृद्य अनुग्रह किना ॥ सो पाव परि प्रकं  
 मादिना ॥ पुनि भिक से गुहा से वारा ॥ देवत नर पशु छोटा रारा ॥ २ ॥ कलि रूग आयो ज्ञानिराता ॥ च

लेखतरमेनिजस्रभुकाजा ॥ तपश्चक्राकृतधिरनिसंगा ॥ गंधमादनगयेमनचंगा ॥ ३ ॥ बदरिन्नाश्रम  
मेपुनिजाई ॥ सहस्रिखडखशोतरहाई ॥ तपकरिन्पाराधतहरिणकुं ॥ पुनिप्रभुआइमथुगगेकुं  
ध ॥ जवनसेनमारिधनयाको ॥ कुवास्थलिपोचायेताको ॥ दृषनरसेंधनतबपोचाये ॥ त्रैविशक्षोणी  
प्रागधलाये ॥ ५ ॥ सोरजा ॥ यासेनकिगतीहेर ॥ मनुषरितिदेखातदौउ ॥ किनेपलायनदेर ॥ जोत  
नततीधनपालचलि ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ धावतदौकुंमागधजानी ॥ दोरतपिछेवल्लइमानी ॥ निरभ  
यकुंअतिभयकृतधारी ॥ हसतहीमागधमुखउधारी ॥ ७ ॥ अतिदोरकरआंतभयेउ ॥ पवरपणप  
रवतपरसोउ ॥ एकादशयोजनउतगा ॥ नितवरपतघनताइउमंगा ॥ ८ ॥ तापरजारेमागधजानी ॥ प  
दवीनाहीपुनिपैछानी ॥ तबसोगिरिद्वारुनेछाई ॥ पुनिअग्निसेंदेतजराई ॥ ९ ॥ जलतगिरिसेंउ  
उकेदोउ ॥ मागधचलततीगिरतसोउ ॥ वैरिकोऊनतानतजेसं ॥ कुवास्थलिमहीपोचेतेसं ॥ १० ॥ मा  
गधमानततलनगयेदोउ ॥ पुनिबललेगयेदेवाहीसोउ ॥ ओरखदिशामिरेवतराजा ॥ रेवतिसूतालाई  
चलकाजा ॥ ११ ॥ अतन्प्राग्पासेंदिनेणकुं ॥ पुनिरुक्मीणीघभूलाइनेकुं ॥ स्वयंवरमिचेदपक्षिजेता

शालवन्नादिजितकेतेता ॥ १२ ॥ दोहा ॥ सकललोककुंदेखते ॥ भीष्मकसूताहरित ॥ जेसेंजितोदेव  
सब ॥ गरुडनेअमृतपित ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ परिक्षितकहीराक्षसविधिलाई ॥ प्रभुपरणियुंसेंननमे  
आई ॥ संननइछुंमोयकहोगाथा ॥ मागधत्राल्वकुंजितीनाथा ॥ १४ ॥ कन्पाहरतसोशुकमोयकीना  
कथारसतानकुंनीतनविना ॥ महाफलरुपकरणसखकारी ॥ त्रिदिनपाउंसेंनीजनअपहारो ॥ १५ ॥  
शुककहेविदमंदेशिराजा ॥ एकसूतासूतपंचसमाजा ॥ रुक्मिवरअोररुक्मबांड ॥ रुक्मकेडांरुक्म  
रथकांड ॥ १६ ॥ रुक्मप्रालिपंचणकुंनामा ॥ याकिजोभगिनोरुक्मीलिनृपाप्रा ॥ सोसंनिहरिकेरुपयु  
णत्रोभा ॥ घरुआईनारदकहीमनलुभा ॥ अनेतथाक्रमकृतहरिजानी ॥ वैवेनितसमस्वामिमानी  
१७ ॥ बुधिओदायंरुपगुणधामा ॥ हरिमानतसमनारिपामा ॥ सभलक्षणअरुद्रीलजतजानी ॥  
हरनकीनमनसारंगयानी ॥ १८ ॥ सोरजा ॥ रुक्मीलिकिमाततात ॥ हृद्यकुंदेवनइलत ॥ रुक्मिनी  
शोधनचात ॥ शिष्टपालकुंमानिवर ॥ १९ ॥ चौपाई ॥ यहबातवैदरभिनेजाना ॥ होयउदासिविचार  
आना ॥ कीकधीतकुंदेरिवउवाला ॥ हृद्यतिगधैरेतकाला ॥ २० ॥ सोद्वारकोवाउताइ ॥ द्वारपाल

प्रवेशकराई ॥ देखनपुरुषआद्युदारा ॥ कंचनकेआसनपरवारा ॥ २१ ॥ ब्रह्माण्डदेवहरिद्विजतोइ  
 निजआसनसेउतरेयोई ॥ द्विजवेवाईआसनमाई ॥ पुनतदेवनिजकुं सुंताई ॥ २२ ॥ अमचिनत्रियेवी  
 प्रदिगताई ॥ पावअनीलांसिपुल्लतताई ॥ द्विजसंतोषरूतमनहितेरा ॥ तौरधर्मवृधमानतदेरा ॥ २३ ॥  
 विनअमद्युषवरतेउतबही ॥ विप्रकुंडलितदेवेतबही ॥ संतोषिद्विजवरतेजेऊं ॥ सबजगकुंडलित  
 पुदतेऊं ॥ २४ ॥ **तोहा** ॥ असंतोषिसरइग्रासी ॥ उन्नमलोककुं पाई ॥ तामेंसंकटपावही ॥ पुनीभटक  
 द्विजगमांइ ॥ २५ ॥ **चोपाई** ॥ निरधनजनसेतोषितेऊं ॥ निनतापतजीसोवततेऊं ॥ आत्मलाभसेपु  
 रणरहावे ॥ सबजनकेसरुदपुनिकावे ॥ निरअरहेकारिश्रांततरहाई ॥ वेरवेरवंडमेंताई ॥ २६ ॥ द्विज  
 नृपसेसखिहोकिनांही ॥ जोगाजाकोदेशकहाही ॥ प्रतावसेसखिनिनमेंपाली ॥ सोपियमोयनृप  
 सुखज्ञाली ॥ २७ ॥ जहांसंआयेसिधुतराई ॥ इस्तरसाइग्राइछापाइ ॥ गोप्यगाथहोयतोभिकिनी  
 करुमेकारततेरोचेनि ॥ २८ ॥ **सारावा** ॥ घृष्टमहरिनेजोकीन ॥ विप्रसंनिवरनतसबही ॥ पत्रिप्रभुऊं  
 कुंदिन ॥ एकांतमेंरुक्मीणिलिखि ॥ २९ ॥ **चोपाई** ॥ रुक्मीणीकहीसंदरवरतोगा ॥ महीमादिगकरा ॥ ३० ॥

इश्वर

केनी

रुपशिलमोगा ॥ निवजमेमेरोचितआई ॥ प्रवेशकरतहीनृममेंथाई ॥ ३० ॥ गुनसूनतकेकरणमेंप  
 रही ॥ अंतरपैगीतनतापहरही ॥ सबजनकेदृगकोफलतेऊं ॥ रूपतिहरोहेप्रभुतेऊं ॥ ३१ ॥ याविध  
 गुणरुपसंनिहार ॥ कुलवतीमहती बऊगुणधारा ॥ तुमकुंवरहीबुधिवंतिहारा ॥ गुणशिल  
 विद्याकेतूमगारा ॥ ३२ ॥ सबजनमनकुंआनेदरुपा ॥ धामसंपतनुतपतीअनुपा ॥ विवाहकाले  
 तुमकुंताई ॥ कस्यकोनवरेनहीतोई ॥ ३३ ॥ हेनरश्रेष्ठमुकुंदअजिता ॥ समथतुमकुंमैत्रिता ॥ पु  
 निदेहममतोयअरपिता ॥ तुमआइकरमोयनारिमिता ॥ ३४ ॥ शिप्रआईचैद्यपरणीनमोई ॥ तव  
 भागहपरहीमेंहोई ॥ केरारिसिंहभागकुंनैसे ॥ कचुनपरसेसियालतेसे ॥ ३५ ॥ **तोहा** ॥ कुपसर  
 मखआदिकबु ॥ ब्रततीरथहेमदान ॥ द्विजगुरुदेवअरचनसे ॥ पुनिहमतोभगवान ॥ ३६ ॥ त  
 वहरिआइकेममकर ॥ पकरोप्रभुकरुंताई ॥ दमघोषसतआदिकतो ॥ मोयनपरसकुंसाई ॥ ३७ ॥  
**चोपाई** ॥ दुसरेदिनहेआहहमार ॥ गुप्तआपतमरथपरगरी ॥ पुनिसेनापतिसेधेराई ॥ चैद्यसेनह  
 रविदर्भआई ॥ ३८ ॥ तवप्राक्रमसोमूल्यहमारा ॥ राक्षसिविधिकरीवरकुंदाग ॥ अंतरपुरमिमैतोर



हार्द्रं बंधुहने विनकसहं तां ॥ ३० ॥ या कि उपाय हे सो चतावे ॥ कुलदेव जात्र कलदिन आवे ॥ यामे न  
 विवड्क पुरव ही जाई ॥ अंबिका पुजन पाव चलाई ॥ ३१ ॥ कमलने नत वपदर जमाई ॥ शिव आदिक वड  
 जो गिजाई ॥ आपकी अज्ञान मिटन काता ॥ स्नान कर ही जामे सु निराजा ॥ ३२ ॥ तव प्रसादन बमने न  
 पाउं ॥ व्रत उपोषक रिषाण गमाउं ॥ शत हि नम्र लुं वार मचारा ॥ जच हो हि प्रसाद तिहारा ॥ ३३ ॥ सोर  
 ज्ञात्सण कही यड देव ॥ गुह्य संदेश तो यक ही ॥ विचार करत तखेव ॥ करनी हो य सो तु रन कर ॥ ३४ ॥ सो  
 हा ॥ इति श्री मत भागवत ॥ दशम स्कंध मित्रे ऊं ॥ रुक्मीणि संदेश पाइ हरि ॥ भूमानंद कहे ऊं ॥ ३५ ॥ इ  
 ति श्री सदज्ञान देवामी शिष्य भूमानंद कृत भाषाया द्विषं चान्तात्तमाः ध्यायः ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ विद  
 र भद्रज्ञाताई प्रभु ॥ रुक्मीणि कुंहरि लिन ॥ द्वेषी सकल देखि रहे ॥ त्रेपन मे सोई कीन ॥ १ ॥ चौपाई ॥ शु  
 क कहे वैदर भिसंदेशा ॥ संनिके सोतादव के प्रशा ॥ निज कर सेप करी दित पानी ॥ ह्यतवदन बोलत ह  
 रिबानी ॥ २ ॥ वैदर भिने कही सोजावुं ॥ मम चित यामें हेल पलावुं ॥ याकारन मोय निदन आवे ॥ मम हे  
 विरुक्मीयो कहावे ॥ ३ ॥ मोर व्याहनि वारो तोउं ॥ इतुं नेह मजानत हे सोउ ॥ लावेगे रुक्मिणि कुंताई ॥ ॥६॥

निचरा ज्ञाति निरुधमां ॥ ४ ॥ मम परायण सुध अंगिजेहा ॥ जनुं अग्नि भई काष्ट मे गहा ॥ शुक कहे  
 रुक्मीणी व्याह ऊं कुं ॥ नक्षत्र ज्ञानिक हे साधिं कुं ॥ ५ ॥ दारु कर श्य तोर सिघ्र ही मोरा ॥ यैस्य क प्री व मे  
 घ पुष्प धीरा ॥ पुनिबला हक जतर थलाई ॥ कर जो शिव रे आगे आइ ॥ ६ ॥ प्रभुर थ वै विवि प्रवे गाइ  
 एक राति मे तुं र गच लाई ॥ ओखाऊं से विदर्भ आइ ॥ कुंरिन पति निज सकत व ज्ञाता ॥ ७ ॥ सोर गा ॥  
 जि श्रया ल ही सतानिज ॥ देवेगे नृप विधि ऊं से ॥ पुर स हाई देर दित ॥ देवरु पित कुं पुजत सो ॥ ८ ॥  
 चौपाई ॥ पुरमें चोक मग से रि स हाई ॥ आरत पुनि सिंचत त ललाइ ॥ ध्वजापता का तोरणता मे ॥ न  
 रनारि भूषण कृत जामे ॥ स्रत चंदन अंबर तनुं धारी ॥ अग रुधुप कृत गेह मंगरी ॥ या विधरा ज्ञा पुर  
 स हाई ॥ पितृ देव दित पुजे विधिलाइ ॥ सब विधि नृत पुनि पुर तिमाई ॥ कृमा ही पुनि स्नान स हाई ॥  
 १० ॥ आह सत्र से मंगल रुपा ॥ नये वसन दौपे रि अंतु पा ॥ साम रुद्र गय नर वेद गाना ॥ रक्षा करत भये  
 दित सताना ॥ ११ ॥ अथर्व मंत्र ज्ञान नहा रा ॥ हो पावत ग्रह शो तिकारा ॥ शीन रूप तार नृत पद ते ऊं ॥  
 गुड मिश्रित तिल धेनु ते ऊं ॥ १३ ॥ भिष्म कने दिन विप्र बीलाइ ॥ या विध त मघीष भि सत ताई ॥ उचित

कर्मकरावतारं ॥ मंत्रज्ञानब्राह्मणसंज्ञे ॥ १३ ॥ **होहा** ॥ मंदरगजस्थसृजत ॥ ह्यपालसेन  
 माई ॥ तासैवतदमचोषकत ॥ ज्ञातकुंरिनपुरधाई ॥ १४ ॥ **चोपाई** ॥ भिष्मकपुनतसनमुखताई ॥ दे  
 तनतारामुदजतताई ॥ ज्ञात्वजरासतविडरथवाही ॥ हेतवक्रुपुनीपौद्रकलादी ॥ १५ ॥ शिशुपाल  
 केपक्षिहेते ॥ सहस्रबांधिप्रायेहीते ॥ वैद्यकुंक्यादेवनकाजा ॥ प्रायुधकृतप्ररिहरिकेगता  
 १६ ॥ बलप्रादिकतडसेविराई ॥ हृष्टमहरेगेक्याधाई ॥ तवदनकेसंगकरेजराई ॥ युनिश्चैजतसब  
 मनमांई ॥ १७ ॥ सबगजासेनाजतआवा ॥ प्ररिउदमसंनिबलशंकपावा ॥ कयाहरनदरिगयेका  
 गजहयुरथनरसैनप्रनेका ॥ १८ ॥ सोसंगलइवेगसंधाये ॥ स्नेहजतकुंरिनपुरप्राये ॥ भिष्मकस  
 तारुक्मीणिजेहा ॥ हरिकोप्रावनइछतएहा ॥ १९ ॥ ब्राह्मणफेरनप्रायोते ॥ नरमेंचिंताकरतही  
 ते ॥ मंदभागपमोरपभूनप्राये ॥ आहविचणकरनिरहाये ॥ २० ॥ कमलनेननप्रायेयामें ॥ कारण  
 जोनहीज्ञानततामें ॥ मेनेघेरेब्राह्मणसोभि ॥ प्रबलुंनप्रायेरहेशोभि ॥ २१ ॥ **सोरगा** ॥ सुधमती ॥  
 हेप्रभुसोई ॥ ममपाणिग्रहणउद्यमकरि ॥ मोमेंप्रचयुणजोई ॥ निश्चैनप्रायेहरिप्रवा ॥ २३ ॥ **चोपाई** ॥ १७ ॥

कृतिनपालव्यमोरेप्राई ॥ प्रजज्ञिवउमासानुकुलनाई ॥ याविधचिंतनकरतहीवाला ॥ निरभर  
 प्रायेनेनविज्ञाना ॥ २३ ॥ श्रीहृष्टमप्रबिन्प्रावनहारा ॥ ज्ञानिमिचनप्रखियादारा ॥ याविधधरि  
 मनगोविंदमांई ॥ प्रभूप्रावनमगदेरवतजाई ॥ २४ ॥ वामनेनभुजउरुहीयाके ॥ फरकतहेप्रियसू  
 चकताके ॥ तबहीहृष्टमचारिमहीप्राई ॥ द्विजकुंघेरेरुकमणितांई ॥ २५ ॥ राजभूवनदेविदिगजाई  
 हृष्टमप्रायेसोदेतननाई ॥ हसतद्विजगतिशिघ्रहीतोई ॥ ममकारजभयोमानंतसोई ॥ २६ ॥ **होहा**  
 सतिपुछतमुखमरकके ॥ तबयाकुंद्दीजकीत ॥ हरितोयलेजायेगी ॥ समचातचरनित ॥ २७ ॥ **चोपा**  
**ई** ॥ प्रायेहृष्टमघैदरभितानी ॥ विचारतप्रतिमनहरखानी ॥ द्विजकारजकरिप्रायोताई ॥ सबध  
 नप्ररणउचितनोई ॥ २८ ॥ विप्रकुंचरणोशिरनाई ॥ ब्रह्मदियोपुनियाकुंलाई ॥ ममक्याआहदे  
 खनकाजा ॥ हृष्टमगमप्रायेसनीगता ॥ २९ ॥ कृतवाजितरसनमुखधाई ॥ मधुप्रकशोरभेयसब  
 लाई ॥ नयेबसनभूषनपेराई ॥ पुनतभिष्मकविधिकृतताई ॥ ३० ॥ प्रतिमंदरउतारोधारी ॥ बल  
 बंधुनुनतामहीउतारी ॥ यथायोग्यमितमानियाकी ॥ करतयथाविधिप्रोरगजाकी ॥ ३१ ॥ **सो**

रत्ना ॥ आयुद्धर्मसंनिपातं ॥ विदरभपुरस्त्रासितवज्रो ॥ नेत्रपात्रकरितेन्द्रं ॥ पानकरतमुखपंकज ॥  
 ३३ ॥ चोपाई ॥ जनकहेहृदयकीरुक्मीणिविना ॥ नारिजोगपञ्चोत्कीतनविना ॥ रुक्मीणिकुञ्जचि  
 तपतिपाई ॥ हमारपुसदानहेतेन्द्रं ॥ तिनसेप्रसनहोइतगनाथा ॥ ग्रहणकरोरुक्मिणिकेहाथा ॥  
 ३४ ॥ याविधन्नाशिशसबतनदिना ॥ पुरबाहीरचलिकन्याप्रवीना ॥ चक्रंओरघोररहेभटभारी  
 ॥ श्रीबीकानिरखनपदेधाही ॥ ३५ ॥ चरनसरोतहरिकीउरधारी ॥ मुनव्रतजतमातासबहारी ॥ स  
 खिसबघोरहीचक्रंओरा ॥ आयुधधरचक्रंओरभटकरा ॥ ३५ ॥ पलावशंखमदंगतुरिभेरी ॥ वा  
 जतगावतगुनकादेरी ॥ पुजासामग्रीबलीदानधारी ॥ खजपटभूषणकृतद्वितनारी ॥ ३६ ॥ सर  
 गंधधरीतनगावतगाना ॥ स्तवनकरतन्नागेविधनाना ॥ सुतमागंधवंदितनतेन्द्रं ॥ कन्याकुंघेरी  
 रहेतेन्द्रं ॥ ३७ ॥ सोरवा ॥ देवमंदिररिगहोई ॥ करपगधुईआचमनकरी ॥ शांतपवित्रसोई ॥ अं  
 बिकासमिपजायरवति ॥ ३७ ॥ चोपाई ॥ नृधसबविष्णुनारामिलितोई ॥ शिवनारिदिगवंदनकराई  
 रुक्मीणिद्वितनारिसैपाई ॥ मंत्रजानिबोलतहेतेन्द्रं ॥ ३८ ॥ गणपतीकृततोईमातनमायी ॥ ३८ ॥

सनहोईदेन्द्रंहृदयस्वामी ॥ स्रगंधजलअक्षतदियधुपा ॥ वसनभूषनफुलहारअनुपा ॥ ४० ॥ तां  
 बुललुणकचसुत्रजोउं ॥ इक्षुदंरपुडाफलसोउ ॥ तासैंद्विजकीसधवानारी ॥ पुजावतरुक्मीणी  
 कुंधारी ॥ ४१ ॥ पुनिनिरमाल्यकरुन्याकुं देही ॥ देवतन्नाशिवनारिसबतेही ॥ देविअरुहीजनारी  
 ताई ॥ नम्रतनिरमाल्यसिरचलाई ॥ ४२ ॥ पुनिमुनिव्रततजीमंदिरबारी ॥ निकसेनितसखिकीक  
 रधारी ॥ ताहिदेखस्रगमोहयावा ॥ देवमायारुपधरिजुंआवा ॥ ४३ ॥ सोरवा ॥ कानेकुंउलतनसां  
 म ॥ रत्नमेखलाकृतकरि ॥ स्तनसक्षमपरदाम ॥ शिरकेशक्रंसेंचपलहग ॥ ४४ ॥ चोपाई ॥ हस  
 नमुखकुंदकलितनुदंता ॥ बिंबिसमहोउसैलालसहंता ॥ नुपुरबाजतकलहंसगामी ॥ ज्ञानामी  
 शानिरवतनितस्वामी ॥ ४५ ॥ हासीलजाजूतइष्टीयाकी ॥ सोभादेखिसबनृपताकी ॥ तगमेंव  
 रजशवंतहिजोग ॥ कामातुरमुरऊयेसोउ ॥ ४६ ॥ गजधोमारथक्रंसेपाई ॥ तजिआयुधगिरेभुत  
 लतेन्द्रं ॥ पुनिपदपंकजधिरंचलाई ॥ शयेकरसिरकेशनवाई ॥ ४७ ॥ प्रभुदेखनकीइच्छाधारी ॥ स्व  
 ज्ञानूतनृपतोतकुमारी ॥ तबदेखतहृदयकुंएई ॥ रथपरबेठनइलततेन्द्रं ॥ ४८ ॥ सबदेवीदेख

तत्रमुद्राई ॥ हरिकंठानिजस्थवेजाई ॥ सवराजाकोसैसहराई ॥ जडसैसजतमिलिदोउभाई ॥ ४८ ॥  
 दोहा ॥ सियालसमुहसेकेसरी ॥ सुहरतहेनिजभाग ॥ सुप्रभूलेहिधीरेचले ॥ हारामतिऊतगग ॥  
 ५० ॥ जरासंधप्रादिकसवे ॥ महामानिजाएऊं ॥ पराभवहितज्ञानसजा ॥ सहननकरतहितेऊं ॥ ५१ ॥  
 धिकधनुरधरप्रपनेकुं ॥ जराहरिगोपहीजात ॥ ज्युमगलोहरिज्ञानहे ॥ केदारिकोसाक्षात ॥ ५२ ॥  
 इतिश्रीमत्भागवत ॥ दशमस्कंधमीनेऊं ॥ रुक्मीणीहरणकिनेजो ॥ भूमानंदकहेऊं ॥ ५३ ॥ इति  
 श्रीसहजानंदस्वामीशिष्यभूमानंददत्तभाषायात्रिपंचारात्रमोऽध्यायः ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ अरि  
 पक्षिनुषतितिके ॥ रुक्मीविरुपकिनतेऊं ॥ रुक्मीणिकुंपरनेषुभु ॥ चोपनप्रध्याएऊं ॥ १ ॥ चोपाई  
 शुक्रकहेकोधक्ततसबएहा ॥ निजकुं धिकधिकबोलतएहा ॥ कवचधनुषधरिवाहनगरी ॥ दो  
 रतनिजनिजबलहीभारी ॥ २ ॥ अरिप्रावतरिगदेखीएऊं ॥ जादवजुथपतिथेजोतेऊं ॥ जादेसन  
 मुखधनुषचराई ॥ अरिबाणसेरहेसबछाई ॥ ३ ॥ गजघोरारथपरचरिशरा ॥ जनुंगरिपरघन  
 ऊंकीधारा ॥ पतिसेसशरधारामांइ ॥ ज्ञायोरुक्मिणितेखतताई ॥ ४ ॥ भयजतव्याकुललोचनहे ॥ १३ ॥

ई ॥ हरिमुखहेरतलातकरसोई ॥ हसिहरिबोलेभयमतप्रानो ॥ तवसेनासेरिपुक्षयज्ञानो ॥ ५ ॥  
 सोरठा ॥ प्राक्रमरिपुकोतेऊं ॥ गदवलदेवप्रादिकसर ॥ सहननकरतहीतेऊं ॥ सरसेहयगजर  
 थहने ॥ ६ ॥ चोपाई ॥ हयगजरथबैवेनरयाके ॥ किरिडकुंडलऊतशिरताके ॥ गिरेभुमिपरकोटी  
 कटाई ॥ चापगदाप्रसिरहेकरमाई ॥ ७ ॥ उरुअंग्रिकरतलकतेतेहा ॥ हयखरखचरकटेसिरतेहा  
 गजनरगंडऊंकाशिरजोउ ॥ जादवनेछिनशरेसोउ ॥ ८ ॥ जरासंधप्रादिकनृपजेता ॥ विमुखसोई  
 सबचलेउतेता ॥ तेजउछाहरुदारगमाई ॥ चैदसकेमुखआतुरजाई ॥ ९ ॥ यारिगमागधगयोच  
 लाई ॥ कहेनरमेतुसिंहकराई ॥ मनउदासीसजकऊंताई ॥ हारजोतकीस्थिरतानहोई ॥ १० ॥ दोहा  
 काष्टऊंकीसुंपुतली ॥ नाचनतवशहोई ॥ जगतसकलवशकाउके ॥ सखडखभोगहीसोई ॥ ११  
 चोपाई ॥ कुनुमोरगाथाकऊंभाई ॥ सतरवेरहारेऊधमांई ॥ त्रेविशखोणीसेनमममारी ॥ एकवेर  
 मोसैगयोहारी ॥ १३ ॥ युंहेतोभिमोयकबुसोउ ॥ हरखशोकनहीहोवतदोउ ॥ कर्मऊतकालक  
 हावे ॥ तासेजगसबफनाहिजावे ॥ १३ ॥ देखोअवप्रपनेसबजेऊं ॥ महासरकेरक्षकतेऊं ॥ स्वल्प

सेनकरकेतुऽप्राई ॥ जितलियेऽप्रपनेकुंभाई ॥ १४ ॥ हृद्यमसहीतऽप्रवरिपुनितेउ ॥ याकुंकाखसान  
 कुलनेउ ॥ जवऽप्रपनोसानकुलजाई ॥ तबयाकुं नितेगेभाई ॥ १५ ॥ सोरता ॥ याविधदिनेउबोध ॥ मि  
 तमिलिसबशिश्चुपालही ॥ पुनिपुरजाततजीजूध ॥ ओरनृपनिजनिजपुरसब ॥ १६ ॥ चोपाई ॥ रि  
 पुहृद्यमकोरुक्मीयोतेऊं ॥ राक्षसयाहसंनिभगिनकेऊं ॥ राकऽप्रक्षोहिणीबललेहिणऊं ॥ दोरतहृद्यम  
 केपीछेतेऊं ॥ १७ ॥ बोलतगजसभाविचऽप्राई ॥ क्रोधइरयारुक्मीउरलाई ॥ कवचचापधरिकहेस  
 तुंमेरि ॥ एहिपतिताहेकऊंरेरी ॥ १८ ॥ हृद्यममारिनिजभगनिनलाउं ॥ तबमेकुंरिनपुरनहीऽप्राउं ॥  
 युसबनपसेकहीपुनिणऊं ॥ रथवेचीसतकुंकहेतेऊं ॥ १९ ॥ सिघ्रहांकहृद्यकऊंमेंतोई ॥ ममहृद्यको  
 सग्रामहोई ॥ डुरमतीगोपऊंकोमदजेऊं ॥ निक्षणावाणसेंहरुंऽप्रबतेऊं ॥ २० ॥ जोमदऊंसेभग्नि  
 गोरी ॥ प्रायहरीगयोतीबलतोरी ॥ कुमतिइनुबलजानतनांही ॥ राकरथऊंसेहरिदिगजाइ ॥ २१ ॥  
 खरेरहोयुकिनपोकारी ॥ कुलितबचनमुखसेउचारी ॥ अतिबलऊंसेधनुषचराई ॥ तिनवानहने  
 हरिपरजाई ॥ २२ ॥ जादवकुलकुडषणकारी ॥ क्षणमात्रहोममदिगवारी ॥ कहांतायगिममभग्नी ॥ २३ ॥

सोना

साखी

चोरी ॥ जज्ञभागसुंकाकहसोरि ॥ २३ ॥ दोहा ॥ हेमंदमायिकनरत्नम ॥ कपटकरहीजूधमांई ॥ अ  
 वमदहुरुमेंतोरसब ॥ चेतकऊंमेंतोई ॥ २४ ॥ चोपाई ॥ तबखुंममसरमेंनहनाई ॥ नहीसतेतमभू  
 मिपरऽप्राई ॥ तबखुंयनकस्याकऊंतेोई ॥ यहवचसुनिहरिहसकेसोई ॥ २५ ॥ छेदिचापरुक्मीया  
 केरी ॥ वरद्वारतिनकुंमारेफेरी ॥ चऊंधोराकुंरोमारा ॥ द्विसतकुंतिनध्वजपरराग ॥ २६ ॥ ओरथ  
 नुरपुनिरुक्मीचराई ॥ पंचद्वारदारेहृद्यतोई ॥ हृद्यमउपरद्वारऽप्रायेतोउ ॥ निजद्वारऊंसेछेदतसोउ  
 २७ ॥ ओरचापपुनिरुक्मीलिना ॥ सोहरिनेचुराकरदिना ॥ तालऽप्रसिश्चुलपरिघुपदिना ॥ सो  
 गतोमरकुंइछेदतईना ॥ २८ ॥ जितनेऽप्रायुधरुक्मियेलिना ॥ तितनेसबश्रीहृद्यमनेलिना ॥ मारन  
 किइछाउरलाई ॥ गृहीखरद्वारथसेउवधाई ॥ क्रोधसहीतहृद्यमदिगऽप्राये ॥ पावकमेऽपुपतेगगि  
 राये ॥ २९ ॥ सोरता ॥ प्रायोऽप्रसिलेठाल ॥ रुक्मीसमीपतबहृद्यमऊंने ॥ सरसेछिदिततकाल  
 रुक्मिकुंहननखरद्वारलई ॥ ३० ॥ चोपाई ॥ निजबंधुकुंमारनधाये ॥ हरिकुंदेखसतीउरपाये ॥ प्र  
 भुपदमेपरिबोलतणऊं ॥ हेजोगेश्वरजगपतितेऊं ॥ ३१ ॥ सबदेवेऽप्रमापऽप्रनना ॥ ममभ्राता

केमतहोहंता ॥ शुककहेचाससेकंपेअंगा ॥ सकेवदनकंजविनउमंगा ॥ ३३ ॥ हंधेकंगिरेहेममाला ॥  
 प्रभुपदपकजपकरेवाला ॥ तवप्रभुयाकुंमारननाई ॥ पटसेबांधेअरिसमताई ॥ ३४ ॥ शदिमुंछरव  
 रगसेछेदि ॥ तवजडप्रायअरिदलभेदि ॥ हृदमदिगसकवर्णआई ॥ रुक्मियकुंदेखनताई ॥ ३५ ॥  
 मरणात्सकुंदिनेछोरि ॥ हृदमकुंसेबोलतकरजोरि ॥ अतो गपजिंदारुपकर्महीकिना ॥ सहरदवधस  
 मरादिमुछछिना ॥ ३५ ॥ होहा ॥ सतितवभातविरुपकी ॥ चिंताउरमेंआन ॥ हमारदूरघानहीक  
 ते ॥ सखडखकर्मदेजान ॥ ३६ ॥ चोपाई ॥ पुनिप्रभुकुंकहेसहरदतोउ ॥ मारनतो गपभियजनोंसोउ  
 निजपापनेहनेहेतेऊं ॥ कहामारनोपुनितनतेऊं ॥ ३७ ॥ रुक्मीणिअजनेनिरमेणऊं ॥ धर्मकऊंमें  
 छत्रिकीतेऊं ॥ निजभातकुंमारतभाई ॥ अतिदारुणममधर्मकहाई ॥ ३८ ॥ पुनिबलकहेश्रीह  
 एताई ॥ अपुनेकुंउचिनसोनाई ॥ राज्यरुक्मीवितनाशकाजा ॥ मानतेजजियेमानिगजा ॥ श्रीमद  
 ऊंसेअंधेतेतोई ॥ भातभातकुंमारतसोई ॥ ३९ ॥ रुक्मीणिसवपाणिकेदोहि ॥ तोरेतोसहरदहे  
 सोही ॥ याकीसभइछतहोतेऊं ॥ तबहेविपरितबुधितेऊं ॥ देरमिलेसोसभहेयाकी ॥ ओरभडन

अ. ५४

कैर

॥ १४ ॥

हिइछोताकी ॥ ४० ॥ देवमायानेकल्पितमोऊं ॥ देहमानिमानतहेसोऊं ॥ सहरदशुबुउदासीतिना  
 मनमोहविननोहीप्रविना ॥ ४१ ॥ श्रुधतेतोमयजीवहेतोउ ॥ सकलदेहकुंधारतसोउ ॥ जलमेंई  
 डनभकुंभमाई ॥ मुदजानतहिभिनभिनताई ॥ ४२ ॥ सोरवा ॥ जिनकुंजन्मरुमण ॥ भूतईदिदेवता  
 रुप ॥ तिनकीजातोअरुबणा ॥ जिवकुंजन्मधराततलुं ॥ ४३ ॥ चोपाई ॥ असतदेहसेजीवकोते  
 ऊं ॥ तोगविजोगघटेनहीतेऊं ॥ भूतईदिदेवनकोणऊं ॥ प्रकाशकप्रथकतीवजेऊं ॥ सुंदगरुप  
 कुंरविप्रकाशे ॥ हेप्रथकतोमिलेजुभांसे ॥ ४४ ॥ जन्ममरणसबदेहकिहोही ॥ जिवकेविषेक  
 वऊंनसोही ॥ अथअरुचधिकलाकीजेसे ॥ इंडुकिनहीहोतहेतेसे ॥ कलानाशसेइडनाशा ॥ सुं  
 तनुनाशासेजिवनभासा ॥ ४५ ॥ सुंस्वपनेनरेवभवपावे ॥ मिथ्याकुंभिभोगनचावे ॥ तेसेजन्मम  
 रणहेसोउं ॥ अतो निससमानतसोउं ॥ ४६ ॥ याकारणकऊंसतिमतोई ॥ मनमोहकरअज्ञानतो  
 ई ॥ शोकभयोतवअतरसोई ॥ तवज्ञानसेतजीसखीहोई ॥ ४७ ॥ होहा ॥ शुकतीकहेबलदे  
 वने ॥ बोधकियोतबनेऊं ॥ उदासिपणुसागिके ॥ बुधिसेमनवशाकेऊं ॥ ४८ ॥ चोपाई ॥ अरिने

हनिवल्छोरेका ॥ रुक्मिण्यो विननुरविवेका ॥ भागे मनोरथजीवतजोउ ॥ विरुपकिनसंभारतसोउ  
 धर ॥ हृदमनमारिरुभगनिनलाई ॥ नही आउं कुं रिनपूरमांई ॥ याकारणकरिगेपरहेऊं ॥ नगरभोत  
 कटहेस्थलतेऊं ॥ ५० ॥ प्रभुसबनपकुं जितकेलाई ॥ रुक्मीणीकुं परनेपुरआई ॥ तडपुरवामोअ  
 म्यजततेऊं ॥ महाउल्लवभयोतिनकीगेऊं ॥ ५१ ॥ मणिकुं उलधरनरअरुनारी ॥ वरवधुकुं देवतध  
 नभारी ॥ वसनभूषनजतजोरिअनुपा ॥ पुरव्याभाकऊं संतुं अचभूपा ॥ ५२ ॥ इंद्रध्वजपरकतहेजा  
 में ॥ रत्नपदसुततोरणतामे ॥ फुललाजाअकुरसबहारी ॥ अगुरुधुपदिपुजतघटधारी ॥ ५३ ॥  
 प्रियराजाबोलायेतेऊं ॥ तिनकमदकरगतआयेऊं ॥ पुगरंभाकुं परजातएऊं ॥ मदसैसिचेमारग  
 गेऊं ॥ ५४ ॥ कैकैयकुरुसंजयभूपा ॥ कुंतोविदरभजडअनुपा ॥ उल्लवसेंसवदोरतएहा ॥ मांहीम  
 हिमुदपावततेहा ॥ ५५ ॥ रुक्मिणीहरणऊं किजोगाथा ॥ करतपरस्परमिलिसबसाथा ॥ नृप  
 अरुनृपकन्याहेतेती ॥ सैनिविस्मेषावतसवतेती ॥ ५६ ॥ सोरग ॥ दारमतमेंतेऊं ॥ लोकरमा  
 ऊतहरिनिरवि ॥ महामुदरुतभयेऊं ॥ अखिलजकपतिजानके ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ इतिश्रीमतभा ॥ १५ ॥

गवत ॥ दशमस्कंधमितेऊं ॥ रुक्मिणिकुं परनेहरि ॥ भूमानंदकहेऊं ॥ ५७ ॥ इतिश्रीसहजानंद  
 स्वामीश्रीष्यभूमानंदहृत्तभाषाचतुस्रचात्रात्मोऽध्यायः ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ तन्मकामकीहरण  
 हि ॥ शंवरहनिजुतहार ॥ पुरगयेपंचावनसें ॥ हृदमऊंकेकुमार ॥ १ ॥ चोपाई ॥ शुककहेयेलेशि  
 वनेतेऊं ॥ क्रीधऊंसेजारेकामतेऊं ॥ तनुंउसतिलियेपुनोएऊं ॥ हरिअंशपायहरिकुंगेऊं ॥ ३ ॥  
 हरिसेचैदरभिवेषेजाता ॥ हृदमत्स्यप्रद्युमनख्याता ॥ इच्छितरुपधरशंवरयाकु ॥ दशादिनयैले  
 हरिकेताकु ॥ नितशुभुजातिकेतेऊं ॥ शरिसीधुमैंगयेपुनिगेऊं ॥ ३ ॥ याकुमिनगिलिगयेतेऊं  
 अोरमिनरुतजालमैसोऊं ॥ पकरेदिमरनेमल्लएहा ॥ भेटनकरतसंवरकुंतेहा ॥ ४ ॥ पाकुशाखा  
 मेंमल्लजेनाई ॥ छेदतपेरलुरियेंताई ॥ अद्रुतवालकदेखतएऊं ॥ प्रायावतिकुं देवततेऊं ॥ ५ ॥  
 जबयाकेउरशंकाआई ॥ नारदआयेशिघ्रचलाई ॥ कहिउसतिवालकितेऊं ॥ रुक्मीणिहृदम  
 सैतभेतेऊं ॥ संवरनेसागरमैशरे ॥ मल्लगीलेसोकहीदेखारे ॥ ६ ॥ सोरग ॥ याकीनारिरती  
 नाम ॥ पतीवृतामगदेखतही ॥ कवप्रगवेगिकाम ॥ मुनिमानमिलुंयाकुं ॥ ७ ॥ चोपाई ॥ दाल

भातसुधारणकाजा ॥ रां खनयाकुंशंवरराजा ॥ बालकजानिकामकुं एहा ॥ पालतपोषतजतस्त्रीहा ॥ ७  
 -म्रत्यकालमेंतोबनपाये ॥ सबनारिकुंमोहउपताये ॥ कमलनेनभुजलंबेयाके ॥ सबनरसंकेदरत  
 युजाके ॥ ८ ॥ याविधनिजपतिकुंजोउ ॥ सलजहासभ्रहृदयारसंयोउ ॥ कामभावदेखावतभारी ॥  
 सेवतसुंनिजपतिकुंनारी ॥ ९ ॥ बालकहेमानामनितारी ॥ प्रातभावततिभद्रसुंनारी ॥ रतिकहेतू  
 मप्रभुकेबाला ॥ हरिलायोशंवरविकाला ॥ ११ ॥ रतिनाममेंहौनवदारा ॥ होत्सकामधरेअवता  
 रा ॥ ग्रहशंवरतोयसिधुमांइ ॥ इरतदशादिनपुरननताई ॥ १३ ॥ मिनउदरसेनिकसेजबही ॥ एही  
 नगरमेंआयेतबही ॥ तवशत्रुमायाश्रातधारी ॥ मारोतूममायाविस्तारी ॥ १३ ॥ होहा ॥ शोककर  
 ततबमातसुं ॥ हिलोहिविनबाल ॥ जोजेसैंविनवाछरु ॥ सतमेंस्नेहविशाल ॥ १४ ॥ चोपाई ॥ इत  
 नेवचप्रद्युमनकुंकीना ॥ देतविद्यापुनिताहिप्रविना ॥ सबमायाकुंनाराकतेहा ॥ मायावतिदेत  
 मायातेहा ॥ १५ ॥ सोशंवरदिगजाइपोकारे ॥ ऊधकरनिकसभुवनसंवारे ॥ कठिनवचनबहुया  
 कुंमारी ॥ कविउपजायेउरमेंभारी ॥ १६ ॥ सुंपदशामउरगपरशरा ॥ क्रोधकरिनिकसेतजीक्षार ॥ १६ ॥

रक्तनेनगदाग्रहीपानी ॥ प्रद्युमनपरशारिकेमानी ॥ १७ ॥ विजपातसमकहतपोकारी ॥ रहनाउरअ  
 बधिरजधारी ॥ गदाशंवरकिआवतताई ॥ निजगदाकरदेतहगाइ ॥ १८ ॥ पुनिक्रोधप्रद्युमनलाइ ॥  
 मारतअरिकुंगदासुधाइ ॥ शंवरमायाकारिकेतेइ ॥ मयदानवनेदरश्रातजेइ ॥ १९ ॥ सोरगा ॥ शंवर  
 नभमेंताई ॥ वृष्टिकरतयाप्लाऊकी ॥ प्रद्युमनऊंकेताइ ॥ सोभिजोरतनिजमाया ॥ २० ॥ चोपाइ ॥  
 पुनिशंवरअहीगुह्यकऊकी ॥ गंधर्वरक्षसपिशाचजूकी ॥ श्रातश्रातमायाकिनेउजबही ॥ नाशकर  
 तप्रद्युमनतबही ॥ २१ ॥ पुनितिक्षणतरवारसेएइ ॥ शिरछेदतशंवरकोतेइ ॥ किरिस्कुंउलजतशि  
 रएहा ॥ रक्तसुखशाहिधरतेहा ॥ २३ ॥ तबप्रद्युमनकेपरनाइ ॥ देवकरतकमनकरलाइ ॥ प्रद्युमन  
 कुंरनिलेनभमाइ ॥ पठवायेक्षरामतिताइ ॥ २३ ॥ जनुंघनघटाबिजततनाइ ॥ राजभूवनललनासब  
 धाइ ॥ देरवतशांभवसनपितधारी ॥ लंबेभुजमुखहसतसुहारी ॥ २४ ॥ रक्तनेतजतमुखपरनाइ ॥ वं  
 केनीलकंठारहेलाइ ॥ सबनारिकहेहृदमहीणइ ॥ जातपाइलुपायेतेइ ॥ २५ ॥ होहा ॥ वयसैंछोर  
 जानके ॥ आइसमीपेनास ॥ रतिरत्नजतदेवके ॥ विस्मितभइसबदार ॥ २६ ॥ चोपाइ ॥ शामनयन



मधुरमुखवानी ॥ स्नेहसें डधकरेस्तनजानी ॥ वैदरभिसंभारतसोउ ॥ आगोपुत्रमरेथेजोउ ॥ ३७ ॥ कमल  
 नेननरमेंवरकोउ ॥ याकेमाततातकुंनहोउ ॥ कहांसंलायोहेअसनारी ॥ ममसूतकुंरारैजोमारी ॥ ३८  
 जोजीवनहीसेअवणऊं ॥ रुपवयकरीतूल्यहेतेऊं ॥ श्रीहृदयसमरुपकुंपाये ॥ गतीखरहामुतूल्यता  
 लाये ॥ ३९ ॥ देहअरुकरचराणहेजोउ ॥ अमूलोकनहरिकेसमसोउ ॥ निश्चेममअरभकहेणऊं ॥ यामे  
 मेरीहोनसनेऊं ॥ ४० ॥ वामभूताफरकतहेमेरा ॥ युंविचारतरुक्मिणितेरा ॥ देवकीवसुदेवरुहरिआ  
 ई ॥ जानतसबतोकहननताई ॥ ४१ ॥ सोरगा ॥ नारदनेकिनगाथ ॥ शंबरासरहरेतेऊं ॥ आश्वर्यसंनि  
 उसाथ ॥ हृदयमनोसितामुदितभई ॥ ४२ ॥ चोपाई ॥ देवकीवसुदेवहृदयगामा ॥ रामअरुहृदयकिजोभा  
 मा ॥ रतिप्रद्युमनकुंमिलोणऊं ॥ मुदपायेरुक्मिणिजततेऊं ॥ ४३ ॥ बकुवर्षविनेपिछेआये ॥ मरिकेफे  
 रतनमसुपाये ॥ सुनिसवृद्धारामजोननेऊं ॥ कहकरुप्रतिभभयोयुतेऊं ॥ ४४ ॥ पतिभावप्रद्युमनमे  
 जाई ॥ हृदयऊंकीनारिसोभोताई ॥ पटराणिअमृष्टविनसवणऊं ॥ चिंतवतणकोतेरहीतेऊं ॥ ४५ ॥ दोहा  
 शोभकरतचितवतमें ॥ सोभयोमुरतीमान ॥ देखभजेनिजमातजो ॥ क्यातवनारीअज्ञान ॥ ४६ ॥ इतिश्री ॥ ११ ॥

मतभागवत ॥ दशमस्कंधमितेऊं ॥ प्रद्युमनतनमशंबरहनी ॥ भूसानंदकहेऊं ॥ ४७ ॥ इतिश्रीसहजानं  
 दस्वामिशिष्यभूसानंदहृतभाषायापंचपंचाशोत्तमोऽध्यायः ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ आयोकलंकमिथ्या  
 तव ॥ कयामणीहरिजात ॥ रिंछअरुसज्जानितसे ॥ छपनअध्यायगता ॥ ४८ ॥ चोपाई ॥ शुककहेस  
 ज्ञानितहीकिना ॥ हरिद्रोहिमणिकन्यादिना ॥ कहेपरिक्षितशुकसेकेऊं ॥ जोहकियेसज्जानिततेऊं ॥ ४९  
 स्पमतकमणीकहासुखिता ॥ निजकन्याहरिकुंकुदित ॥ शुककहेसज्जानितकेमिता ॥ सूर्यऊंनेस्प  
 मतकदिता ॥ ५० ॥ मणिहिकंठमधरकेणऊं ॥ सूर्यकेतूल्यराजततेऊं ॥ आयेछारामतीमेंतबही ॥ तेज  
 ऊंमेंदेरातनतबही ॥ ५१ ॥ डरसेदेखतजनसबयाकुं ॥ तेजसेंचोरतहगहिताकुं ॥ यासारमतघमुठि  
 गताई ॥ कहेसवसूर्यअज्ञातचलाई ॥ ५२ ॥ सोरगा ॥ नारायणनमुतोई ॥ शंखगदाकंजचक्रधर ॥ क  
 मलनेनहरिसोई ॥ रविअज्ञातहेदेखनकुं ॥ ५३ ॥ चोपाई ॥ सबजनकेलोचनकुंणऊं ॥ चोरतहेकिरणसें  
 तेऊं ॥ त्रिलोकिमेंवरेदेवतेता ॥ तबमारगसोधतहेतेता ॥ ५४ ॥ अंबतूमकुंनडमेंगुदतानी ॥ रविअज्ञाये  
 देखनपैश्वानी ॥ शुककहेअज्ञऊंकीवचसंनि ॥ अंबुंजलोचनहसतहीपुनी ॥ ५५ ॥ प्रभुकहेअसरविदेव  
 कामल

नांही ॥ सत्राजितहेमणितुरमाही ॥ पुनिसोनितसदनमेंआई ॥ उमवसेंसनगारतताई ॥ ७ ॥ देवमें  
 दिरङ्गमेंमणिराङ्ग ॥ विपङ्गमेंपधगयेतेङ्ग ॥ सोमणीप्रतिदिनअष्टहीभारा ॥ कंचनवरषतअतिउदारा  
 १० ॥ तेहिद्यलपुनितमणिरहेङ्ग ॥ तेहिद्यलआधियाधिनतेङ्ग ॥ अकालमृत्युअसकभडखहेतू ॥ सर  
 पआदिमाईकसबतेतू ॥ ११ ॥ दोहा ॥ उगुसेनअरथेमणी ॥ जाचतहरिराकदिन ॥ सत्राजीनलोभि  
 अति ॥ जाचाकीभगाकिन ॥ १२ ॥ चोपाई ॥ प्रसेनमणीसोकंठमेंउारी ॥ मृगमारनवनचलिहयगरी  
 हयकृतप्रसेनकुंमारी ॥ केउारीमणिलेभगेगिरिचारी ॥ १३ ॥ जांबवानइछतमणीएहा ॥ मारकेउ  
 रिलेगयोतेहा ॥ जांबवानगुहामेउताई ॥ कीनरमकडंबालकताई ॥ १४ ॥ सत्राजितप्रसेननतोई ॥  
 शोककरनअंतरमेंसोई ॥ मणीजूनप्रसेनसंनिवनमोई ॥ मारेउहृदमङ्गनेरिगताई ॥ १५ ॥ संनिगा  
 थापुरमेंजनतोउ ॥ करनलगोअप्रसोअप्रसोउ ॥ संनिसोउगाथहरियुजाने ॥ आयोअपजसमोप  
 रमाने ॥ १६ ॥ प्रसेनकेपगदेखनकाजा ॥ पुरकेतनजतचलेसगता ॥ प्रसेनहयकेउारिनेमारा ॥ दे  
 खचलेआगेंउदारा ॥ १७ ॥ केउारिकुंपरवतमेणङ्ग ॥ हनेरिछनेदेखततेङ्ग ॥ रिछगुहामयांकराहा ॥ १८ ॥

घोरअंधारीदेखततेहा ॥ १९ ॥ सोखा ॥ गयेगुहामहीएक ॥ प्रभुप्रजासबबहीरखत ॥ देरवनजतवी  
 वेक ॥ क्रिउनलियेकिनबालकुंकी ॥ २० ॥ चोपाई ॥ मणिहरनेबालकरिगताई ॥ तादेदेखतबालकी  
 माई ॥ अज्ञानेनरदेखयोकारा ॥ रिछआयोसंनिततकारा ॥ २१ ॥ अतिबलवतरोषउरलाई ॥ निज  
 स्वामिसेंलरतहीआई ॥ घाकृतपुरुषप्रभूकुंमानि ॥ किनक्रोधमहीमानहीजानी ॥ २२ ॥ दुमआयुध  
 पथरभुजमारी ॥ लरतदौउनितजीतउरधारी ॥ मांसलियेचिचाणाजेसे ॥ मणीलियेलेरहोअतितेंसे  
 २३ ॥ बंधमुष्टिसेंमारतदौउ ॥ परतविजसुगरजनसोउ ॥ अवनविज्ञादिनहीतलगाई ॥ रातदिवसविज्ञा  
 मोनाई ॥ २४ ॥ हरिसुष्टिकेमारसैंदेहा ॥ मानुंवनसैंतूटेउतेहा ॥ क्षिणजोरप्रसेवाउतनमें ॥ बोलतहरि  
 सेविस्मितमनमें ॥ २५ ॥ दोहा ॥ जनकेतनमनइंदिके ॥ सहस्रीजबलजोउ ॥ घाणसकलतोतीवके  
 तूमहोजानेसोउ ॥ २६ ॥ चोपाई ॥ पुरुषोत्तमविधमूतमकाला ॥ सबसंपरतूमसबकेपाला ॥ जगकर  
 ताकेकरताजोउ ॥ तूमसुसुकेसखषासोउ ॥ २७ ॥ तूमहोजिवकेतीवनतेङ्ग ॥ क्षयकरताकेक्षयकरतेङ्ग  
 तनिकरोषजतहगकरिहेग ॥ पायेडखसागरमेंदेग ॥ २८ ॥ ग्राहतिभिगलमहामछतेङ्ग ॥ नंकन

तसिंधुमगदेऊ ॥ तोरेजगुरुपीसेतुकीना ॥ पुनित्रमलंकांतारिदिना ॥ २० ॥ तोरबाणासेदशशिरछि  
ना ॥ रावणाकीवधतूमनेकिना ॥ याविधजाबवानकरजोरी ॥ किनस्तवनप्रभुदिनेजोगी ॥ २१ ॥ अति  
रुखरूपकेरतनिजपानि ॥ याकितनुपुरनिजजनतानि ॥ कमलनेनहयाघनिलाई ॥ कहतहिघेरे  
स्वरसेनाई ॥ २२ ॥ संतुरिछराताकहुतोई ॥ आयेगुहामिकारणसोउ ॥ कुरकलंकमोरेपरआवा  
यामणिहुंसेतेहिमितावा ॥ २३ ॥ संनियहबचनरिछमूदपाई ॥ जाबवतिऊतमणिदेतलाई ॥ गुह  
सेंहरिनिकसेनहीजबही ॥ दादशादिनवितिगयेतबही ॥ २४ ॥ दुखिसवजनपुरजायकेकिना ॥ सं  
नियहगाथरुद्रभयेदिना ॥ वरुदेवरुक्मिणिदेवकीतेऊ ॥ शोककरतसवजादवतेऊ ॥ २५ ॥ सो  
खा ॥ सत्राजितकुंजाप ॥ देतदुखिपुरजनहोई ॥ चंद्रभागाकिआप ॥ सेवाकरतप्रभूमिलन ॥ २६ ॥  
चोपाई ॥ करिवृजनपाईआशिष्यजबही ॥ दाराऊतमोलिताकुंतबही ॥ देखमणिजूनमूहामुदपाया  
मानुमरकेप्रभूकेआया ॥ २७ ॥ उपसैनदिगसभाकिमोई ॥ सत्राजितकुंलिनबीलाई ॥ ज्युप्रभूपाये  
प्रणीसोकीना ॥ पुनिसोसत्राजितकुंदिना ॥ २८ ॥ मणिलेलजितअतिगयेगेऊ ॥ निजअघसेंजरेनि ॥ २९ ॥

चमुखेऊं ॥ किनअप्रपराधविचारतएऊं ॥ वैरकिनेसमृथसेंजेऊं ॥ ३० ॥ क्युअघमिरेप्रभुरहेप्रसंन  
क्युसभहोहिममज्ञापंतनजना ॥ ह्यणविचारविनमेमतिमंदा ॥ अतिधनलोभिअंतरगदा ॥ ३१ ॥  
प्रणीऊतकसादेऊमेतोई ॥ सांतिकरनयहनिकउपाइ ॥ करिविचारबुधिसंपुनिएऊं ॥ मणीऊतादि  
नहृदप्रकुंतेऊं ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ प्रभुविधिऊतससभामही ॥ परनेरुपशिलजोई ॥ हतवर्माहिकजाची  
जो ॥ ताहीनपरनतसोई ॥ ३३ ॥ प्रभुकहेशात्राजितकुं ॥ भऊमणीलेजाऊं ॥ तवधनसबिहमारोहे ॥  
तोरेपुत्रनहिकाऊं ॥ ३४ ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ वशमस्कंधमिजेऊं ॥ मणिजांबवतियायहरी ॥ भू  
मानेदकहेऊं ॥ ३५ ॥ इतिश्रीमहानंदस्वामीशिष्यभूमानंदहृतभाषायाधरतपचात्रामो ॥ ध्या  
यः ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ सतधनवामारेपछी ॥ आयेअपजसतेऊं ॥ मणीप्रकुरसेंजायके ॥ मिरेसता  
वनमेऊं ॥ ५७ ॥ चोपाई ॥ शुक्रकहेलाखगेहगुहासें ॥ गयेनिकमिपांउवसबतासे ॥ सबजानतहेतो  
भिसोउ ॥ जरेयुंसंनिरोतगयेदोउ ॥ ५८ ॥ हस्तिनपुरमेंरोतपोकारी ॥ विदुरद्रोणभिष्मगंधारी ॥ ह्यपा  
चारऊतमिलिसवएहा ॥ करतविजापहाहाकहीतेहा ॥ ५९ ॥ गयेहस्तिनपुरतानिजोउ ॥ हतवर्मा

अरु अकुर सीउ ॥ सतधन्वा मणिले कही होउ ॥ सत्राजित दिगहे कऊं तोउ ॥ ४ ॥ कृपा तूम कुं देवन की  
 ना ॥ उगी अपने कुं हृदम कुं दिना ॥ हनि सत्राजित कऊं में तोई ॥ घुसैन भेले कर दे सोई ॥ ५ ॥ सोरवा ॥ ह  
 तवर्मा अकुर ॥ मिलिके मती भेदि सतधनु ॥ क्षिणवय पापी घुचुर ॥ सुते सत्राजित कुं हनी ॥ ६ ॥ चोपा  
 ई ॥ करत कुला हलरो वत नारी ॥ मणिले गयो कसाइ सुमारी ॥ हने तात देखि ससभामा ॥ शोक जु तरो  
 वत लेनामा ॥ ७ ॥ तेल गुहामी तात कुं उरि ॥ हस्तिनपुर गये जिघ्रचारी ॥ सब जान श्री हृदम कुं की ना  
 कनि नर चरित किये उ प्रवीना ॥ ८ ॥ हाहम कुं यह कृष्ण अपाग ॥ करत विलापने न जल धारा ॥ दारा भ्रा  
 त सहित पुर प्राये ॥ सतधन्वा कुं मारन धाये ॥ सो भिहृदम हने गै जानी ॥ जिवन दुछे उ अति भय आ  
 नि ॥ जाचत हतवर्मा की शरण ॥ सो कही नती कः प्राये तव मरण ॥ १० ॥ हरि राम को डोही नर को उ ॥ क  
 वऊं न पाये सुख कुं सीउ ॥ इन संदेष करी कंस तेऊं ॥ बंधु कृत पाये मृग्ये तेऊं ॥ ११ ॥ सतर खेर माग धवल  
 मारी ॥ एका एकी दिये निसारी ॥ युद्धत चर्माने न चकिना ॥ अकुर कुं जाचत मति हीना ॥ १२ ॥ होहा ॥  
 तव अकुर कहे इशके ॥ बल कुं जानत तेऊं ॥ हृदम राम से वै रजो ॥ कवऊं न कर ही तेऊं ॥ १३ ॥ चोपाई ॥ ॥२०॥

विलासें रचि न ककुं एहा ॥ पाल हीना शकर तपु मितेहा ॥ माया मोही तत्र त्यादिनेऊं ॥ नही जानत ह  
 रिलिला तेऊं ॥ १४ ॥ सात वरष के जवथे वाला ॥ धरि एक करमें गिरि विशाला ॥ लत्रा कधर ही बाल  
 कजेसें ॥ सात दिन रहे धारितेसें ॥ १५ ॥ हरिसन मुख धिरनाइ प्रविना ॥ सतधन्वा कुं उतर दिना ॥ म  
 लि अकुर कुं दे पु नि एऊं ॥ ज्ञात जो जन चले घोरा तेऊं ॥ १६ ॥ तापर बेवपलायन किना ॥ रथ बेनिहरी  
 गम प्रवीना ॥ वेगवंत घोरा तो राये ॥ श्वकर हनन के पीछे धाये ॥ १७ ॥ मिथिल दिगशात धन्वा ताई  
 गिरे हय छोर चले उ थाई ॥ करिको धप्रभु पा लाताई ॥ रेत चक्र से शिर उराई ॥ १८ ॥ पुनिया के वसन  
 में एऊं ॥ हुंइत मणिकुं पाये न तेऊं ॥ कहत बात बल दिग हरि ताई ॥ दया हने ज्ञात धन्वा भाई ॥ १९ ॥  
 नाहि मणी याके दिग की ना ॥ तव बोलत बल देव प्रविना ॥ ओर नर घरु धरे मणी एऊं ॥ जाइ पुरमें  
 तूम दुते तेऊं ॥ २० ॥ सोरवा ॥ अति बल भहे विदेही ॥ जनक मिलन दुछा मम ही ॥ प्रभु कुं कही बच  
 एही ॥ मिथिलामें बल देव गइ ॥ २१ ॥ चोपाई ॥ बल कुं देव जनक उ रंघाई ॥ आइसन मुख पुत  
 न मुद पाई ॥ अति सनमान करि रखि विदेही ॥ बऊं वर्षरहे मिथिला तेही ॥ २२ ॥ गदा विद्या बल ऊं

नेदिना ॥ इर्यो धननें सोपदलिना ॥ प्रभु निजपुरमें आइकं नाये ॥ ससभामाकुं मणि नपाये ॥ ३३ ॥ स  
 तधन्वावधकही के एऊ ॥ पुनिश्चर कुं नारततेऊ ॥ सुनिवधसतधन्वाको वीउ ॥ हतवर्मा प्ररु ॥ प्र  
 कुरजोगे ॥ ३४ ॥ शतधन्वाकुं घेरकएहा ॥ किनेपलायनतती नितगोहा ॥ काशिमें गये ॥ प्रकुरजवही  
 दुखपाये धारकांतनतवही ॥ ३५ ॥ तनमनभूतसबंधितेहा ॥ तापअरुदेवसबंधितेहा ॥ पुनिपुनिहो  
 वनलागेतवही ॥ बोलतसबजनमीलकेतवही ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ मुनिसबके निवासहे ॥ श्रीरूपतव  
 एऊ ॥ प्रकुरकुं निकामिके ॥ दुखकुं देखततेऊ ॥ ३७ ॥ चोपाई ॥ आगे जानतमाहात्म्यदेरा ॥ सबवि  
 सारबोलतअसफेरा ॥ परतभयेकाशिमेंकाला ॥ काशिनृपबुधिवेवीशाला ॥ ३८ ॥ तेराईश्वरक  
 निजगेऊ ॥ गोटिकसादेवततेऊ ॥ तववर्षातभयोपुरमाई ॥ प्रकुरइनकीसूतसमनाई ॥ ३९ ॥ नेनाबुन  
 प्रकुरहेतहो कालनपरही ॥ तापनही बडतननही मरही ॥ सुनिदृष्टतादवकेवचएऊ ॥ नाराब  
 लकिमीटनसदेऊ ॥ ४० ॥ प्रकुरकुं तेराइसामी ॥ बोलतसबजनअंतरजामी ॥ हेप्रकुरकहीसनमा  
 नकिना ॥ धियेकथापुनिकहीप्रवीना ॥ ४१ ॥ लायेमणी प्रकुरसुजानी ॥ हसतवदनबोलतहरिबा ॥ ४१ ॥

नि ॥ हेदानेश्वरमणितवपासा ॥ सतधन्वाधरिगयोक्तत्रासा ॥ ३३ ॥ स्पमंतकज्ञोभाक्ततवाने ॥ तू  
 महिगहेमणि सोहमजाने ॥ सत्रानितकुं सुतनहितवही ॥ सुतासुततलपिउदेहितवही ॥ राण  
 कुंसेछोरायकेएऊ ॥ प्रवृत्रोषधनलेजावेतेऊ ॥ ३३ ॥ श्रीरसेमणिरखोनताई ॥ तोभित्तमसेंले  
 कुंनताई ॥ कहीगेतुमकुंलेतकुंभाई ॥ ममबंधुकुं विश्वासनाई ॥ ३४ ॥ सोरवा ॥ मणिलप्रवत्तमदे  
 खाउ ॥ जिनकरहमकुंशांतीरुं ॥ कहीममरिगनकाउ ॥ अनंतमखत्तमकहांसुकरी ॥ ३५ ॥ चो  
 पाई ॥ याविधसामुपायतवकीना ॥ तवमणिलायप्रकुरनेदिना ॥ बाधिवसनमेरविषमनेऊ  
 लाईसभाबिचदिनेतेऊ ॥ ३६ ॥ सोसबतादवकुंदेखाई ॥ नितकलंकहरिदेतमिगई ॥ पुनिप्रकुर  
 कुंदिनमणिएऊ ॥ श्रीरकेगेहनरेवेतेऊ ॥ ३७ ॥ असंख्यहरिप्राकमहेतामें ॥ दुखहरसुभरहेतो  
 तामे ॥ असप्रख्यानसुनेजोगावे ॥ प्रपकिरनिततीसांतिपावे ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ इतिश्रीमंतभाग  
 वत ॥ दशमस्कंधमिनेऊ ॥ प्रकुरसेमणी लिनप्रभु ॥ भूमानंदकहेऊ ॥ ३९ ॥ इतीश्रीसहजानंद  
 स्वामिशिष्यभूमानंदहृत्तभावायोसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५७ ॥ दाहा ॥ ससाभदालक्ष्म

॥ मित्रविदाकालिदि। पंचकन्यापरनेहरी ॥ अज्ञावनमेवेदि ॥ १ ॥ **चोपाई ॥** शुक्रकहेपां उव्आ  
 येजानि ॥ ताकुं देखनसारंगयानी ॥ इंदुप्रस्थगयेषभूएऊ ॥ सासकिंआदिसेंसुततेऊ ॥ २ ॥ प्रभूकुं दे  
 रिकेपंचविग ॥ जेउविसरिफुधरागी ॥ एककलाविल्लनसवगेसे ॥ जिवकुं पाईसवईदितेस ॥ ३ ॥  
 मिलिमुखनिरखमहामुदपाये ॥ अंगसुंगसेपापजराये ॥ भिमधमकेपदप्रभुनाइ ॥ मिलेअरऊ  
 नकुं वाथलगाई ॥ ४ ॥ सहदेवनिकुलपरिपदमाई ॥ पुनिआज्ञानपरइशावेगई ॥ नइबऊदोपदिधी  
 रेआई ॥ जज्ञाऊतवंदतपदताइ ॥ ५ ॥ सासकिंयुजेतसबभाई ॥ करीवंदनदिनआसनताई ॥  
 प्रोरजादववैवेचऊंओरी ॥ पृथ्याआयेषभुदिगदोरी ॥ ६ ॥ प्रतिस्नेहसेनेनमेवारी ॥ मिलनप्रभु  
 पदगमैधारी ॥ फेरकुञ्जालतापुछततेऊ ॥ प्रभुपुछततवसहीतरुऊ ॥ ७ ॥ **सौरगा ॥** प्रेमसेव्या  
 कुलदिन ॥ सजलनेनकुंवरुंधे ॥ वऊडुखसभारलिन ॥ जोलनआनंदप्रदसं ॥ ८ ॥ **चोपाई ॥** त  
 वसेहमारोकुञ्जालताये ॥ जवतूमनेममभ्रातपगाये ॥ जवतूमसंभारेममगाथा ॥ तवसेहमकुंकी  
 नसनाथा ॥ ९ ॥ **विश्वआत्मारुफहदतोई ॥** स्वपरभ्रातिकवऊंनहोई ॥ तदपितुमकुंसमरततोई ॥ १० ॥

केवाहनतरहिअंतरमांइ ॥ १० ॥ धर्मकहेहमकहासभकिना ॥ नहीजानतसोप्रभोप्रविना ॥ जोगे  
 श्वरदेखतनहीजेऊं ॥ विशोइहमकुंमिलेतेऊं ॥ ११ ॥ रविनृपनेहरिचर्षताई ॥ जनकुंदिनेमुदपुरमां  
 इ ॥ एकदिनरथवेगीअरऊना ॥ गांडिवधनुलिनअक्षयतना ॥ १२ ॥ हरिऊतवनविचरेकदिवां  
 धि ॥ चाघवराहहनतशारसांधि ॥ सरभमहीवारुरुमृगजुआ ॥ कर्मजोगपययेकरिहिसा ॥ १३ ॥  
**दोहा ॥** थाकतरखतजतअऊन ॥ जमुनांसुधजलमांई ॥ हाथरुपावपरवालिके ॥ पानकरत  
 पुनिताई ॥ १४ ॥ **चोपाई ॥** हृदमअरुअरऊवजोदोउ ॥ चलतिदेखतकंन्यासोउं ॥ प्रभुपवायेअ  
 रऊनताई ॥ पुछतउजमनारीताई ॥ १५ ॥ कुनतूमकिनफताकहारहऊं ॥ क्याईछतहोसबमो  
 यकहऊं ॥ विधुवरऊंकुंइछततोई ॥ तोरअंतरकिजालुंसोई ॥ १६ ॥ कालिदिनामरविममताता  
 हरिवरनतपकरुंसाक्षाता ॥ श्रीपतीविनवरवरुनकोउ ॥ अनाथपरप्रभूपसनहोउ ॥ १७ ॥ र  
 विनेरचेभुवनजलमांइ ॥ विधुमिलेतालुवुसमेताई ॥ आइअरऊनहरिकुसबकिना ॥ तवप्र  
 भुनेकन्यारथलिना ॥ १८ ॥ इंदुप्रस्थमेआयेजवही ॥ मिलिपांउवनेप्रेरतवही ॥ प्रभुविश्वकमां

हिंदेगई ॥ दिनेउताकुंनगररचाई ॥ १८ ॥ सोरवा ॥ निजजनकेसरखकाज ॥ पुरमेरहीखांडववनही ॥ अग्निचरनचनगत ॥ सारथिभयअरकनके ॥ २० ॥ चोपाई ॥ अग्निप्रसनहीइकेदिना ॥ श्वेत  
 योगकतरथनचीना ॥ अक्षयशरकतभाथादोई ॥ देतधनुषअरकनकुंसोई ॥ २१ ॥ पुनिवकरदिने  
 कहुंतेहुं ॥ धनुषधरसैंकटेनजेहुं ॥ खांडवसैंछोरेमयतेहुं ॥ सभाअरकनकुंरचिदिनतेहुं ॥ २२ ॥  
 जामहीजलथलतानतनाई ॥ डुरयोधनकिहगभरमाई ॥ युधिष्ठिरनेआगपादिना ॥ सहस्रनेआनं  
 रकतकिना ॥ २३ ॥ फेरिधारकांप्रभुचलेहुं ॥ सासुकिआदिसंचृततेहुं ॥ पुसकतुनक्षित्रहेतामे  
 हृद्यकादिदिपरणततामे ॥ २४ ॥ निजजनकुंभईउखवभारी ॥ अोरहीउजेणनगरीसारी ॥ जेनच  
 षविंदअनुविंदसोउ ॥ डुर्योधनवडाचरतहीसोउ ॥ २५ ॥ स्वयंवरमेंनिजभग्नितेहा ॥ वरतहृद्यकु  
 रोकततेहा ॥ गताधिदेविफुडनामा ॥ तिनकिमिन्नविहागुणधामा ॥ सबनृपदेखरहेहरिआई  
 याकुंहरिप्रतिजोरजनाई ॥ २६ ॥ दोहा ॥ नग्नजितनामनरपथे ॥ नगरअप्रयोधामाई ॥ नाग्नती  
 तियाकिरुया ॥ ससाकहहीतोई ॥ २७ ॥ चोपाई ॥ सातदृषभतीतीनृपजोउ ॥ कयावरनस्मृथन ॥ २३ ॥

हिंकोउ ॥ तिक्षणाश्रंगरिगताननपावे ॥ सरगंधपाईमारनधावे ॥ २८ ॥ दृषभजितेसोवरहीताई  
 सनियहप्रभुसैमचतथाई ॥ आयअप्रयोधासंनिपुरराजा ॥ गयेप्रभुद्विगचलिक्तसमाजा ॥ २९ ॥  
 पुनतबहुविधपुजाजाई ॥ इच्छितवरकुंदेखतथाई ॥ नृपकन्यामनमेधुधारे ॥ होहुंवरश्रीपतिह  
 मारे ॥ ३० ॥ तपचतहमआगेकिनजोउ ॥ अबमेराससहीसबसोउ ॥ नृपपुताकरिकेडारनामी  
 हमक्याकरेपुरणतूमस्वामि ॥ ३१ ॥ श्रीअजनिवलोकपालजेहुं ॥ जिनपदरजसिरधारतेहुं ॥  
 स्वहृतदृषसतूरक्षणकाजा ॥ नरतनुंधरेहेतूमसुभभाजा ॥ ३२ ॥ तुममोपेंप्रसनक्युहोहुं ॥ शु  
 ककहीतवबोलेषभुसोहुं ॥ हेनृपक्षत्रिधर्मतेहुं ॥ इनकियांचानिदिततेहुं ॥ ३३ ॥ तदपिअपने  
 सोहुंदकाजा ॥ विनमुलजाचतकन्याराजा ॥ नृपकहेकन्यावरतूमविना ॥ अोरकोउइछीतहम  
 चिना ॥ ३४ ॥ सकलगुणकेतूमहोधामी ॥ अंगसैंश्रीनहीजावेस्वामी ॥ हमएकनिमकियेकहुं  
 तोई ॥ नृपघाकमजाननकुंसोई ॥ ३५ ॥ सोरवा ॥ सातहिगोदृषणहुं ॥ अजितअंबंधचक्रमारे  
 नृपकुमारकुंतेहुं ॥ करचरनतनुंतोरदिये ॥ ३६ ॥ चोपाई ॥ त्मइनकुंबंधेषभुजवही ॥ ममकन्या

तोइदेनितवही ॥ याकोनिमसंनिकेनाथा ॥ सातरुपभयेएकसाथा ॥ ३७ ॥ बांधिकरिक्कीरतप्रभूनेसे  
 पकरदामसेंबोधततेमें ॥ भग्नजोरकुंतानततेऊं ॥ काष्टवेलकुंवालकतेऊं ॥ ३८ ॥ नृपविस्मितपुनीप्र  
 संनहोई ॥ देतसूतानिजहृद्यहीसोई ॥ प्रभुपरणतसमराजकुमारी ॥ हरिदेखहरखतनृपकिनारी ॥ ३९ ॥  
 अतिउल्लसतभइसवएहा ॥ शंखभेरिअज्ञानकवजीगेहा ॥ वसनभूषणसज्जतत्रनारी ॥ गानक  
 रतद्वितवेदउचारी ॥ ४० ॥ धेनुंदासहस्रअरुनारी ॥ तिनसहस्रदेतसणगारी ॥ हस्तिनवसहस्रपु  
 निएऊं ॥ नवलारवरथदेवततेऊं ॥ ४१ ॥ पुनिनचकोदिदेवतयोग ॥ नवपद्मपालाजूतजोग ॥ पुनिरथप  
 रवरचुडवेगई ॥ सेसजूतनृपपवावतेताई ॥ ४२ ॥ सोहा ॥ परनिचलेप्रभूसंनिके ॥ मगरेकतनृपधा  
 इ ॥ वृषअरुजादवनेकिये ॥ बलभंगताकीताइ ॥ ४३ ॥ सोपाई ॥ शरसमुद्गरतसवअाई ॥ अर्क  
 नमारतगांदिबचराई ॥ बंधकोहीतकारकएऊं ॥ मृगसिंधुसाइहनहीतेऊं ॥ ४४ ॥ पारिवहंससास  
 गजाई ॥ रमतद्वारकामेंप्रभूअाई ॥ तातभगनिश्रुतकिरतिनामा ॥ तिनकीसूताभद्राभामा ॥ संतर  
 दनअादिवंधुयाकी ॥ दिनभग्निप्रभुपरनेताकी ॥ ४५ ॥ मद्देशाराताकिसूता ॥ लक्ष्मणालक्षणा ॥ २४ ॥

युधिष्ठिर

सभजूता ॥ याकेख्यंचरमेंप्रभूअाई ॥ हस्तसफर्णसधाकिसाई ॥ ४६ ॥ सोरवा ॥ इजिधेंसोलहजा  
 र ॥ हृद्यनारिसंहरवदनी ॥ लातभूमाकरमार ॥ बंधनसेंनिकासिप्रभू ॥ ४७ ॥ सोहा ॥ इतिश्रीमत्  
 भागवत ॥ दशमस्कंधमितेऊं ॥ अष्टपटगणीपरनेही ॥ भूमानंदकहेऊं ॥ ४८ ॥ इतिश्रीसहजानंद  
 स्वामिशिष्यभूमानंदहृत्तभाषायाः अष्टपचात्रात्मोऽध्यायः ॥ ५६ ॥ सोहा ॥ भौमहनिकम्पायाय  
 ऊं ॥ पारिजातहस्तात ॥ परनिरमततिनकेसंग ॥ ओगनसारमेवात ॥ १ ॥ सोपाई ॥ परिक्षितकही  
 भौमक्युंमार ॥ सोपुनिकहांसंलायेदारा ॥ कहोशुकचरितहरिकीएऊं ॥ बोलतशुकवचसंनिकेतेऊं  
 २ ॥ वरुणलज्जकुंडलमाताके ॥ हरेमणीपर्वतथलताके ॥ सोइंससभामागेहा ॥ जाहिसंनानेयुप्रभु  
 कुंतेहा ॥ ३ ॥ भौमचरितसंनिगरुउहीगारी ॥ प्राग्गोतिषपुरतइजूननारी ॥ गिरिअरुअायुधऊंकेता  
 उ ॥ जलअरुअगनिअनिलकेकोउ ॥ ४ ॥ मुरपात्रजूतकोदहेराता ॥ पुरचऊंओरभयांकरतेता ॥ गि  
 रिकेकोटगदासेंतोरे ॥ श्रास्वइरगनित्रारसेफोरे ॥ ५ ॥ अगनिजलवायुकोदतीना ॥ निजचक्रऊंसें  
 प्रभुनेछिना ॥ मुरपात्रांतरवारसेकटही ॥ सवयंत्रशंखनादेमटही ॥ ६ ॥ सोरवा ॥ पुरऊंकोइरगजोउं



भा. द. उ.  
॥ २५ ॥

गदासंगिरदिनेतबही ॥ शंखनादकंनिकोउ ॥ उगतमुरदैसुपंचमुखि ॥ १७ ॥ **चोपाई** ॥ रवाईतलमेसु  
तेथेजेऊ ॥ श्रुच्युलकरमेंधारिकेतेऊ ॥ प्रलेऊंकेरविअग्निजैसें ॥ याशिकोऊनजावेतैसें ॥ १८ ॥ पंचमु  
खकारिप्रभुरिगन्नाये ॥ जनुत्रिलोकिलिनकुं धाये ॥ तोलिविश्रुच्युलगरुडपरउारे ॥ पंचमुखऊंसें ना  
दउचारे ॥ १९ ॥ नभनिमिदेवलोकदिशाएऊं ॥ अंडकटाहलुंपुरणतेऊं ॥ श्रुच्युलगरुडदिगन्नावतनबही  
हरिनिनुककरडारतनबही ॥ २० ॥ युनियंचशरमुखममारे ॥ सोभिगदाप्रभुकेपरउारे ॥ सोगदा  
प्रभुदिगन्नाइतबही ॥ निजगदासैंकिनचुरणतबही ॥ २१ ॥ बधमुष्टिमारनतबधाये ॥ तबसिरचक्र  
सैंछिनउदाये ॥ कटेसिरविनघानपरेउ ॥ चतयेसुंगिरिष्टंगगिरेउ ॥ २२ ॥ **होहा** ॥ सातसुततिनके  
अति ॥ पितावधसैंआत्त ॥ वैरलेवनसबआतही ॥ अमर्षलाइअतिउर ॥ २३ ॥ **चोपाई** ॥ ताम्र  
अवणअरुणनभस्वना ॥ विभावसुवसुअंतरिक्षाना ॥ पितसेनापतिकरिगेऊ ॥ भोमासरपेरेस  
वाएऊं ॥ २४ ॥ धरिआयुधनिकसेसबएहा ॥ डारतगदासरगुक्तिहा ॥ श्रुच्युलअसिऊंधीससुसब  
जेऊं ॥ हरिनिनसरसैंचुरणकिनेऊं ॥ २५ ॥ पितआदिसबजमपुगिमांड ॥ पहेचायेशिरछेदितोई ॥ २५ ॥

अ. ५६

म सु

हरिशरचक्रऊंसेंहनेजेऊं ॥ सेनापतिसवदेखितेऊं ॥ २६ ॥ नरकासरसोकातूरहोई ॥ मरुदरसिंधुसैं  
भयेसोई ॥ अेसैंगजसेनाऊतएऊं ॥ निकसिदेखतप्रभुकुंतेऊं ॥ २७ ॥ रवितुल्यगरुडपरऊतनारी ॥ वि  
तजतघनसुसोभाधारी ॥ धाविधरिंकुंसांगहीमारे ॥ ओरभटसबऊंनेशरउारे ॥ २८ ॥ **सोरवा** ॥ श  
रशरप्रतिनितीन ॥ निजशरउारिकेछेदत ॥ युनिभोमासरके ॥ सेन ॥ शिरकरपदकाटिसबहनी ॥ २९  
**चोपाई** ॥ शिक्षणशरपिछुपुंखऊतशरी ॥ गजघोरऊतसेनामारी ॥ गरुडचोचनरखांखसैंमारा  
गतसबभागकेपुरमिगारा ॥ ३० ॥ पिडेगरुडनेनिजदलतबही ॥ भागतदेखिभोमातबही ॥ डारतगो  
गगरुडपरएऊं ॥ देतहवाईचनरकुंजेऊं ॥ ३१ ॥ तासेकंपतनाही गरुडा ॥ सुंगजफुलमालासैंकुडा ॥  
गरुडपरनहीचलेउतबही ॥ प्रभुमारनपकरेश्रुच्युलतबही ॥ ३२ ॥ श्रुच्युलउारेपैलेसमभामा ॥ बोलिवच  
नसंनऊंगुणधामा ॥ जादवकेभूषणजगदेवा ॥ मारीतूमडनकुंततखेवा ॥ ३३ ॥ कंनिवचससभामा  
कोएऊं ॥ अतितिक्षणचक्रसैंतेऊं ॥ गतपरबैवेथेशिरयाके ॥ किरडकुंडलऊतकारिताके ॥ ३४ ॥ ड  
रेभुमिपरनिजजनतोई ॥ हाहाकरतहनतशिरसोई ॥ सररुधीस्तवनकरिमुदपाई ॥ करसुमनदरित

॥ २५ ॥

बभुमिन्नाई ॥ २५ ॥ जोचनदसवर्णकेजोउ ॥ रत्नरितकुंडलजोसोउ ॥ वरुणलजवैजेतिमाजा ॥ म  
 हामणीदिनलाइततकाले ॥ २६ ॥ स्तवनकरतभक्तिऊतजाई ॥ करजोरिचरनेशिरनाई ॥ कहेभूमित्  
 मजगकेस्वामि ॥ सखेवनकेदेवनमामी ॥ २७ ॥ भक्तकीइलापुरनकाजा ॥ देहधरिचिचरेमाहागजा  
 ब्रह्मादिककेअंतरयामी ॥ शंखचक्रधरतौयनमामी ॥ २८ ॥ कमलनाभकमलस्वजधारी ॥ कमलने  
 नपदकमलकहागी ॥ वासुदेवभगवाननमामी ॥ हेविद्युपुरुषोत्तमस्वामि ॥ २९ ॥ जगकरताकेक  
 रताजेऊं ॥ पुरणबोधहेजाकोतेऊं ॥ तुमअतन्माजककेकरता ॥ ब्रह्मत्तमअसंख्यशक्तिधरत ॥ ३०  
 ॥ दोहा ॥ षट्पतिअरुषधानके ॥ आत्माहोतमजोउं ॥ आत्माजेऊंसबभूतके ॥ परमात्मात्तमसोउं ॥  
 ३१ ॥ चौपाई ॥ जक्ररचतरजोगुनधारी ॥ सत्वधरियालततगसारी ॥ तमधरिनाशकरतहेजोउं ॥ तूष  
 कुंवाधकरतनहीसोउ ॥ ३२ ॥ कालषधानपुरुषहीतेहा ॥ तूमविनकरनस्मृथनहितेहा ॥ भूजलअ  
 नलअनिलनभजेऊं ॥ देवमात्रामनइदितेऊं ॥ कार्यहेअहंकारकिाऊं ॥ पुनिअहंकारमहतत्वते  
 हा ॥ चराचरजेऊंभूतकहाई ॥ आधारतूमतवमहिरहाई ॥ ३३ ॥ यामेभरमकलुनहिस्वामी ॥ संतवा ॥ ३६ ॥

तओरअंतरजामी ॥ भौमासकतवपदकंजमाई ॥ भयऊतआईपस्वोशिरनाई ॥ ३४ ॥ याकोपालन  
 प्रभुतुमकरऊं ॥ अघहरहस्तकमलशिरधरऊं ॥ शुककहेयाविधभूमिजबकिना ॥ स्तवनभक्तिज  
 तहायअतिदिना ॥ ३५ ॥ भगदतऊंकुंअभयवरदेही ॥ भौमगेरहमेपैवतेही ॥ रासकन्याकुंदेखतएऊं  
 सोलसहस्रशतपुनितेऊं ॥ ३६ ॥ सारग ॥ भवनऊंमंनरविर ॥ राजकन्यादेरवमोहि ॥ मनऊंसेवरेधी  
 र ॥ पुरुषोत्तमपतिऊंकुंसब ॥ ३७ ॥ चौपाई ॥ अजघारथनाकरतहितेऊं ॥ यहवरवरेअसआशि  
 षदेऊं ॥ हृदममेमनधरेतवएऊं ॥ कुशस्थलिपगायेषभुतेऊं ॥ ३८ ॥ नयेवसनभुषनपैराइ ॥ सूखपा  
 लऊंसंबताई ॥ महाकोशइनकेथेसोउं ॥ रथघोराअरुधनजोतोउ ॥ अंगवतकुलमेंभयेतेहा  
 श्वेतअरुचऊंदेतधरतेहा ॥ ३९ ॥ चोसगगतपववाइएऊं ॥ इंद्रगेहगयेषभुतेऊं ॥ अदितिकुंउ  
 लदियेतवही ॥ शचिइंद्रमिलिपुतेतवही ॥ ४० ॥ ससभामानेपेरेएऊं ॥ पारितातउवायकेतऊं ॥  
 धरिगरुडपरनिजपुरधाये ॥ लरनइंद्रादिकदेवआये ॥ ४१ ॥ जितियाकुंससभामागेऊं ॥ वारिमेष  
 भुवोयेतेऊं ॥ गंधलोभिभमराभिनेहा ॥ इनकेभेलेआवततेहा ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ प्रभुपदमेशिरना

इके ॥ इंदुवजाचतनेऊं ॥ सोषभूनेलाइरिये ॥ ताहीलरतपुनितेऊं ॥ ध३ ॥ **चोपाई ॥** करअरुधनवे  
 तिहेतेना ॥ अतिको धरहे धारीतेना ॥ एकमुकुर्तसवनारिगेहा ॥ तितनेरुपधरीपरनततेहा ॥ ध४  
 पुनिसवनारिकेगेहमांइ ॥ रमतसराकबुअलगनताई ॥ यागेहसमरुअधिकनकोउ ॥ तामेंग्रही  
 जुरहतहीसोउं ॥ ध५ ॥ पुराणकामअकलप्रभुएहा ॥ ग्रहख्यधर्मदेखावततेहा ॥ रमापतिपती  
 पाइकेनारी ॥ चित्तिहासजतदेखतप्यारी ॥ ध६ ॥ बोलतहरिसेंलसाआनि ॥ तामेंरमतहीसारंगपा  
 नि ॥ यानारिकोमगहेतोउ ॥ ब्रह्मादिकनहीतानतसोउं ॥ ध७ ॥ प्रभुआततवसनमुखधाई ॥ सेवत  
 देवतआसनलाई ॥ चरनधोतपुनिचापतएऊं ॥ केशसुधारितांबूलदेऊं ॥ ध८ ॥ स्नानकराइरुगंधनव  
 चोरी ॥ पलंगजाइविजिनतेरी ॥ श्रातश्रातदासीहेतौएहा ॥ दासीजुंहीइकरतहीतेहा ॥ ध९ ॥ **दोहा ॥** इ  
 तिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमितेऊं ॥ पारिजातलाईनृकहनी ॥ भूमानंदकहेऊं ॥ ५० ॥ **इतिश्री**  
**सहजानंदस्वामीश्रीष्यभूमानंदहृतभाषायोएकीनद्याहितमोऽध्याये ॥ ५० ॥ दोहा ॥** होसीकरी  
 केरुक्मीणी ॥ तिकुहरिकोपाइ ॥ श्रांतकरिपुनिप्रिमसे ॥ श्रावहीअध्यामांइ ॥ १ ॥ **चोपाई ॥** सु

ककहेनरुगुरुउदारा ॥ एकदिवसपलंगपरगारा ॥ रुक्मिणीकरमेंविजिनधारी ॥ सखिजतकरत  
 प्रभुकुंप्यारी ॥ २ ॥ रमतहरिजगकरहरपाले ॥ जडमेंप्रगरीसेतुसंभाले ॥ याकेमंदिरमेंविताना ॥ मो  
 तनमालाजतविधनाना ॥ ३ ॥ मणिमयदिपसैंअतिविगते ॥ मलिकाअोरफुलहारछाजे ॥ सुगं  
 धऊंमेंमधुकरबोले ॥ गोखरहेमंदिरकेखोले ॥ ध ॥ तिनमेंनिरमलकिरणआई ॥ चंदकिमंदिरमें  
 रहीजाई ॥ पारिजातवाटिकेबाता ॥ अगरुकेधुपजतसाक्षाता ॥ ५ ॥ निकसनगोखसैंबाहिरतेऊं  
 यामंदिरमेंपलंगजेऊं ॥ इधकेंनसैंकोमलएऊं ॥ तापरबैवेप्रभुनितगेऊं ॥ ६ ॥ **सोरवा ॥** याकुंसेव  
 तदार ॥ रुक्मिणीबालविजिनसे ॥ करतपवनजतप्यार ॥ रत्नदुकरमेंग्रही ॥ ७ ॥ **चोपाई ॥** मणी  
 नेपुरबाततपदमांइ ॥ अंगुलिमेंमुद्रासहाइ ॥ कंकणजतकरविजिनधारी ॥ छाइरहीकुचकुंकुमसा  
 री ॥ ८ ॥ लिलासेप्रभुनरतनुंधारी ॥ ताकेरुपसमरुपजतप्यारी ॥ कुंकुमअंकितहारसहाइ ॥ कदि  
 मेखलाराजतताइ ॥ ९ ॥ केशकुंडलपदकगंलधारी ॥ हास्यसुधासुखवरसतप्यारी ॥ मुरतीमानश्री  
 अनसजानी ॥ बोलततामेंसारंगयानी ॥ १० ॥ राजपुत्रिइलततोइभुपा ॥ इंदुसमेश्वर्यअरुपा

चैरवा

बुधु

धनप्ररुमहीमाहेप्रतिजाकी ॥ नृदारपणं प्ररुवलप्रतिजाकी ॥ ११ ॥ प्रागेत्सकुं इच्छतां ॥ गे  
 ह्नायेवैद्यादिने ॥ मानतातवधुतवनेहा ॥ तुमकुं दिनेसवमिलितेहा ॥ १२ ॥ याकुंतजीवरेत्सकुं  
 आर्इ ॥ हमतोकलुतोरेसमनाई ॥ गतासेउरिहेहमने ॥ आइरहेसिधुमकरगे ॥ १३ ॥ बलवंतस  
 वहीदेधिहमारा ॥ नपआसनकोनहिप्रधिकारा ॥ जाकोमगतानेमेंनावे ॥ लोकमगछोरिइतउत  
 धावे ॥ १४ ॥ याकेमगचलहीजोनारी ॥ सोइसदाइरवपावेभारी ॥ हमहेनिक्किचनसबकारा ॥ निक्किच  
 नजनहमकुंप्यारा ॥ १५ ॥ याकारणधनवंतिने ॥ हमकुंकवऊनभजनहीते ॥ रुपतन्मधनं ज्ञेस्ययेते  
 हा ॥ ज्ञातिआहतीतूत्यजोतेहा ॥ जोगपविवाहप्ररुमैत्रीयाकी ॥ नांहीअधमउतमजोताकी ॥ १६ ॥  
 ॥ दोहा ॥ तोरविचारनहीहेकलु ॥ कहीसोजानतनांही ॥ गुनहीनभिश्चरवानही ॥ हमकुंवरीतूम  
 ताही ॥ १७ ॥ चोपाई ॥ प्रबतवेतूयभूपकुंजाई ॥ वरऊंरुक्मिणीकऊंमनाई ॥ यासेतमपाओगेतो  
 उ ॥ असपरलोकस्मृधिसीउ ॥ १८ ॥ वेद्यज्ञान्वजरासंधजेहा ॥ दंतवकरुक्मियोतेहा ॥ सबममदेष  
 करतहए ॥ ज्ञेस्ययंमदसेअधते ॥ १९ ॥ याकीतेतरुगर्वमिटावा ॥ हेरुक्मीलीमेंतूमकुंलावा ॥ २० ॥

देहगेहमेंहमउदासा ॥ धनदारासतकिनहीआसा ॥ दिपकगेहपकाजोतेसें ॥ क्रियाविनहमवर  
 तहीतेसे ॥ २० ॥ शुककहेयाकुंवलभजानी ॥ नितसवंधसेगर्वपेश्चानी ॥ ताकुंमेतनकहीअसबा  
 नि ॥ पुनिचुपकरहीसारंगषानी ॥ २१ ॥ त्रिलोकपतिप्रतिवलभकीबानि ॥ कवऊनरुक्मिअस  
 रूनिभयआनी ॥ कंपततनुंअतिरोवतए ॥ महाचिंतानुरपावतते ॥ २२ ॥ सोरवा ॥ कोमलय  
 दनरवलाल ॥ ऊंसेंखिखतभुमिपरअंक ॥ निचमुखकरिवेहाल ॥ सांमआंरुंसेंस्तनधात ॥ २३ ॥  
 चोपाई ॥ हरिवचकवीररुंनिडखदाई ॥ सागकीशांकाअतिगुरआई ॥ शोकसेंनाराभईबुधिया  
 कि ॥ वितनवलयकररुंसेंताकी ॥ २४ ॥ गिरेभूतलपुनिदेहगिरे ॥ सुवायुसेंकरलीउते ॥  
 अतिपरवशाभईबुद्धिनवही ॥ केशरुटगयेशिरकेतवही ॥ २५ ॥ हानुपहरिकिज्ञानतनाई ॥ प्रेम  
 बंधननूतदेखिताई ॥ प्रभुनेकिनिक्रपापरयाके ॥ उषिपलगसंगयेदिगताके ॥ २६ ॥ लिनेउगाई  
 भुजचऊंधारी ॥ मुखपरफरतकरसखकारी ॥ केशबांधिलोचनजलनेके ॥ लोवतहरिभरिभुज  
 मेतेके ॥ २७ ॥ सबनीतिज्ञानतहरिएहा ॥ सांतकरतसतिऊंकुंतेहा ॥ हासिसेंशोभितचिनजानी ॥

भा. द. उ.  
॥ २९ ॥

श्रीहृद्यबोलतयुंवानि ॥ २७ ॥ दोहा ॥ मोरेपरायणहोतुस ॥ अबपैश्यानेतोई ॥ तववचसंननके  
लिये ॥ हास्यकियुहमजोई ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ घेमक्रोधभरेमुखहमतेरा ॥ कंपनअधरकृतकचुनहे  
रा ॥ कविनवचनसंरातेनेना ॥ रोषसेवेकीअकूटिवेना ॥ २७ ॥ याविधमुखदेखनहमकीना ॥ मम  
दूरषानहीकरुंअविना ॥ पहिकुंदुरमेंलाभहेरुं ॥ नरत्रियाहोसिकरहीतेरुं ॥ २१ ॥ छककहेरुं  
तहरिनेकीना ॥ हृन्निमूलीनेतचहांसिचिना ॥ उरसेंसागभयतजीदिना ॥ हरिमुखदेखिबोलेपुचीना  
२३ ॥ प्रभुतूममोकुकिनेजेरुं ॥ ममसमनहीतुमयुहेतेरुं ॥ कहांतुमन्नत्यादिकेइरा ॥ कहांमेंत्रि  
गुणरूपजगदिना ॥ कहीगेतुमहोसबकीदेवी ॥ सकामजनरुंनेमोयसेवी ॥ २२ ॥ जोतूमकिनरु  
पडरसेंजाई ॥ सिंधुरहेसोसमकहाई ॥ ग्राह्यादिकविषयनृपतानी ॥ रुदयेमेंसोवतसखआनी ॥  
२४ ॥ बलवतहेद्वेषिजोकिना ॥ सोवातेहेससहमचिना ॥ हरिविमुखदशाईदिजेरुं ॥ तिनसेंचैर  
तिहारोतेरुं ॥ २५ ॥ कहीतूमनृपआसनतजीदिना ॥ सोतजहीतवदासप्रविना ॥ अविचेकरुया  
मेंअतिजानी ॥ तवजनतजीतवतूमतोज्ञानी ॥ २६ ॥ तिनकीमगजानिमेंनावे ॥ लोकमगजोरीके ॥ २९ ॥

अ. ६९  
॥ २९ ॥

हमजावे ॥ याविधतूमकिनेउचचेरुं ॥ सोभिहेससकरुंअवतेरुं ॥ २७ ॥ सोरना ॥ पशुसमहेनर  
जेरुं ॥ तवपदसगंधसेवककी ॥ पदविनजानहीतेरुं ॥ तवमगकहांमेंजानतही ॥ २७ ॥ चौपाई ॥  
तवपिछेवरतेजनतेरुं ॥ तिनकीकर्मअलोकिकतेरुं ॥ तोरेकर्मअलोकिकराहा ॥ यामेतोकलून  
हीसंदेहा ॥ २८ ॥ निरधनहमनिरधनजनतेता ॥ सोमोयभजेनधनवततेता ॥ युतूमकिनेसोसस  
नाई ॥ ब्रह्मादितोयदेतकरुयाई ॥ २७ ॥ ब्रह्मादिकुंवलभतेरुं ॥ तुमहोतोयपुनीवलभतेरुं ॥ धन  
रुंसेअंधानरतेता ॥ तुमकुंकालनजानेतेता ॥ २१ ॥ पुरुषार्थसबकोजेरुंरुपा ॥ परमानंदपुनितूम  
अनुपा ॥ तोरइछालियेसमतिजेरुं ॥ रासअदिकसबतजहीतेरुं ॥ तिनकुंतवजनसवधमिल  
ही ॥ त्रियसुखइछतसोवथरलही ॥ २३ ॥ कहीतूमभिक्षरथमोयगावे ॥ सोशुकुजेमेंसागिकहा  
वे ॥ तूमहोनिजमुनिकेदाता ॥ जगअंतरजामीविरायाता ॥ २४ ॥ विनविचारविनजानेमोई ॥ व  
रेयाकोउत्तरकरुंतोई ॥ तवशुकाववेगसेंजावे ॥ स्याधिअजभवंइंकीकरावे ॥ याकारनसबकी  
करिमागा ॥ वरितूमकुंमेंकृतअनुंरागा ॥ २५ ॥ कहीतूमनृपभयेसेसीधुमाई ॥ रहेअसवचतूम

जुलकहाई ॥ धनुषनादमें भूपभगाई ॥ हरतहि मोई कुंरिन पुरूआई ॥ सुंमृग कुं कुं सिंहनाई ॥ लेजा  
 वेनिज भाग जोराई ॥ ४५ ॥ कही तूम मम मग दर्शन नाई ॥ मोय भती डख पात कऊताई ॥ तीर भजन  
 करने के काजा ॥ चकवेरा जतती सवराता ॥ ४६ ॥ गय अंग पृथुययाति तेऊं ॥ भरत आदिवन मंगरेऊं  
 तव मग चलि डुरवात नऊं ॥ पद विविहारी पायेतेऊं ॥ ४७ ॥ लोहा ॥ कही तूम आह समरुप ही  
 करनो कुं मैसें ॥ तव पद सेवक नारिसो ॥ कुं वरे अोर तनी तोई ॥ ४८ ॥ चोपाई ॥ गुणनिधित व  
 पदसंग धनेहा ॥ सब जन कुं मुक्ति रूपतेहा ॥ सत पुरुषने वरणी ततेऊं ॥ लक्ष्मी कुं सेवन योग्यते  
 ऊं ॥ ४९ ॥ याविध पद गंधसंघनहारी ॥ भयक्त नर कुं न भज ही नारी ॥ असुपर लो कमें इच्छित दाना  
 जग के इश आत्मा विख्याता ॥ ५० ॥ याविध तानि भक्तमें तोई ॥ तव पद र हो मम शरण होई ॥ भक्त  
 कुं निज सम तो करता ॥ चोगसिके तूम हो हरना ॥ ५१ ॥ तूम गुना येउ गुनक्त भूपा ॥ खर चषश्चा  
 न विलाडारुपा ॥ सदानारिके किं करणऊं ॥ असीके पति हो प्रभुतेऊं ॥ तव कथा जाहिकणी में नाई  
 असुनिवसभाऊं में तोगाई ॥ ५२ ॥ तव पद गंध सेवन तेहा ॥ मूढ नारि भजे नृपति तेहा ॥ त्वचन से ॥ ३० ॥

गोमूके शबही लाये ॥ हार मांस रुधिर विष्टाये ॥ वात पितकफ कमी पातेऊं ॥ शबतूत्य कांत किभिं  
 तरतेऊं ॥ ५३ ॥ सोरवा ॥ हमहि उदासी युं किन ॥ कऊं में उन्नर कमलनेन ॥ तव चरन में प्रवीन ॥ राग  
 र हो मम मागतऊं ॥ ५४ ॥ चोपाई ॥ आत्मारत तुम सदा कहाई ॥ मोर विषे असुतित वृहगनाई ॥ जकनी  
 येर जगुन ज ब धर ही ॥ तव तूम मोरे पर हग कर ही ॥ असुति असुत प्रह एही मोर की नो ॥ जो तूम नेत व  
 दर्शन दिने ॥ ५५ ॥ कही तूम तूल्य बरो वरतेऊं ॥ सो भिसस्य मानो वचतेऊं ॥ काशिनृपकयाति न  
 माई ॥ अंचा सुं शालव कुं चाई ॥ ५६ ॥ पतिवति पुंश्चली मनतेऊं ॥ नये नये नर चाहते रू ॥ याकी  
 पोषण जो नर कर ही ॥ अष्टहोई इलोक से गिर ही ॥ ५७ ॥ सोरवा ॥ प्रभु कही रुक्ति मणी तोरे ॥ वचसं  
 न न हू महां सिकीये ॥ कुलित वच सब मोर ॥ सत्य किये तुम उतर मे ॥ ५८ ॥ चोपाई ॥ एकान्तित वम  
 प्रविषे कामा ॥ मोक्षलियुं सब हो यगी भामा ॥ पति मे प्रेम पतिवत तोउ ॥ रुक्मी लितूम मंगर ही दे  
 उ ॥ मोर विषे हेत व बु धिनेहा ॥ अोर विषे न ही जानतेहा ॥ ५९ ॥ व्रततप करिका मी भजे मोई ॥ वि  
 षय सब धिसख लिये सोई ॥ मायाने मोहित हेतेऊं ॥ मोक्षपति मोही भजे नतेऊं ॥ ६० ॥ मोक्षपती

तसंपतिपतिमोई ॥ प्रसन करी संपतचहेतोई ॥ सवसंपतपतिमोयनचहरी ॥ पंचविषयनिचुतोनि  
मेलहरी ॥ ममभतीविषयसखकुचावे ॥ सोसवही मंदभागपकहावे ॥ ६१ ॥ रुक्मीणीनिकामसेवाकी  
ना ॥ सोदेभवहरजानोप्रविना ॥ खलप्ररुउदरभरहेतेहा ॥ वंचनहारिगारिहेतेहा ॥ इतिनेकुंममसेवा  
जेऊं ॥ सदाहीडुकरकहीहेतेऊं ॥ ६३ ॥ हिनवतिगही गित्मत्स्यतोउ ॥ गीहमहमनहीदेखातेऊं ॥ नि  
ज्याहमंनपसवआये ॥ याकुंगणनामंनहीलाये ॥ केवलममगाथासंनिएऊं ॥ द्विजएकांतिकप  
ववेतेऊं ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ युधमाजितिनितभ्रातकुं ॥ किनेउविरुपतेऊं ॥ अनिरुधव्याहचोपरी  
वधकिनेजेतेऊं ॥ ६४ ॥ चोपाई ॥ दोउदेखिविअंखीसेंएहा ॥ डुरखउपतेसोसहतहितेहा ॥ ममवियोग  
भयउरमेंआनि ॥ मुखसेंकलुनबोलतवानी ॥ ६५ ॥ मोयवरनलियेद्विजपवाये ॥ आहकेदिनजवह  
मनहीआये ॥ तबयहजकसुखसवमानी ॥ देहतजनइछाउरआनी ॥ याविधुत्मनेमोयचराकी  
ना ॥ हमहरषतहेदेवप्रविना ॥ ६६ ॥ शुककहेहोसिऊंसेंस्वामी ॥ रमतरमासंगपुरनकामी ॥ मनु  
षकीरितदेखावतएऊं ॥ हेप्रापेयुरुवीत्तमतेऊं ॥ ६७ ॥ श्रीरनारिसवऊंकेगेऊं ॥ यहस्थकित्याइ

रहतहीएऊं ॥ गहीऊंकेसवधर्मदेखावे ॥ लोकगुरुयाकारनकहावे ॥ ६० ॥ दोहा ॥ इतिश्रीमनभाग  
वत ॥ द्यामस्कंधमितेऊं ॥ रुक्मिणीकिहासिकीये ॥ भूमानंदकहेऊं ॥ ६१ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वा  
मिजिअप्यभूमानंदरुतभाषायाषष्ठितमोऽध्यायः ॥ ६० ॥ दोहा ॥ हरिपुत्रपोत्रकीसेतनी ॥ अनि  
रुधविवाहमाई ॥ वलरुक्मिंकुंमारेगे ॥ एकशरऊंमेंगाइ ॥ १ ॥ चोपाई ॥ शुककहेहहमऊंकीसव  
दारा ॥ दशासुतहरित्स्यजनहीसारा ॥ मैंअतिप्यारिहरिकुंएका ॥ युनिजमनमेंमानिअनेका ॥ ३  
आत्मारामहरिहेतेऊं ॥ जानतनुहसवनारितेऊं ॥ सुदरकुमलतस्यमुखयाके ॥ कुमलपुत्रसम  
लोचनजाके ॥ बाऊंविद्यालहासिमुखमाई ॥ प्रितजतहगबोलिखखदाई ॥ ३ ॥ इतनेसेंप्रभतेमोहाई  
सवदाराहासिरसलाई ॥ हरिकोमनहरनेकुंएऊं ॥ समरथनाहीहोतहेतेऊं ॥ ४ ॥ मंदहासिजतह  
गसेंएहा ॥ निजअभिप्रायजनाइतेहा ॥ मनहरनेभूहचापचराई ॥ कामवानमारतरिगआइ ॥ ५  
सोलसहस्रदाराहीतेऊं ॥ प्रभूमनखोभनस्मथनतेऊं ॥ प्रतिहास्यअवलोकनतोउं ॥ नथोसमांगम  
प्रभुसेंमोउं ॥ ताकुयावतनारीएहा ॥ श्रीपतिनितपतिऊंसेंतेहा ॥ ६ ॥ सोरवा ॥ उठनआसनपूज

न ॥ स्नानशयनकेशसुधरही ॥ पदचांपनरुधोवन ॥ तौ चूलदासी होइहेन ॥ ७ ॥ चोपाई ॥ द्वापुत्रं  
 किमातसवएहा ॥ तामेंअष्टपटरागिनेहा ॥ जसकृतके कंठनामहीजोई ॥ शुक्रकहेराजासंनकुसोई  
 ८ ॥ चारुदेहमअरुसुदेहपतेऊं ॥ चारुदेहसुचारुपुनितेऊं ॥ चारुगुमअरुभद्रचारु ॥ चारुचंद्रअरुचारु  
 विचारुं ॥ रुक्मीणिसुतहरिसेंएहा ॥ प्रद्युमनआदिद्रासुततेहा ॥ ९ ॥ भानुसभानुअरुस्वरभातुं ॥  
 भानुमदभानुप्रभानु ॥ वृहज्जानुअतिभानुश्रीभानु ॥ प्रतिभानुसतभामसुततातुं ॥ १० ॥ सांचसुमित्र  
 औरपुरुजिता ॥ सहस्रजितकतुवितयकोता ॥ वृसमानदुविरचित्रकेत ॥ ज्ञातजितज्ञाचवतिसुतहे  
 तु ॥ ११ ॥ अश्वसेनचंद्रअरुचिरा ॥ वेगवानरुषचंद्रगुधिरा ॥ शंकुचक्रामकुंतिजेहा ॥ नागजिती  
 केसुतसवएहा ॥ १२ ॥ कविरुविरश्रुतरुषसुबाऊं ॥ एकलरुगातिभद्रकहाऊं ॥ द्वांरुपुर्णमासहे  
 जेऊं ॥ सोमककालिदिसुततेऊं ॥ १३ ॥ प्रद्योषवलसिंहगात्रवाना ॥ अयराजितरुसहअोजताना  
 महाशुक्रिषवलपुनितेहा ॥ गर्धगमाद्रिकेसुततेहा ॥ १४ ॥ रुद्रकुरुदकरुपावनजेऊं ॥ गर्धअनिल  
 अरुक्षुधितेऊं ॥ अनादवद्विचर्धनजोउ ॥ पावनमित्रविंदासुतसोउ ॥ १५ ॥ वृहतसेनसयाप्रतीन

सुरा ॥ प्रहरणससकतयकृतनृगा ॥ वामअ्यासुसभद्रपुनितेऊं ॥ अरिजितभद्राकेसुततेऊं ॥ १६  
 दोहा ॥ हरित्रियानामरोहिणी ॥ तिनकेसुतहेजोई ॥ दिप्तिमानतासुतसही ॥ यहआदिकहेतोई  
 १७ ॥ चोपाई ॥ रुक्मवतिरुक्मीकिकया ॥ प्रद्युमनऊंसेअनिरुधतंया ॥ औरहरिसुतऊंकीमा  
 ता ॥ सोलसहस्रसतविराता ॥ १८ ॥ परिक्षितकहीभोजकरगता ॥ नितसुतादितिअरिसुतकाता  
 जुधमेंविरुपकियेथेजेऊं ॥ हरिहननहितफिरतहेतेऊं ॥ १९ ॥ अरिमियाहभयेकुंस्वामि ॥ अस  
 कारनकहोअंतरजामी ॥ अमिप्रायरुक्मिकोतेऊं ॥ हमनजानतकहोगेतेऊं ॥ भुतभविष्यवर्त  
 मानजेहा ॥ दुरभितरदेखतत्तमतेहा ॥ २० ॥ शुक्रकहेखयंवरकेमांई ॥ रुक्मवतिवरप्रद्युमनाई  
 सवराजाकुंजितिएहा ॥ एकरथऊंसेदरतहीतेहा ॥ २१ ॥ किनेविरुपसोविसरेनाई ॥ भगानिप्रसन  
 लियुंदिनसुताई ॥ चारुमतिरुक्मिणिसुतातोउ ॥ इतवर्मासुतपरनेसोउ ॥ २२ ॥ रुक्मियेभग्नि  
 सुतसुतकुंदिना ॥ रोचनानामसुतसुताकिना ॥ चैनसेहेतरावनकिकाता ॥ अमधर्मआहजानि  
 किनराता ॥ २३ ॥ सोरवाः ॥ आहकरनकुंजात ॥ भोजकरपुरसावआदि ॥ हरिवलरुक्मिणिआ



त ॥ अत्रिहधकुं परनायपुनि ॥ २४ ॥ **चोपाई ॥** कालिंगप्रारिचनृपसवन्नाई ॥ रुक्मि कुंकहे जितकुं भा  
 ई ॥ पात्रागमैवलजानतनोई ॥ असनवक्रमनेकोताई ॥ २५ ॥ युकिनेरुक्मियेकुं जवही ॥ खेनलतपा  
 सावलसेतवही ॥ सहस्रएकादशपुनिसतएका ॥ धरतहीइअरखितुरमेदेका ॥ २६ ॥ तिनकुंरुक्मी  
 जितेउजवही ॥ कालिंगवलकुं हसिततवही ॥ देतदेखाईकिनवक्रहासी ॥ संनिहलायुधहोतउदा  
 सी ॥ २७ ॥ पुनिरुक्मिनेलक्षधनधारी ॥ जितेवलगयोप्रापेहारी ॥ रुक्मीकपटरखितुरमाई ॥ बोले  
 हमजितेतूमनोई ॥ २८ ॥ सुंखिंधुपुनमचंदतोई ॥ क्रोधसेलालकरिहगसोई ॥ दशाकीरिचलनेधन  
 धारे ॥ सोभिरुक्मियेनेजवहारे ॥ २९ ॥ **दोहा ॥** करिकपटरुक्मियोकहे ॥ बोलकुं नृपसबनोउ ॥ मोर  
 जितभइहेअब ॥ ससकहतहेसोउ ॥ ३० ॥ **चोपाई ॥** तबहोवननभमेयुंवानि ॥ जितेउगमधर्मजुत  
 जानि ॥ मिथ्याबोलतरुक्मिहीजानो ॥ ताहि नमानतरुक्मिजायानो ॥ ३१ ॥ पापिनृपनेपेरितएकुं  
 बलसेवोवलतहसतहीतेकुं ॥ पासामेतूमनहीपेश्चानो ॥ गोपवनमेगोचारीजानो ॥ ३२ ॥ यात्रासरसे  
 गजारमही ॥ नहीतूमकुंपरेयाग्रेगमही ॥ कठिनवचनरुक्मिनेमारा ॥ हसहीगतासबेउदारा ॥ ३३ ॥

करिक्रोधभोगलकरलीना ॥ राजसभाविचवधकरदिना ॥ पकरेकलिंगदशाउगदोरी ॥ दंतगिरतया  
 केवलजोरी ॥ हसतसभाकुंजोदेखाई ॥ क्रोधकरीगिरउरतताई ॥ ३४ ॥ तूरगयेकरपावअरुंशिग  
 भोगलमारसेंपावनपिरा ॥ भागतनृपप्रोरक्ततरुधिरा ॥ रुक्मिगिरेखिकेमृतविरा ॥ ३५ ॥ सारअ  
 सारकछुनहीकिना ॥ रुक्मिगिचलकुंस्नेहनविना ॥ याकोभंगहोहिअसकाता ॥ कछुनवोवलतही  
 महाराजो ॥ ३६ ॥ वक्रक्तअत्रिहधुरथवेगाई ॥ प्रातकुंशस्थलिभुजकरताई ॥ बलअदिक्ताद  
 वसवतेकुं ॥ हरिआश्रसेंजितकेतेकुं ॥ ३७ ॥ **दोहा ॥** इतिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमिजेकुं ॥ रु  
 क्मियाकुंवलनेहने ॥ भूमानंदकहेकुं ॥ ३८ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदछतभाषायोए  
 कषष्टितमो ॥ ध्यायः ॥ ६१ ॥ **दोहा ॥** रमतकृतासेगअनिरुध ॥ वोंधतवाणासर ॥ वासवकेअध्या  
 यमे ॥ इतनिबानतरु ॥ १ ॥ **चोपाई ॥** परिहितकहेवाणकिसता ॥ उघाचरेअनिरुधअदभूता  
 हरिजांकरकीयुधभयीउं ॥ शुक्रमोयगाथकहोसबसोउं ॥ २ ॥ राजनवलिकेसतकृततोउं ॥ तिनमें  
 जेसु बाणथेंसोउं ॥ जोबलिनेचामनकुंदिना ॥ अवनिसोबलितानोपचीना ॥ ३ ॥ तिनकोकृतवाणा

भा. द. उ.  
॥ ३४ ॥

स्फुरतेऽङ्गं ॥ शिवभक्तिकरतेथेंतेऽङ्गं ॥ माननजोग्पराणीबुधिवंता ॥ व्रतधरसतसंकल्परुसंता ॥ ४ ॥ शो  
णितपुरकोनृपथेंतेहा ॥ शिवहृषपासेदेवसचनेहा ॥ तिनकेकिंकरहोवतएहा ॥ सहस्रबाहुवजाइएङ्गं  
शिवकुं प्रसनकिनेउतेऽङ्गं ॥ ५ ॥ भक्तवसुलसवभृतकेइशा ॥ तांउवसेरिडेनगदिशा ॥ मागङ्गं वरयुकि  
नेजवही ॥ ममपुरपालक होरहोअवही ॥ ६ ॥ सांरागा ॥ शिवकुं देखिउपाश ॥ मुकरपदमेलगाइपुनी  
नमिकेसहीतङ्गलाश ॥ मदोरमतवीलतवानी ॥ ७ ॥ चोपाइ ॥ लोकगुरुईश्वरतूमस्वामी ॥ कल्पतरुतू  
ल्पतोयनमामी ॥ सहस्रबाहुदिनेतूमतेहा ॥ भाररुपभयेमोरितेहा ॥ ८ ॥ तूमविनतिनलोककेमाई ॥ ल  
रनहारमोरितूमनाई ॥ खरजभरेहेभूजहमारी ॥ लरनइच्छामेउरमेधारी ॥ ९ ॥ दिगजकुंगयोमारनज  
वही ॥ विचपर्वतकियेचुरणतवही ॥ तबदिगजउरअतिउरपाई ॥ देखतमोकुंगयिपलाई ॥ १० ॥ सं  
निबचशिवक्रोधकरकिना ॥ जवतवकेतूभगेहीना ॥ तबतवदर्पहननयुधतेऽङ्गं ॥ होयेगीममस  
मङ्गसेतेऽङ्गं ॥ ११ ॥ याविधशिववचकुमतिस्फुनि ॥ र्धर्षजतगेहजातहिपुनि ॥ निजमत्तुकरशिववच  
संभारी ॥ देखतकबुभगेध्वजहमारी ॥ १२ ॥ दोहा ॥ उषाकस्याएकइनकि ॥ स्वप्नेमंसंगकिन ॥ आ ॥ ३४ ॥

अ. ६२

गेदेखेसंनेनही ॥ अनिरुधकांतप्रविन ॥ १३ ॥ चोपाई ॥ तेहिधलदेखतनहीकुंमारी ॥ कहांकांतम  
मकहीयोकारी ॥ सबसखियनमेंउवतएङ्गं ॥ विह्वलअतिलाजन्ततेऽङ्गं ॥ १४ ॥ कुभांडबाणकोमेंत्री  
तेहा ॥ चित्रलेखातिनकतातेहा ॥ सखिनिजगुयाङ्गकुंएङ्गं ॥ पुछतकोतुकदेखकेतेऽङ्गं ॥ १५ ॥ कहांम  
नोरथदुंदतकिनकुं ॥ नहिपरणोअबजानुमेंतिनकुं ॥ उषाकहेदेख्योनरतेहा ॥ उषामकमललोचन  
हेतेहा ॥ १६ ॥ पितवसनबाहुबउधारी ॥ देखिमोहपावेसवनारी ॥ अंधरसंधाअबकांतनेपाई ॥ उर  
गयोइरवसागरमांइ ॥ इच्छाहेमिलनेकेएङ्गं ॥ हेसखिमेंदुंदतहोतेऽङ्गं ॥ १७ ॥ कहेचित्रलेखाइरतौउं  
मेरुमेंनलायकेसोउ ॥ तवमनहरत्रिलोकामाई ॥ हेसोलाउदेरुपवताइ ॥ १८ ॥ सांरागा ॥ चित्रलिखा  
कहीबात ॥ लखिलविदेखातसखिकुं ॥ तवमनहरसाक्षात ॥ अमरमेंहेकोउकहङ्गं ॥ १९ ॥ चोपाई  
सिधचारणअहिगंधर्वतेऽङ्गं ॥ दैसविद्याधरयक्षतेऽङ्गं ॥ सकलमनुषपुनिलिखिदेखापे ॥ नृदमीमेंव  
सदेवजिखाये ॥ २० ॥ रामहृदयलिखतपुनिरौउं ॥ घट्टुमनदेखलजाइसोउं ॥ अनिरुधकुं देखिसुख  
केरा ॥ एहिकांतसखिहेमेरा ॥ २१ ॥ चित्रलेखाहरिकतकतजानी ॥ नभमगसेंचलियायेतइधानी ॥ ती

नमोऽस्मिन्नेव लंगविद्याई ॥ अनिरुधकुं कुं जिने उगाई ॥ २३ ॥ योगकलाशोणितपुराणाई ॥ निजसखिकुं  
वरदे तमि लाई ॥ सो संदरे देखि मुदपाये ॥ अनिरुधसे निजगे हरमाये ॥ २३ ॥ अमूल्यवसनमालाये  
गाई ॥ आसनदियधुपगंधसुहाई ॥ पानभोजनदेवतमिगाई ॥ मधुरवचनसे सेवतनाई ॥ २४ ॥ उरसाने  
मनहरलिये जवही ॥ वरुं दिनगये नजाने तवही ॥ पुरुषदेखनपातनगे कुं ॥ गुटरहेक्या संगते कुं ॥ २५ ॥  
अनिरुधने भोगे उजवही ॥ नृतभंगभई कन्या तवही ॥ ग्रहरक्षक जो धाखें तेहा ॥ प्रतिहरवक्रतरे  
खततेहा ॥ २६ ॥ ऋधाबाणकुं देत जनाई ॥ तवकन्या कछु डुषणपाई ॥ रगभरहमनही खसे उवांसे ॥  
नही जानुं नरनाये कहांसे ॥ २७ ॥ संनिद्रुषणकन्याकोरुं ॥ बाणडुखिगयो कन्यागे कुं ॥ निजकता  
संगरमते जो उ ॥ अनिरुधकुं देखतसो उ ॥ २८ ॥ दोहा ॥ प्रति संदरकतकामको ॥ त्रुपां मवसन  
धरेपित ॥ कमलनेन भुजलंबे जो ॥ कुंडलकृतमुखस्मित ॥ २९ ॥ चोपाई ॥ तोरतहगकुं तलरदे ला  
ई ॥ रमेपासानिजकताताई ॥ स्तनकुं कुं मकतमालाजे कुं ॥ धरिरे हेरुं अनिरुधते कुं ॥ ३० ॥ काज  
लचंदमलिकाधारि ॥ देखि बाणने नीतकुमारी ॥ आयोबाण भवनके माई ॥ शस्त्रकतनूधासंगला ॥ ३५ ॥

वा. न

ई ॥ ३१ ॥ इ नकुं देख अनिरुधधाये ॥ मारनकुं भोगलउगाये ॥ सुं कालदे उधरके गारा ॥ मारनइला उरमें  
धारा ॥ ३२ ॥ अरिपकरननाये चक्रं ओरा ॥ तिनकुं मारत करी के तोरा ॥ श्रानकथकुं वराहतेसे ॥ मार  
हगये सबकुं तेसे ॥ ३३ ॥ करचरनशिरसवकालोरा ॥ निकसी भवनसे भगे चहोरा ॥ निजबलमारत  
अनिरुधताई ॥ नागपात्रात्रो बोधतधाई ॥ ३४ ॥ बलिने बलिकुं बोधतवही ॥ शोकविदकृतउषात  
वही ॥ परवशाहोई अनिरुधदारा ॥ गेतेनेन भरिके जलधारा ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ इति श्रीमतभागवत ॥ द  
शमस्वंधमिजे कुं ॥ अनिरुधकुं बोधे जो ॥ भूमानंदकरे कुं ॥ ३६ ॥ इति श्रीसहजानंदस्वामिशिष्यमु  
मानंदहृतभाषायां द्विषष्टीतमाध्यायः ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ बाणतडसंग्राममें ॥ स्तवनरुद्रचरकीन  
करे बाहुं तो बाणके ॥ त्रित्रावन्नध्याचिन ॥ चोपाई ॥ शुककही शोककरतजइजे कुं ॥ अनिरुध  
कुं नही देखिते कुं ॥ चक्रं मासगये विनिजवही ॥ संनिगाथानारदसे तवही ॥ ३ ॥ सोणितपुरबध  
निरुधतानी ॥ तडुगये कृतसारंगपानी ॥ साबसासकि प्रद्युमनेते कुं ॥ गदसारणने उपने दे कुं ॥ ३ ॥  
भद्रादिकहृषिछेतेहा ॥ बारखोणी मिलिनिकसततेहा ॥ बाणनगरंधतचक्रं ओरा ॥ तोरतवा

दिङ्गुरगोपुरा ॥ ४ ॥ तोरेऽप्रकाशितजनेजवही ॥ वारक्षोणी जूतनिकसेतवही ॥ शिवनिकसेबाणाकर  
 काजा ॥ नैदिपरबैवी महाराजा ॥ ५ ॥ गुहः अरुप्रमथगणजाई ॥ हृद्यमरामसेकरतलगाई ॥ हरिशंकरकुं  
 धभयेऊं ॥ गुहप्रद्युमनकुंसेऊं ॥ ६ ॥ कुपकरणः अरुकुभांडरी ॥ रामकुंसें नृधकरतही सोउ ॥ बाणप्रभसे  
 सांबलरेऊं ॥ बाणरुसास्यकिंसेंतेऊं ॥ ७ ॥ सोरवा ॥ मुनिविधचारणकर ॥ यक्षः प्रपसरागंधरव ॥ वेवे  
 वेमानहत्तर ॥ देखनः आये ब्रह्मादि ॥ ८ ॥ चोपाई ॥ अनुचरशंकरकुंसेंआये ॥ गुह्यकभूतरुवेतकहाये  
 डाकिनियातूधानिवैताला ॥ विनायकप्रमथमात्राला ॥ ९ ॥ पिशाचः अरुकुष्मांरातोउ ॥ ब्रह्मरक्षसशी  
 वसेनासोउ ॥ हरिसारंगकेतीक्षणातीरा ॥ लागतभागहीपायकेपीरा ॥ १० ॥ वक्रभांतकेऽप्रसूनेऊं ॥ ह  
 रिपरशरतपिनोकीतेऊं ॥ हरिसारंगमें बाणचराई ॥ पिछेहवाइदेवतताई ॥ ११ ॥ शिवने ब्रह्माऽप्रसूने  
 प्रभू ब्रह्माऽप्रसूने वरि ॥ वायुऽप्रसू शिवने लोरे ॥ पार्वतऽप्रसू प्रभूने तोरे ॥ १२ ॥ अग्निऽप्रसू शिवने मा  
 रा ॥ पार्तस्यप्रभूने शरा ॥ पाशुपतशंकरकी तोउ ॥ नारायणऽप्रसूने सोउ ॥ १३ ॥ हरिने जे भगऽप्रसू  
 जरी ॥ मोहपमाइ दिने त्रिपुरारी ॥ बाणसें ममारत हरिऊं ॥ बाणगदाऽप्रसिद्धसेतऊं ॥ १४ ॥ दोहा ॥ ३६ ॥

प्रद्युमनकिशोरओघमें ॥ गुहपाईपीडऽप्रपार ॥ मीरपरचैवपलायत ॥ तनुं गिरेरुधिरधार ॥ १५ ॥ चो  
 पाई ॥ कुपकरणकुभांडरी ॥ बलने मुशालसें हने सोउ ॥ गिरेधरापरस्वामिजवही ॥ तिनकोसें मप  
 लायेतवही ॥ १६ ॥ विरवरगयोनिजबलकुंजोई ॥ बाणाकरइरषाजूतहीई ॥ सागसास्यकिंकरणमा  
 ई ॥ हरिदिगन्नातएकरथधाई ॥ १७ ॥ धनुषपंचरातलेतचराई ॥ द्विद्विशरएकरकहीमोई ॥ क्षण  
 एकमेंसबहरिने छिना ॥ धनुषपंचरातटुककरदिना ॥ सारथिरथघोरासचमारी ॥ शंखवताचतपु  
 निपुरारी ॥ १८ ॥ याकिमातकोटरऽप्रमाई ॥ कृततिवनरक्षालियेधाई ॥ नग्नशिरकरिकेशुघारा ॥ ह  
 द्यमसनमुखऽप्रायकेगारा ॥ १९ ॥ नग्ननारिकुंजोवतनाई ॥ प्रभुपिछेफिरवाहेताई ॥ धनुषरथवीन  
 बाणाकरा ॥ येवगयेदौरिनिजपुरा ॥ २० ॥ सोरवा ॥ भूतगयेसबभाग ॥ त्रिपदत्रिशिरज्वरऽप्रमाई ॥ द  
 शदिज्ञाजारनलाग ॥ हृद्यमसनमुखधाचतसो ॥ २१ ॥ चोपाई ॥ ज्वरकुं देखहरिततकाला ॥ नितज्व  
 ररचेऽप्रतिविकाला ॥ हरिहरकेज्वरकरतलगाई ॥ हरिज्वरनेसोदिनहवाइ ॥ २२ ॥ शिवज्वरऽप्रभयथा  
 ननपाई ॥ स्तवनकरेप्रभुकुं विगऽप्रमाई ॥ ज्वरकहेऽप्रनंतशक्तिहारी ॥ ब्रह्मादिकेद्विज्ञाकरवकारी ॥ २३ ॥

सवजनके तूम अंतरजाती ॥ सुधचैतनतौयनमोनमामी ॥ जगकरहरपालक तूमनेऊं ॥ ब्रह्मनिगम  
 कही ब्रह्मतेऊं ॥ ३४ ॥ कालकर्मस्वभावकृततीवा ॥ पुंचभूतपंचमात्रादेवा ॥ एकादशईंद्रिअरुप्राणा  
 क्षेत्रअरुअहंकारकहाणा ॥ ३५ ॥ सबसमूह मिलकेयादेहा ॥ जिवअंशुररुपमायातेहा ॥ तवमुर  
 तिमंमायानाही ॥ आयाशरणेषुभूममपाही ॥ ३६ ॥ लिलासंमलादिकतेहा ॥ धारिकेप्रभुअवतार  
 एहा ॥ पालतहोदेवनकुंतेऊं ॥ वरणाश्रमकेधर्महेतेऊं ॥ साधुकुंलेवनउधारी ॥ भूभाररुपदेसकुंमा  
 गी ॥ ३७ ॥ होहा ॥ तुमसरनेअतिउंउतो ॥ ज्वरजारतहोमोई ॥ तांजुनइरुवपावहो ॥ जवलगतीर  
 नहोई ॥ ३८ ॥ चोपाई ॥ प्रभुकहेप्रसनभयोत्रिजिग ॥ ममत्वरसेंतवमितरुपीग ॥ तवममसंवादन  
 संभारे ॥ तिनकुंभयनहीकरनितिहारे ॥ ३९ ॥ हरिआगपासंनिनाइशिरएऊं ॥ शंकरकोज्वरगयेउगे  
 ऊं ॥ पुनिवाणासररथपरशारी ॥ लरनहरिसंगनिकसेदारी ॥ ४० ॥ सहस्रभुजमेआयुधधारी ॥ श  
 रतहरिपरबहुंप्रकारी ॥ फिरफिरशरतसरसोतबही ॥ क्षुरधागतस्यचक्रतबही ॥ ४१ ॥ गहीहरिभू  
 जछेदतताई ॥ सुदक्षऊंकीशलिमाई ॥ बाणभुजाकरिदेविधाये ॥ शंकरहरिऊंकेदिगआये ॥ नि ॥ ३७ ॥

जभरुकरेक्षाताई ॥ सवनकरतप्रभुकुंशिरनाई ॥ ४२ ॥ तूमकुंनंहितानिअसलरही ॥ निगममेगु  
 रब्रह्मनजरही ॥ जोतिऊंकेपरकाशकताई ॥ यतारुपजोतसूधमनजोई ॥ ४३ ॥ विगटरुपेकऊंतोयुची  
 जो ॥ नभनाप्रमुखअग्निकिनो ॥ स्वर्गशिरजलवीर्यजाके ॥ पगभूमिदिशकानहेयाके ॥ ४४ ॥ सूर्यलो  
 चनचंदमनतेऊं ॥ शिवयाकोअहंकारकहेऊं ॥ उदरसागरबाऊंकरेशा ॥ वनतनरोमरुघनशिरके  
 शा ॥ ४५ ॥ प्रजापतिशिष्टमुहेयाकी ॥ ब्रह्माकुं कहेरुधिताकी ॥ धर्महेरुदयजाकोएऊं ॥ लोकसेकसी  
 तपुरुषतेऊं ॥ ४६ ॥ शारवा ॥ हेअरवररुपएऊं ॥ अवतारलोकसृधिलिये ॥ धर्मरक्षाणाहीतेऊं ॥ हमा  
 रअनुग्रहकरने ॥ ४७ ॥ चोपाई ॥ हमकुं तूमपालतहोतबही ॥ सातलोकहमपावेतबही ॥ स्वजातेवी  
 जातिरहिताका ॥ आद्यपुरुषश्रुधकृतविवेका ॥ ४८ ॥ निजज्ञानप्रकाशकरुपा ॥ सबकरनारुन्या  
 रेअनुपा ॥ सबविषयप्रकाशनकाजा ॥ निजमायासेंतनातरजा ॥ ४९ ॥ निजबदरानेछायेतोउ ॥  
 रविबदरअप्राररुपकुंसीउ ॥ परकाशतहेनेसेएऊं ॥ सुंगुणछायेतूममितेऊं ॥ ५० ॥ गुणसत्वादिक  
 अरुसबतीवा ॥ परकाशतहोतूमजनुदिवा ॥ कृतआदिमहीशरुहेतेहा ॥ इखसागरमेंडुंबहीते

हा ॥ देवस्थानावरयोनिनेती ॥ अति संकरमें भोगेतेती ॥ ४१ ॥ हे प्रभु तू मने नरतनुदिना ॥ तव पदन ही  
 सेवत मति हिना ॥ शोक करन जो गनरा ॥ निज निव कुं कुं वग ही ते ॥ ४२ ॥ तो यत जी सुत विषय कुं चा  
 वे ॥ अमृत छोरि विष कुं पावे ॥ मे अरु अरु मोर जो देवा ॥ शुध मन कृत मुनि करे तव सेवा ॥ ४३ ॥ दो  
 हा ॥ जग कर हरपालक तूम ॥ मम करुद दृष्ट देव ॥ तो रे शारणे प्राय ह म ॥ मोक्ष लिये त त रवे व ॥ ४४ ॥  
 चो पाई ॥ प्रभु मम भक्त हे बाणाकरा ॥ या कुं प्रभय ह म दिने पुगा ॥ या कुं प्रसन तु हो हरि ते मे ॥ प्रकृद  
 पर भये थे ते मे ॥ ४५ ॥ प्रभु क हे शिव तूम क ह ही जो उ ॥ तव प्रिय ह म करे गो सो उ ॥ बाण ह न नचा य क ह  
 म नाई ॥ मोर भक्त व लि पूत्र क हाई ॥ ४६ ॥ वर प्रकृद कुं दिने ए हा ॥ तो र व श न ही मोर ते हा ॥ या को ग र्व ही  
 मे ट न का ना ॥ सब हरि करे उ बाऊ समा जा ॥ ४७ ॥ चक्रु भुज या के हे प्रव तो उ ॥ प्रज ग अ म र र ह ही सो  
 उ ॥ तव पार पद मे मु खि ए ॥ निर भय र ह ही अ कर ते ॥ ४८ ॥ बाणा कर हरि से व र पाई ॥ चरन कम ल  
 कुं मे शिर नाई ॥ अनी रु ध उ धार थ वे चाई ॥ देत प नाई म हा मू द पाई ॥ ४९ ॥ क्षीणि से न से घे रे ए ॥ व  
 स न भूष न श रा ज त ते ॥ अनि रु ध कुं करि प्रा गे प्रा ये ॥ शिव जी कुं अति मो द य मा ये ॥ ५० ॥ ध्व ज तो

रण बंधे हेता मे ॥ जल छिर के मग ची क ही या मे ॥ या विध सं गारि त पु रि मां ॥ पै र त ड ड भि शं र व व ताई  
 करुद पुर वा सि स व ते ॥ प्राई स न मु र व स त का र कि ये ॥ ५१ ॥ दो हा ॥ ह म कि ति न अ रु शि व  
 से ॥ जू ध भ यो हे तो ॥ प्रा त मे उ व से भा र ही ॥ सो हा र त क चू नो ॥ ५२ ॥ इ ति श्री म त भा ग व त ॥ द श म स्क  
 थ मि ते ॥ स्तु ति की ने त् व र जे ॥ भू मा न द क हे ॥ ५३ ॥ इ ति श्री स ह ज्ञान द स्वामी शि ष्य भू मा न द  
 ह त भा षा या त्रि ष ष्ठी त म ॥ ध्या य ॥ ६३ ॥ दो हा ॥ नृ ग छो रि हरि पा प से ॥ द्वि ज ध न ह न मी पा प  
 म त नृ प कुं से क ह त प्र भु ॥ चौ स र अ ध्या मा प ॥ १ ॥ चो पाई ॥ शु क क ही ए क स मे व न माई ॥ ज ड कु मा  
 र ग ये क्रि डा ता ॥ सां व प्र द्यु म न ग दा दि ते ॥ बं ड वे र करि क्रि डा ते ॥ २ ॥ त्र स कुं ये न ल रुं द त नाई  
 दे व त नि व न ल वि न कु प मो ॥ ह क ला वा गि रि स म ल खि चि श मि ता ॥ ति न कुं नि का स त ह पा स ही  
 ता ॥ ३ ॥ च र्म कू च के पा श से ए ॥ बां धि ता न त बाल क ते ॥ नि का स न स म र थ न ही ज व ही ॥ पो का र  
 त ह ह म दि ग त व ही ॥ ४ ॥ क म ल ने न ने दे वे प्राई ॥ वा म कर कुं से नि का मि ताई ॥ प्र भु क र स प र स पा  
 इ ए हा ॥ त म हे म स म भ यो त नी दे हा ॥ ५ ॥ अ लं का र सृ ज न त दे व ता नी ॥ ता से बाल त सा र ग पा नी

कुनचरभागिकहीतूमोई ॥ देवमें उन्नमजानोतोई ॥ ६ ॥ सोरग ॥ कुनकर्महकलाश ॥ भयेत्समप्रस  
हारदतो ॥ ज्ञाननकिमोयः प्राश ॥ कहनयोग्यसोकहं मम ॥ ७ ॥ चोपाई ॥ शुक्कहेप्रभुनेपुछेएऊं  
किरिपावधरिवीलततेऊं ॥ सुतइश्वाकुंकोनृगनामा ॥ दानिगिनतममसंनेऊं रागा ॥ ८ ॥ बुधिता  
नत्सहीसवतानो ॥ तवः प्राग्पासेकऊं पैश्चानो ॥ जितनेरजकणः प्ररुनभतारा ॥ तितनिगौदिनने  
तिघनधारा ॥ ९ ॥ ज्वानइफनी जूतशिलरूपा ॥ कपीजाः प्ररुहेमशृंगिः प्रतुं पा ॥ रवररुपाकीसा  
यसेलाई ॥ वसनभूयनवल्लमानसहाई ॥ १० ॥ सुतन्नदेभविनः प्रा चारा ॥ वेदधर्ममें प्रतिउदारा ॥  
तपऊंसेविरयानसकवता ॥ भनेभनावैरहेशुधसेता ॥ ११ ॥ असेदितऊं कुंसेगारी ॥ दिनेगोभूमीकेच  
नभारी ॥ गेहगेहगतहयकसाकतदासी ॥ हपुतिलससापटरलरासि ॥ रथदिनेकियेजज्ञः अनेका  
वादिपुहमकिनतूतरेका ॥ १२ ॥ प्रतिगृहनिचनद्विजकिनेहा ॥ गौममगोमेमिलगइतेहा ॥ सोह  
मनेः प्रारद्विजहीदिना ॥ सोगोलेचलेगेहप्रविना ॥ १३ ॥ देखगोस्वामिकहेः प्रसमोरी ॥ सोकहेमम  
गोनृगदिनेदोरी ॥ अरतविप्रदोममदिगः प्राइ ॥ दाताहरताकहीममताइ ॥ १४ ॥ संनिगाथमेंव्याकु

लहोई ॥ किनेउप्रार्थनाप्रतिदोई ॥ लक्षगायदेवेहमताई ॥ असगोमोकुंदेऊं भाई ॥ १५ ॥ दोहा ॥ क  
रऊं हपाभोयतानऊं ॥ अज्ञानिः प्ररुदास ॥ नरकपरतमोयतारऊं ॥ अत्ररहोयऊं लास ॥ १६ ॥  
चोपाई ॥ गोस्वामिकहेमेरेताई ॥ नवलक्षगोमेइछेनाई ॥ श्रीरकहेनृपगोविनमोरी ॥ लक्षः प्रपु  
तकतइछेनतोरी ॥ १७ ॥ द्विजगृयेपिछेतमइतः प्राइ ॥ मोयपकरगयेतमपुरमोई ॥ यमकहेयेले  
असभतोउ ॥ भोगेगेनृपसभहेसोउ ॥ १८ ॥ दानधर्मतवलोकाकीः प्रता ॥ भेनहीपावेगेनुधिवंता  
यमराजायुं किनेजबही ॥ कहीमेंः प्रसभभोगेतबही ॥ १९ ॥ यमनेकिनेगिरिगिरमोइ ॥ तवभे  
हेहकलाशहोई ॥ ब्रह्माणपरुउदारतवदासा ॥ स्मृतिनांही भयेः प्रवत्तुनाशा ॥ २० ॥ ममलोचन  
आगुरखउतेउं ॥ नरमोरेः प्राश्चर्यमोउं ॥ योगीउपनिषदसेतेहा ॥ हदामेंचितनरुपएहा ॥ मोक्ष  
पाततोदेरवतसोई ॥ हकलाशः अंधकुंमिलेमोई ॥ २१ ॥ सोरग ॥ पुरुषोत्तमऋषीकेइ ॥ जगत  
नाथनारायणहो ॥ प्रव्ययः प्रश्रुतकरेइ ॥ मोयः प्रतुंयहकरऊं अंब ॥ २२ ॥ चोपाई ॥ असप  
रलोकमीचितममतेउं ॥ तवपदचीतनकरऊंसोउं ॥ सबकेकारणनिरविकारी ॥ जिनकिशक्ती

अनंतसंपापी ॥ २३ ॥ इष्टमवाकृदेवअंतरजापि ॥ युक्तादिक फलदेननमापि ॥ पुनिप्रकंमादेउवतकी  
 ना ॥ तबहृष्टमनेआग्पादिना ॥ २४ ॥ सबकुंदैवतविमानताई ॥ वैवगयेदेवलोकांमां ॥ २५ ॥ सबनृपकुं  
 मिरवामनकाता ॥ जतकुंसें वीजनमहागता ॥ योगेब्रह्मधनपायेजोउं ॥ अग्निनृपनरकुंभिसोउ ॥  
 तेजस्वीकुं सोनहीतरही ॥ ओरनृपाई नरके परही ॥ २५ ॥ हलाहलविषनाही कहीवे ॥ जोपीछेउतरे  
 मेंआवे ॥ ब्राह्मणको धनविषकहाई ॥ जोउतरनकी उपायनां ॥ २६ ॥ दोहा ॥ विषपावेजोसोमरे  
 जलअग्निबुद्धबाष ॥ द्विजधनरूपी तोपावक ॥ कुलमूलजतजलांय ॥ २७ ॥ चौपाई ॥ अज्ञानपायो  
 ब्रह्मधनजोउ ॥ सुतपोवनितकुं हनेसोउ ॥ बलकुंसेपायेधनजेऊं ॥ दगापरपुरवकेहनहितेऊं ॥ २८  
 ब्रह्मधनइछतहेनृपहोई ॥ तजोगनगिरेनरकमेंसोउ ॥ अज्ञानिनरकावेएहा ॥ निजनाज्ञानहीदे  
 रवनतेहा ॥ २९ ॥ पुजावतनादिद्विजजोउं ॥ वृत्तिजावेतबरोवतसोउ ॥ आश्रमैरनभिजेतेता ॥ कुं  
 भियाकभोगेवर्षतेता ॥ नृपअरुनृपकेचाकरजेऊं ॥ द्विजधनहरिदुखपावेतेऊं ॥ ३० ॥ निजपरदिने  
 द्विजवृत्तिजेहा ॥ याकुं पीछेहरही तेहा ॥ सामनहजारवर्ष खुंतेऊं ॥ विष्टामेहमिहोरहेएऊं ॥ ३१ ॥ अ ॥ ४७ ॥

खणको धनमोयनहोऊं ॥ याकुं इछततो नृपसोऊं ॥ अल्पआयुषराजसोहारी ॥ होवतअहिजन  
 कुं भयकारि ॥ ३३ ॥ द्विजमारतअरुदेवतगारि ॥ अपराधअपनोकरहीभारी ॥ तोभिया कीदोह  
 नकरना ॥ ३४ ॥ सममज्जनहोसोपावमेंपरना ॥ ३५ ॥ मेद्विजकुंनमतेहोतेसे ॥ तुमसबनृपतननमकुंतेसे  
 असममवचनहीमानेजोउं ॥ मोसेंदरभोगेसोउ ॥ ३६ ॥ हरिकेलिजोहजधनजेऊं ॥ हरताकुं नृ  
 कडारेतेऊं ॥ नहीजानिद्विजगोलिनतेहा ॥ गिरदिनेनगराजातेहा ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ प्रभुअसगाथ  
 संनायके ॥ हारामतिजनताई ॥ सकललोकपावनप्रभु ॥ गयेनिजमंदिरमां ॥ ३८ ॥ इतीश्रीमत्भा  
 गवत ॥ दगामस्कंधमिजेऊं ॥ नृगनृपकुंछोरायेहि ॥ भूमानंदकहेऊं ॥ ३९ ॥ इतिश्रीसहजानंदखा  
 मिशिष्यभूमानंदहृत्तभाषायाचतुषष्टीतमोऽध्यायः ॥ ६४ ॥ दोहा ॥ बलगोकुलमेंआयके ॥ र  
 मतगोपितनसाथ ॥ कांदिदिनानतभये ॥ पांषउदललेहाथ ॥ १ ॥ चौपाई ॥ शुककहीरामवेव  
 रथमां ॥ रूहृदमिलनेगोकुलताई ॥ गोपगोपीमिदोबलकुंथाई ॥ बलवंदनमावापहिजाई ॥ २ ॥  
 जगऊंकेसोउइशुकहाही ॥ वरुतकालतमदमकुंपाही ॥ युंकहीबलकुं गोदवेवाई ॥ सिंचतेने



नचारिन्दरलाई ॥ ३ ॥ चंद्रगोपकुं वंदनजाई ॥ छोरगोपवंदनदिगन्नाई ॥ त्स्मवयवंतसखाही जोउ ॥  
हसिमिलतबजताकुं सोउ ॥ ४ ॥ श्रांतहोइ बलवैवेजबही ॥ नइमेंकुं शालपुछततबही ॥ पुनिबल  
नेपुछेखेमहाहा ॥ हरीपावनतजेविषयतेहा ॥ ५ ॥ बलकुं कहकुं शालहेएऊं ॥ वंधुहमारेजादवनेऊं  
सूतदारारूततूमताभाई ॥ हमकुं संभारतहोनांइ ॥ ६ ॥ सोखा ॥ कंसपापिहनिजोउ ॥ सगाछोरयेस  
भभई ॥ रिपूमारदिनसोउ ॥ सिधुडरा किनसोइ सभ ॥ ७ ॥ चोपाइ ॥ बलदरशनसेंआदरपाई ॥ ह  
सतगापियुपुछतन्नाई ॥ पुरत्रियाकुं वलभतेऊं ॥ सुखियाहेश्री हृदमतेऊं ॥ मातपितानिजबंधण  
हा ॥ कबुयाकुं संभारतेहा ॥ ८ ॥ मातपितासूतभग्निभाई ॥ पतिस्वजनडसमजहिताई ॥ जिनकेअ  
र्थेतजेसबएऊं ॥ कबुहमकुं प्रभुसमरततेऊं ॥ ९ ॥ तोरिस्फुदततिगयततकार ॥ इनकोवचनन  
मानंऊं दारा ॥ नहीवशमनअरुहृतघिणऊं ॥ याकोवचपुरवनितातेऊं ॥ १० ॥ होयसयानिमानत  
केसे ॥ श्रीरगोपी बोलतपुनिएसे ॥ चित्रचचहासकृतदहगमारी ॥ कामातुरवचमानतनारि ॥ ११ ॥  
इजिकहेछोरयाकिगाथा ॥ श्रीसकथाकऊंसखिसाया ॥ आपविनाइनकुंचलेतबही ॥ याविन

अपनेचलेगेंनवही ॥ १२ ॥ होहा ॥ हरिकोहसितबोलितजो ॥ गतिअरुविलोकीत ॥ प्रेमजुतमि  
लितसमरके ॥ रोवतगोपी जूतहित ॥ १३ ॥ चोपाइ ॥ बऊंन्यायज्ञानतबलतेऊं ॥ मनहरहरिसंदेशते  
ऊं ॥ कहीगोपिकुं श्रांतपमाइ ॥ चेत्रवैत्रारवरहनहीताई ॥ १४ ॥ रतियामेंमतेबलजोउ ॥ गोपिकुं प्रित  
बरावतसोउ ॥ चंदकिरणसेउज्वलएऊं ॥ कुमुदवायुंसेसेविततेऊं ॥ यावनमेंगोपिजुतताई ॥ रमन  
हिवलजतमुनांतरताई ॥ १५ ॥ वरुणाचारुणीघेरेएऊं ॥ इमकोतरसेगिरततेऊं ॥ निजगंधसेवनरहे  
उफोरि ॥ सुधिअनिलआयेबलदोरी ॥ १६ ॥ पानकरिबलविचरेउतबही ॥ गोपिउं गातचरित्रतबही  
मतबिहललोचनहलधारी ॥ वैतंतिएककुं उलहारी ॥ १७ ॥ मुखंपंकजस्वेदनबआये ॥ तलकीश  
करनेबोलाये ॥ यमुनाआयेनहीमतमानी ॥ करिकोधहलऊंसेतानि ॥ १८ ॥ हेपापित्तमनायेउजेहा  
मोरअप्रवज्ञाकिनेउतेहा ॥ हलअप्रयेसतटुकतेरा ॥ करशरेगेंहमअसफेरा ॥ १९ ॥ याविधकिनेउ  
तिरस्कारा ॥ भयजुतकंपततमुनांरागा ॥ चरनकमलऊंमेंसीरनाई ॥ बोलतवचतइनेदनताई ॥ २० ॥  
रामतिहारिआक्रमतेहा ॥ महाभुजहमनतानेतेहा ॥ शेषरुपकरकेतमएऊं ॥ सबतगधाररहेहो

एकं ॥२१॥ महिमाते गीतानतनां ही ॥ आर्द्रशरणागतवमो कुं पाही ॥ याविधवलकुं जाचेतवही ॥ शोरदिये  
 जमूनाकुंतवही ॥ २२ ॥ जलक्रीडा ज्वति जूतकिना ॥ हाथविकृतसुंगजनविना ॥ बलजलवाहिरनिक  
 सेताइ ॥ शांमवसनदेउलक्ष्मीलाइ ॥ २३ ॥ देवतभूषनतनपुनिमाला ॥ अमलपंकजकुं कि विज्ञाला ॥  
 सांमवसनकंचनस्रजतौं ॥ धरकेतनसोहतबलसां ॥ अंबलुंजमूनां वंकि एऊं ॥ बलपारुक्रमदेवावत  
 तैऊं ॥ २४ ॥ होहा ॥ व्रजविनता विलाससै ॥ बलकोचितहरलिन ॥ रमतही सबनिसागये ॥ एकसुंजा  
 नेषविना ॥ २५ ॥ इतिश्रीमत्भागवत ॥ द्वांमस्कंधमितेऊं ॥ बलनेजमुनांतानेहि ॥ भूमानंदकहेऊं ॥ ३६  
 इतिश्रीसहजानंदस्वामिद्विष्यभूमानंदहृतभाषायोपंचषष्ठितमोऽध्यायः ॥ ६५ ॥ होहा ॥ पौदुक  
 काशिगजकुं ॥ हनेउकाशिहीजाइ ॥ सुदक्षिणकोवधपुनी ॥ छासगुंमधागाइ ॥ १ ॥ चौपाइ ॥ शुक  
 कहीशमगयेव्रजतवही ॥ कुरुषदेशकोशजातवही ॥ वासुदेवहमहेयुजानी ॥ इतहृष्टमदिगपेरतमा  
 नि ॥ २ ॥ अजकहेवासुदेवतोइ ॥ कदहीतोऽमृतोनिहेसोइ ॥ याकेवचतूमनेसततानि ॥ अस्युतहोमे  
 वैवेमावि ॥ ३ ॥ बालकनेक्रिशमेतेऊं ॥ कल्पितहेनपतोकुंतेऊं ॥ युंकरिमेदनिजडनपगये ॥ सोद्वारका ॥ ४३ ॥

मंचुलिः प्राये ॥ ४ ॥ वैवेहृष्टमभाकेमांई ॥ राजसेदेशोकहहीतांई ॥ वासुदेवपुगटमेंहोई ॥ सबजनसभ  
 लियेएकसोइ ॥ शोरवासुदेवनहिहेकोई ॥ सजमिथ्यानामकऊंतोई ॥ शूरवादि कताचिदुहृष्टमाग ॥ वि  
 नसमदेहृष्टतूमधाग ॥ ६ ॥ सोरग ॥ सजीचिदुशरामोर ॥ पकरकऊंमहृष्टतोई ॥ नहीतोकरयुध  
 जोर ॥ होयतवताममसंगे ॥ ७ ॥ चौपाइ ॥ शुककहीकुछितपौदुककेग ॥ वचसनेतुलबुधिकेदेग ॥ उ  
 गुसेनः प्रादिनइनेहा ॥ हसतहिउंचेस्वरसेतेहा ॥ ८ ॥ हसिनिचतोसवपायेतवही ॥ हृष्टमइतसेबोले  
 उतवही ॥ हेमूदतोरवित्रोसजुतेऊं ॥ कचिमत्सधरिहेहीतेऊं ॥ जासेंपोरसकरतहोतेहा ॥ चकाली  
 कः प्रायुधसबाहा ॥ ९ ॥ कहीतुसवारगोमोरेः प्राउ ॥ याकोउन्नरतोहीफनाउं ॥ उधागेमुरवकरिगामाई  
 सुवहीकाकवकसेविताइ ॥ श्यानऊंकोशरगोहेतोई ॥ हनितोकुंकरायुगोसोउ ॥ १० ॥ याविधहरिवचउ  
 तनेजाई ॥ पौदुकदिगजाइ विनसुनई ॥ पुनिहरिस्थजतकाशिगयेउं ॥ पौदुकद्विज्ञोणिलेंतेउ ॥ ११ ॥ नि  
 कसेउकाशिऊंसेतवही ॥ तिनश्तोलीकाशि नपतवही ॥ यासेनामैपौदुकजोउ ॥ शंखचक्रसारंगधरसो  
 उ ॥ १२ ॥ गदापद्मश्रीवलचिनधारी ॥ वनमालाकौसुभकवभारी ॥ पितहोर्गगलपटधरजोउं ॥ किनेगरु

उध्वतामेंसोउ ॥ १३ ॥ **रोहा** ॥ अमूममौलिआभरणही ॥ कुंडलमकरकार ॥ हविमवेशहरिकोधर  
 जनुनटवोनिरधार ॥ १४ ॥ **चोपाई** ॥ आत्मसमयाकोवेशतोइ ॥ हसतहरिअतिशेखुसिहोइ ॥ पुनिपौ  
 इकआविकअरितेइ ॥ शरतबाणहरिपरतेइ ॥ गदाशांगपरिघुखनेहा ॥ अशिप्रासतोमरपदि  
 शेहा ॥ १५ ॥ पौटककाशिराजकोतेइ ॥ सेनवानिरथगतजततेइ ॥ ताकुंहुधमहनतशरदारी ॥ गदा  
 रुचकअसिकरधारी ॥ प्रलयकालकोअग्निनेमें ॥ पिरनहेप्रताकुंतेसैं ॥ १६ ॥ रथवाजीगजपालाते  
 इ ॥ हनेचक्रसेवरउंतेइ ॥ गिरेरणमेंसोहनहीतेमें ॥ रुद्रकौकीरुनस्थलनेमें ॥ १७ ॥ हरिकहीहेपौ  
 त्रकतमनेहा ॥ इतवाचसैंकहेशरतेहा ॥ सागतहोअवतवतनुमाही ॥ जोमप्रनामहोसोइतजाही  
 १८ ॥ तूममेंतूधनइछुजबही ॥ तवशरणआवतहोतबही ॥ याविधवचपौटककुंमारा ॥ निजसरमें  
 रथविनकरशरा ॥ १९ ॥ शिरछेदनचक्रकरितेसैं ॥ इइवजसेगिरिहितेसैं ॥ **सोरवा** ॥ काशिनृपकोपु  
 निशिर ॥ सरसैंकारिकाशिइमें ॥ तेसैंकमलसमीर ॥ तेसैंउशयकेपटकी ॥ २० ॥ **चोपाई** ॥ पौटकका  
 शिरानकुमारी ॥ शरमतिआवतगिरधारी ॥ गातकथाजोगेश्वरजाकी ॥ निमल्लविधारिपौटकुंताकी

तासैंबंधनमेदिकेइ ॥ सारुष्यमुक्त्तिपावततेइ ॥ २१ ॥ शरिपरकुंडलकनजोउं ॥ परेशिरदेखतजन  
 सोउ ॥ किनकीमुखशिरस्वरसमएइ ॥ संश्रायवानभयेजनतेइ ॥ २२ ॥ काशिराजाकोशिरानानी ॥ स  
 तबंधुपुरकेजनअरुनी ॥ हाहाकरकरगेवतएहा ॥ नाथनाथकोउकरहीतेहा ॥ २३ ॥ निनकीस  
 तसदक्षिणाजोउं ॥ क्रियासबकरकेपुनिसोउ ॥ कहेममतातमारहीमारी ॥ छुटेरणहमयुउरधारी  
 २४ ॥ गुरुकृतजायकेशिवकुंएइ ॥ समाधिइमेंअचरततेइ ॥ प्रसनहीइशिवनेवरदिना ॥ तबमा  
 गतशिवसैंमतिहिना ॥ २५ ॥ मोरतातकुंमारनहाण ॥ ताकीवधवरमागुप्यारा ॥ शिवकहीब्राह्मण  
 कृततूमजाई ॥ मारनइकीविधितोलाइ ॥ दक्षिणाअग्निनामतेइ ॥ कृत्विजततूमयततेइ ॥  
 २६ ॥ सोअग्निप्रमथवृत्तहोई ॥ संकल्पतवसाधेंगेसोई ॥ अन्नत्याणमेंजोरेतबही ॥ सिधहोवेगे  
 संकल्पतबही ॥ २७ ॥ **सोरवा** ॥ युंआग्यादियेशिवने ॥ तेसैंकरतहीतेइ ॥ हृधलियेअभिचार  
 करी ॥ नियमकृतहोइएइ ॥ २८ ॥ **चोपाई** ॥ कुंडसैंअग्निउगततेइ ॥ अतिभयंकरमुरनिमतते  
 इ ॥ शविमुच्छशिरकेशहिजोउं ॥ तमत्रांबावरणासोउ ॥ २९ ॥ अंगारातूप्यलोचनयाके ॥ बरिडाहि

मुखमेंहेताके ॥ जिभङ्गमेंचाटनहेगाजा ॥ त्रिच्छलधुनतनग्नविकाला ॥ ३० ॥ तालतुस्यलेवेपगदोउ  
 अश्वनिकुंकंपावतसोउ ॥ वृत्तभूतनसेदशोदिशतोरा ॥ द्वारवनिआवतततकारा ॥ ३१ ॥ ताकुंआवतदे  
 खितेहा ॥ दुरेउद्वारवतीजनतेहा ॥ वनदवदेखहरिणसुधाइ ॥ रमतसभामिअक्षहरिताइ ॥ ३२ ॥ आ  
 हिवाहिपोकारितेइ ॥ पुरज्जारतहेअग्निाइ ॥ संनिकेवाभयज्जतजनतोइ ॥ रखेगेरूमबोलेउसोइ  
 ३३ ॥ सबअंतरबाहिरकीतेइ ॥ जानतजोपुरुषोत्रमतेइ ॥ शिवकीहस्यातानिकेतेहा ॥ याकीनाश  
 करनकुंएहा ॥ ३४ ॥ सुदरवानकुंआप्यादिता ॥ कीटिसूर्यतुस्यसोकिता ॥ जमिअसमानदशोदिशाए  
 इ ॥ प्रकाशितेवतसबकुंतेइ ॥ ३५ ॥ सोखा ॥ हसानलकुंजोउ ॥ पिउतसुदशानअतिशे ॥ हतहसा  
 नलसोउ ॥ पिछेफरिकाशिमेंगये ॥ ३६ ॥ चोपाई ॥ कृत्तितरुतसुदक्षिणतेइ ॥ निजहूनअनलमें  
 जलहीतेइ ॥ पुनिहसानलकाशिमांइ ॥ गयेपीछेसुदशानआइ ॥ ३७ ॥ सुदसभास्थलमंचज्जततेइ  
 पुरद्वारदुरगअनगोइ ॥ हस्तिघोशारथकेगेहा ॥ धनकेगेहअकाशितुंतेहा ॥ ३८ ॥ याविधसबका  
 शिकुंतारी ॥ सुदरवानहरिदिगआयवारी ॥ श्रीहृदमकोप्राक्रमएइ ॥ सुनिकहीपापसेचुरततेइ ॥ ३९ ॥ ॥४४॥

होहा ॥ इतिश्रीमत्तभागवत ॥ दशमस्कंधमितेइ ॥ पौतुकआदिकुंहने ॥ भूमानंदकहेइ ॥ ४० ॥  
 इतिश्रीसुहृत्तानंदस्वामिशिष्यभूमानंदरुतभाषायाषट्षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६६ ॥ होहा ॥ राम  
 रमतऊवतीसंगे ॥ रेवताचलकिमांइ ॥ मरिद्धिविदवानरो ॥ घटसठअध्यामांइ ॥ १ ॥ चोपाई ॥ परी  
 क्षितशुककेकहीमांइ ॥ पुनिकहरामचरितजोहोइ ॥ शुककहेनरकसखाद्विविदा ॥ सुग्रीवसचि  
 वमैदसखभिरा ॥ २ ॥ नरकासुरकीलेवतवैरा ॥ देशानाशकरनधरिहैरा ॥ पुरग्रामरुदेराहेजोउ  
 अग्निछोरकीजारततेइ ॥ ३ ॥ बरेगिरिउगयकेएइ ॥ चुरणकरतआखाकुंतेइ ॥ कबडुकसाग  
 रमधेताइ ॥ निजधुतइसंजलउगाइ ॥ सिंधुकेतददेशहेतेता ॥ तामिजलमेंशेउतेता ॥ ४ ॥ अयु  
 तगतकीबलहेतामे ॥ भागतरुक्षकपीआश्रमतामें ॥ अग्निहोत्रकेकुंउमांइ ॥ करतहीवितरु  
 त्रखलआइ ॥ ५ ॥ नरनारिगिरिगुहामांइ ॥ डारिउदेवतडंगरलोइ ॥ अमरिकाटकुंरुंधतमैसे ॥ देशके  
 जनकुंपीउततैसे ॥ ६ ॥ सोखा ॥ कुलवंतनारिजेहा ॥ ताकिलज्जालेतखल ॥ त्रियागीतसुंनिउतेहा ॥ रे  
 वताचलमिआवतही ॥ ७ ॥ चोपाई ॥ लज्जनादथकेमधेजोउ ॥ रमतरामकुंदेखतसोउ ॥ यानकिये

वारुणिकेरा ॥ मदसे विद्वल्लोचनदेरा ॥ १० ॥ अंगुंसे सोहतहेरा ॥ मानुमतगतगावतते ॥ सु  
 निगितवदरिगन्नाये ॥ वेउरालिपरकारकपाये ॥ १० ॥ शूचवदरतातिको तोउ ॥ करतही अंगदे  
 खाइसोउ ॥ कपी निजतकुं देखके नारी ॥ चपलतरुणो हासतो नप्यारी ॥ १० ॥ बलदेव किदागरुप  
 एहा ॥ देखकपी कुं हसतही तेहा ॥ ताकुं कपी निजगुददेखाई ॥ भूक्षेपप्रपमान किन आई ॥ ११ ॥ दे  
 खिवलने क्रीधप्रती किना ॥ पथरासे मारतघुविना ॥ पथरकुं वचाइके एहा ॥ कलत्रामदिगले गयो  
 तेहा ॥ १२ ॥ बलकुं कपी चरावनकाता ॥ फोरेउकलत्रामदिगभाता ॥ करिअपमानरामको ए ॥  
 होरवसनफारतपुनिते ॥ १३ ॥ याविधइष्टकपी कुं तोई ॥ इचुंने देनाना किनसोई ॥ करिक्रीधह  
 लमुत्रालधारी ॥ कपीहनवइछाउरकारी ॥ १४ ॥ दोहा ॥ प्रहावलियो द्विविंदही तो ॥ बरो वृक्ष उ  
 गय ॥ संकर्षणादि गन्नायेके ॥ शिरमें मारतताय ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ ऊपरेशिरउपरतो ॥ गिरि  
 समवलने नगिने सोउ ॥ पकरकपी कुं बलने मारा ॥ मुत्रालसे शिरफारिउराग ॥ १६ ॥ रुधिरसे रंगा  
 येउरा ॥ बरगीरिसमगिनतनते ॥ पुनिइसरलिने जाउगई ॥ विनपत्रकरि मारतताई ॥ १७

अतिक्रीधकरिवलने ए ॥ श्रातुंककरके छेदतते ॥ ओरकारउवाइ कपी मारा ॥ बलताके श्रात  
 टुककरउरा ॥ १० ॥ पुनिपुनि वंदरकारउवाई ॥ आवतवलने तोरेताइ ॥ विनवृक्षसचवनकरही  
 ना ॥ बलसे ऊधकरतमतिहीना ॥ १० ॥ पुनिपथरवरषावतए ॥ बलचूरणकरि डारतते ॥ ता  
 लतल्यभुजिकिकरी एहा ॥ मुष्टीआइदिगवंदरतेहा ॥ १० ॥ मारतवलकि छेति यामाई ॥ बलहल  
 मुत्रालसागिताई ॥ मुष्टीततुमें मारतताई ॥ गिरतकपी मुखरुधिरवहाई ॥ ११ ॥ परतकपीने गिरी  
 डालाया ॥ तलरोकाऊतसचवनराया ॥ तबसरसिधमुनिवरनेहा ॥ नभसे करतकुसमउरितेहा  
 १३ ॥ जयजयनमोनमोकही ए ॥ स्तवनकरतवलदेवकीते ॥ जगतनाशकरद्विविंदमारी ॥ बलअ  
 येपुरमें सरुवकारी ॥ १३ ॥ दोहा ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमिते ॥ द्विविंदकुं बलने हने  
 भूमानदकहे ॥ १४ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामी शिष्यभूमानंदहृतभाषायां सप्तषष्ठीतमो ॥ १५ ॥  
 यः ॥ ६७ ॥ दोहा ॥ कौरवने जती जूधमें ॥ सांबहीरुपे तोउ ॥ बलहस्तिनपुरतानत ॥ अउसवमें क  
 हियोउ ॥ १ ॥ चौपाई ॥ शुककहेइयोधनकिनेहा ॥ लक्षमणस्वयंवरमितेहा ॥ सांबदरतआई

केतवही ॥ कौरवबोलतकोपितवही ॥ ३ ॥ प्रतिप्रनंमरलरकाएऊ ॥ किनतिरस्कारअपनीतेऊं ॥  
 नहीइछतयाकस्याताई ॥ हरतहिबलकरकेसोआई ॥ ३ ॥ बांधऊंविनयविनकुंलाई ॥ कहाकरेगेता  
 दुवुआई ॥ अपनिमहीआपदिनेतवही ॥ भोगतहीगताहीइतवही ॥ ४ ॥ बधकृतसंनिकेतइआ  
 वेगे ॥ गर्वविनहोइकेजावेगे ॥ घाणायामआदिकरतेसें ॥ इंदिनियममेंहोतहीतेसें ॥ ५ ॥ डयोधन  
 भृशित्वाकणां ॥ यज्ञकेतूमहारथिषटवणां ॥ भिष्मऊंनेघेरेसेवआई ॥ सांबहीबांधनइछतथा  
 ॥ ६ ॥ षटयुधाआवतसांबतोई ॥ चापलइगटेराकसोई ॥ याकुंपकरनषटकरिक्रोधा ॥ गटगटयु  
 कहतहीतोधा ॥ ७ ॥ षटधनविकरणादिकजेऊं ॥ बाणकिचृष्टीकरतहीतेऊं ॥ कौरवनेहनेसांबज  
 हा ॥ मृगसिंहसाईसहतनतेहा ॥ ८ ॥ चापचराइनिजसरसेराऊं ॥ करणादिककुंमारततेऊं ॥ एक  
 कलावीछनगारारा ॥ षटमहारथिऊंकुषटमारा ॥ ९ ॥ चक्रगारचक्रवाहनकुंआऊं ॥ सारथिऊंकु  
 एकाकतेऊं ॥ षटथिऊंकुमाररेजवही ॥ सबमिलिसांबकुंपुजततवही ॥ १० ॥ सोरठाः ॥ सांचकुं  
 करिरथविन ॥ चक्रमिलिचक्रहयमारतही ॥ एकऊंनेचापलीन ॥ एकहीसारथिकुंमारत ॥ ११ ॥ ॥ ४६ ॥

चोपाई ॥ रथविनकरबांधिजुधमांई ॥ कस्याजुतलायेपुरताई ॥ सोकहीनारदजडुमेंएऊं ॥ उग्रसेन  
 घेरेजइतेऊं ॥ १२ ॥ कौरवकुंमारनचलेजवही ॥ राकतरामजडुकुंतवही ॥ जडकुरुमेंकलिइछतनोई  
 रामगयेहस्तिनपुरतोई ॥ १३ ॥ रथिसमरथमेंवेठकेहा ॥ रुधनडब्राह्मणकृतनेहा ॥ ताराकृतशर्वा  
 सोहेतेसें ॥ हस्तिनपुरवलजायकेतेसें ॥ १४ ॥ वादिमैरहीउधवकुंएऊं ॥ घेरेउधतराएदिगतेऊं ॥ जाय  
 उधवकरिवंदनयाकुं ॥ भिष्मद्रोणवाकिकुपुनितकुं ॥ १५ ॥ डयोधनऊंकुंपुनिएऊं ॥ प्रायेगमनन  
 वततेऊं ॥ आयरामसंनिषसनहोई ॥ उधवपुजिपुजालेचलिसोई ॥ १६ ॥ चलदेवकिरिगकौरवजा  
 ई ॥ द्विजकुं गौअप्रप्रंदेतलाई ॥ बरेवरेकौरवथेतोउ ॥ बलमहीमातानीनमहीसोउ ॥ १७ ॥ रोहा ॥  
 कुत्रालअरुआरोगपता ॥ पुछतसंनतहिसोउ ॥ सावधानवचबोलही ॥ कौरवसेंवलसोउ ॥ १८ ॥  
 चापाई ॥ सवराजाकीगताजेऊं ॥ उग्रसेनकीआगपातेऊं ॥ तूमपरहेकऊंसंनकेतोउ ॥ करोततका  
 लविचारीसोउ ॥ १९ ॥ वक्रमिलिकेतूमअधर्मकिना ॥ धर्मएकवालकजितलिना ॥ बांधेतूमसंने  
 थसवही ॥ एकपनालियेसहेतवही ॥ २० ॥ प्रभावउछाहवलकृतवानी ॥ रामऊंकिंसनिकेअभिमा

नी ॥ अतिकोपकरिकोरवतेऊं ॥ बोलेउकालगतिहेएऊं ॥ २१ ॥ मुकुरशिरपरसदारहाही ॥ पनि  
हातापरचरनेचाही ॥ कुंतिव्याहकरिकेएऊं ॥ खानप्रासनशायामीलितेऊं ॥ २२ ॥ नृपप्रासनसो  
अपनेदिने ॥ जादवऊंकुं वितत्यकिना ॥ अंजनचमरशंखचत्रतेऊं ॥ शशाप्रासनमुकुटतेऊं ॥  
अपनेप्रायहजवनहीकिना ॥ तांलुंभोगतहेमतिहीना ॥ २३ ॥ सोरवा ॥ नृपऊंकेचिनतोउ ॥ छिनले  
वेगोतडऊंसें ॥ दाताकेरीपुमोउ ॥ अहीकुंअमृतदिततैसे ॥ २४ ॥ चोपाई ॥ अपनिप्रसनतासेंबदेजेहा  
निलजन्मागपाकरतहेतेहा ॥ अरुनभोष्पद्रोणादिनेऊं ॥ कौरवनेनहीदिनेउतेऊं ॥ इंद्रादिककुंले  
वेएऊं ॥ सिंहमुखऊंसेभेरसुंलेऊं ॥ २५ ॥ शुक्कहीजन्मकुटुंबधनपाई ॥ तिनऊंमेंमदअतिउरलाई  
कगीरवचबलऊंकुंस्फनाई ॥ डुरितनसवेगथेपुरमाई ॥ २६ ॥ दुष्टपनोकौरवकोतोई ॥ अतिकगेरव  
चऊंनिकुंमाई ॥ करिकोपबोलतबलएऊं ॥ बेरवेरहसिकेप्रनिनेऊं ॥ २७ ॥ धनजनप्रादिमदमत  
हा ॥ डरजनसातिनइलततेहा ॥ याकुंशांतिदंडविनमाई ॥ पशुदंडसुलकरिकहाई ॥ २८ ॥ कुपीनहृष्ट  
अरुनइसबनाई ॥ याकुंधिरउशांतोपमाई ॥ याकोसरवइछिहमप्राये ॥ सोमदअतिरवलडष्टकहाये

२९ ॥ होहा ॥ सोमानिमोरअवज्ञा ॥ करिमारतवचबाण ॥ कलहप्रियहेइनुकुं ॥ समऊतनांहिअज्ञांण  
३० ॥ चोपाई ॥ कगीरवचकौरवकेतोउ ॥ मनमेंविचारतबलसोउ ॥ उग्रसेनुसमर्थनहीएहा ॥ भोजह  
दिसअंधकइज्ञानेहा ॥ इंद्रादिकलोकपालकहावे ॥ सोथाकीप्राग्यामेरहावे ॥ ३१ ॥ संधर्मांमेंवेवतने  
ऊं ॥ पारिजातलाईभोगनतेऊं ॥ याविधउग्रसेनहेतोउ ॥ अधिकासनकेतोपनसोउ ॥ ३२ ॥ जिनकेपद  
युगलश्रीनेऊं ॥ सेवतअखिलईश्वरिनेऊं ॥ निश्चैलक्ष्मिकोपतिहा ॥ रासचिद्रकेतोपनतेहा ॥ ३३ ॥  
जिनकेपदपंकजजतोउ ॥ अखिललोकपालहेकोउ ॥ मुकुटसेसेवतहेतेहा ॥ तोगिसेवततिरथजेहा  
३४ ॥ सोतोशुकोतिरथहा ॥ हमअतशिवलक्ष्मीतोनेहा ॥ सबहमसेवनपदरजनाके ॥ कुंनृपप्रा  
सनघटहीताके ॥ ३५ ॥ कौरवनेदिनभारवंउजवही ॥ निश्चैजादवभोगततबही ॥ निश्चैहमउपानहेतेहा  
शिरसवहेकौरवतोनेहा ॥ ३६ ॥ सोरवा ॥ अश्वर्यकिमदजाई ॥ मदिगमवज्जतमानिद्रकी ॥ कवी  
नवानिस्फुनिताई ॥ सहननकरेशिक्षकहिजो ॥ ३७ ॥ चोपाई ॥ कौरवविनभूकरुअबएहा ॥ जनुवी  
लोकतारिगतेहा ॥ असेकोधरामउरलाई ॥ उवरउंकरमेहलसाई ॥ ३८ ॥ हस्तिनपुरदक्षिणमेंनेऊं

हलप्रयुगमें वरधारितेऊं ॥ गंगामें डारनकुं ताना ॥ जलमें नावतनुं शोखाना ॥ ३७ ॥ तानिलियोनिजपुर  
कुं जाई ॥ गिरतगंगामें देखिसोई ॥ संभ्रमकृतकौरवसबगहा ॥ बलके शरणजातही तेहा ॥ ४७ ॥ कृत  
कुटुंबजिवनकरिआसा ॥ सुतासोवआगेकरसासा ॥ करजोरिवलकेदिगताई ॥ रामरामबोलत  
शिरनाई ॥ ४१ ॥ मुदकुछितबुद्धिहमतेऊं ॥ तवमहीमानहीजानेतेऊं ॥ तूमतगकरहरपालनहाग  
माफकरोअसगुनाहमारा ॥ ४२ ॥ दोहाः ॥ तूमतोकीउनहारहो ॥ जोकरमकडातोर ॥ सबहतो  
रेआसरे ॥ चहारबोचहफोर ॥ ४३ ॥ चोपाई ॥ अनंततूमशिरसखहीजाके ॥ ब्रह्मांडधराएकशि  
रताके ॥ परलेमेंतगनिजतनुमांई ॥ लिनकरकेसुवनतूमताई ॥ ४४ ॥ हृमपरकोपतिहागेंतोउं ॥  
शिक्षाकेअरथेंहेसोउ ॥ द्वेषअरुमछरसेंनोई ॥ स्थितिऊंकेपालनकीताई ॥ ४५ ॥ विश्वहेहतताको  
जेऊं ॥ सबशक्तिधरहोतूमतेऊं ॥ सबजनकेतूमअंतरजामी ॥ तवशरणआयोहमस्वामी ॥ ४६ ॥ शु  
ककहेकेपतहीपुरजाकी ॥ भयकृतशरणग्रहीपुनियाकी ॥ बलकुप्रसनकियेअतितवही ॥ अभय  
देतमतडरोकहीतवही ॥ ४७ ॥ पारिवरहडयोधनदिना ॥ चारअयुतहयदिनप्रविना ॥ सावचरष

एकलाखविंशद्द्वार

गतचारसतएहा ॥ परसहस्रकंचनरथतेहा ॥ ४८ ॥ एकसहस्रसामिपुनितेऊं ॥ भुषणकृतदिने  
सवतेऊं ॥ आनंदकृतकौरवनेकीना ॥ सुतअरुवक्रजतआतप्रविना ॥ ४९ ॥ द्वारवतीमेंवलदे  
वआई ॥ मिलतसबेसबंधिकुंताई ॥ कुरुमेंकिनचरितनितजेहा ॥ जडुसभामेंकहीसवतेहा ॥  
५० ॥ दोहाः ॥ प्रबलुंप्राक्रमरामको ॥ पुरदेखातहिएऊं ॥ दक्षिणमेंचहेअति ॥ गंगामेंनमीते  
ऊं ॥ ५१ ॥ इतिश्रीमत्भागवत ॥ दशमस्कंधमितेऊं ॥ गताक्षयकुंतानतवल ॥ भूमानंदकहेऊं ॥ ५२  
इतिश्रीमहानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायांअष्टषष्ठितमोऽध्यायः ॥ ६६ ॥ दोहा  
गृहस्थपतेश्रीकृष्णकुं ॥ सबमेंदिरमेंदेख ॥ नारदस्कृतिकरजातही ॥ ओगनंतरमिलेरव ॥ १ ॥ चो  
पाई ॥ शुककहीनरकहनेहरितोऊं ॥ बक्रुदाराएकपरनिसोउ ॥ एहीबातनारदसंनितवही ॥ द्वार  
वतिआईदेखतवही ॥ २ ॥ सोलहजारनारिकुंएऊं ॥ एकतबुएकपलमिचरेऊं ॥ संनितारदउर  
उछवपाई ॥ द्वारवतिविलोकतधाई ॥ ३ ॥ बोलतसारसहसहीजामे ॥ याविधकंदसरहेतामें ॥  
इंदिवरउसलकुमुदतेऊं ॥ कङ्कारअरुअंभोजफूलजेऊं ॥ ४ ॥ हवेजियुंनवजारवहेतामें ॥ स्फाति



करुपासेंरचितामें ॥ महामृकतसेंप्रकाशकारी ॥ सोनुरत्नसामग्रीभारी ॥ ५ ॥ भिनभिनचौकसेरिमग  
 याकी ॥ सरमंदिरशालाहटजाकी ॥ सिंचतमगअंगणअरुसेरि ॥ सुभाष्यानउंवरसिंचेगि ॥ ६ ॥  
 ध्वजापताकउरतेहोउं ॥ धुपमिगवतपुरमेंसोउ ॥ तामहीराजकोरहेतेहुं ॥ लोकपालपुजितहेते  
 हुं ॥ ७ ॥ विश्वकर्माकोरापनतेहो ॥ देखायेयामेंसबतेहो ॥ सोलहजारहूवेनियुंतामे ॥ अतीसुंदर  
 एकमेदिरतामें ॥ कृष्णदागकोगेहएहुं ॥ नारदपैउदेखनतेहुं ॥ ८ ॥ सोरना ॥ विदुमफलकवेदुर  
 मनिजरेसबस्तेभहुंमे ॥ इंद्रनिलमणिऊतनुर ॥ भितमेंकोतिमानभुमि ॥ ९ ॥ चोपाई ॥ चंद्रचारचेसुंद  
 रतामें ॥ मोतनमालाकुलहीतामें ॥ आसनखदियोंदंतकिजेहा ॥ मनिहुंमेंजरावहेतेहा ॥ १० ॥ वस  
 नभुषनऊतदासीजेहा ॥ पुरुषमणिकुंडलधरतेहा ॥ अंगिपगिचसनअंगधारी ॥ भवनसहा  
 वतसवनरनारी ॥ ११ ॥ रत्नकेदिपसमुहसेतोउं ॥ कांतिकरहरहीतमसोउं ॥ अंगरुधुमजालिमें  
 जेहुं ॥ निकसतदेखमानिघनतेहुं ॥ १२ ॥ मयुरबैठवलभिमैंएहा ॥ कुरिनादनाचतहेतेहा ॥ गुणरु  
 पवयवेशात्स्यतेहुं ॥ दामिसहस्रकतरुकीणितेहुं ॥ सेवतहरिकुंगेहमेंएहुं ॥ देखतनारदऊत

॥ ४८ ॥

सनेहुं ॥ १३ ॥ रुक्मंदरविंजनकरधारी ॥ करतप्रभुहुंकुंनितनारी ॥ नारदकुंदेखिहरिएहुं ॥ श्रीपलं  
 गसेउउकेतेहुं ॥ १४ ॥ सबचुषधरमेंश्रेष्ठकहाई ॥ किरिरऊतशिरचरणमनाई ॥ करजोरिनारदकुंए  
 हुं ॥ नीतआसनवैंगायतेहुं ॥ १५ ॥ कृषीचरनधोइजलजेहा ॥ जगतगुरुशिरधारतएहा ॥ ब्रह्मण्य  
 देवनामहीतोउं ॥ इनकुंएकउचितहेसोउ ॥ १६ ॥ याकेचरनसौचहीजेहा ॥ गंगाभइतिरथरुपतेहा  
 देवकृषीकुंपुजेविधिलाई ॥ नारायणनरसरवाकहाई ॥ १७ ॥ दोहा ॥ भिनअमृतममवानिसें ॥  
 नारदकुंयुकिन ॥ प्रभुतिहारहमक्याकरुं ॥ याविधआदरदिन ॥ १८ ॥ चोपाई ॥ नारदकहेमेंनीतव  
 जेहुं ॥ सबजनमेंनहीआश्रयेंहुं ॥ सकललोकनाथतूमहोई ॥ खलकुंदेउदेतहोसोई ॥ १९ ॥ ज  
 गकुरक्षणपालनहाग ॥ जनसभलियुंअवतारतिहाग ॥ याविधहोतूमकुंहमजाने ॥ तचपद  
 पंकजलखिउरआने ॥ २० ॥ अखिलभक्तकुंमोक्षदएहुं ॥ ब्रह्मादिकउरचितततेहुं ॥ संसारकू  
 पपरेजनतोउं ॥ तिनकुंआश्रयरुपहेसोउ ॥ २१ ॥ याविधचरनदेखेतिहाग ॥ तवस्मृतिकरेचित  
 हमाग ॥ याविधहृपाकरोतूमस्वामी ॥ निततवध्यानकरतविचरामी ॥ २२ ॥ शुककहेओरनारि

भा. द. उ.  
॥५०॥

की गेहा ॥ नारददेखत जाकर तेहा ॥ जोगेश्वर कि माया तेहा ॥ ज्ञान न इलाकरि उरते ॥ २३ ॥ तिनमें प्रैक्षर  
 रमत हरि जो उ ॥ उधव आरु नारिसंग सो उ ॥ देख नारद कु उते ॥ आसन भक्ती से पुजत ते ॥ २४ ॥  
 पुल्लत प्रभु प्रज्ञान कि नाई ॥ कब आये हो मुनि तम आई ॥ पुराण तम प्रपुराण हम ते ॥ कल्लुन  
 हि होत ही सेवा ते ॥ २५ ॥ युं हे तो भिक हो तम मोई ॥ सफल तन्य करुं कं तोई ॥ संनि नारद वि  
 स्मरण पाई ॥ चुप होई कै गेय ओर धरताई ॥ २६ ॥ यामें देखत हरि कुं सोई ॥ बालक कुं खेलावत जोई  
 ओर गेह नाचन के काता ॥ नृसिंह त देव कृषी राजा ॥ २७ ॥ सोरठा ॥ होम जो गप प्रनि जो उ ॥ अ  
 भिन हो वरुं से हो मत ॥ यत् पुरुष कुं सो उ ॥ पंचयज्ञ ये यज्ञ त लवि ॥ २८ ॥ चोपाई ॥ की उगे ह विपु  
 जि माई ॥ शेष हरि कुं ती म त देखे ॥ की उथल संघ्या कर ही गहा ॥ मुनि गा यत्री तप को गेहा  
 २९ ॥ लाल प्रसि नि का सी ॥ खिलत प्रसि मग मे क स गे ॥ गज ह य र थ कि क रि प्र स वा री ॥  
 निक से की उ भ व न कि क्षा री ॥ ३० ॥ पलंग पर यो दे की गे ॥ वेदि आ दु न ग व त ते ॥ उध व आ दि क  
 मंत्रि तेहा ॥ मिलि विचार करत की उगे हा ॥ ३१ ॥ जल क्रिडा करने कुं काता ॥ वेत्ता जल निक सी म हा ॥ ५० ॥



गजा ॥ गोसंगारिके देत ॥ वृषधर विष कुं की उगे ॥ ३२ ॥ इतिहास पुरान स भजेता ॥ वै उ को  
 गेह संन त तेता ॥ हास कथा करिके दरि ते ॥ धिया संग हस ही की उगे ॥ ३३ ॥ की उथल धर्म  
 स्वत विचारी ॥ की उथल प्रर्थ काम उर धार ॥ पृक्षती पर हे पुरुष जो उ ॥ ध्यान धरत या की गेह को  
 उ ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ इच्छित भोग पुजा कुं से ॥ गुरु से वत क स गे ॥ चैर करत क स गे ह तो ॥ की उथल  
 संधि ते ॥ ३५ ॥ चोपाई ॥ राम से मिलिके की उगे ॥ सतजन स भ विचार त ते ॥ पुत्र लिये स  
 म सो धत दारा ॥ वर सो धत स म्ना लिये सारा ॥ ३६ ॥ करत आह वि भव सम जोई ॥ सतान माई प  
 गते सोई ॥ सत की दारा देरत गे ॥ वर उल्लव हरि बाल क ते ॥ ३७ ॥ देखिके पुर के तन ते ॥  
 विस्मेषावत ही सब ते ॥ कोय ह यज्ञ करि देव यज्ञ ही ॥ कुप मता से धर्म कुं भज ही ॥ ३८ ॥ स  
 धि घोरा के पर गरी ॥ मृग या करने निक से क्षारी ॥ नित वेत्ता बदलिके प्रभु जोई ॥ प्रधान नारि हि  
 जान न तोई ॥ गुप्त होई विचरत सब गे ॥ ज्ञान त भाव जो गेश्वर ते ॥ ३९ ॥ सोरठा ॥ या विध नार  
 द जोई ॥ योगेश्वर की योग कला ॥ बोलत मुद क्त त होई ॥ मानुष रूप हरी कुं से ॥ ४० ॥ चोपाई ॥ यो

गेश्वरयोगमायातेहा ॥ मोरेमनमेंभांसेएहा ॥ मायाविनहीजानतजेऊं ॥ तवसेवामेंजानेतेऊं ॥ ४१ ॥  
 मोयुआत्सदेऊंस्वामि ॥ तवजसकृतजो कमीविचरामी ॥ त्रिलोकियावनकरनेहा ॥ नवलियागा  
 वेहमतेहा ॥ ४२ ॥ शुभुकहेचपकनांमोई ॥ वक्राअरुपावकहमतोई ॥ लो ककुंचपसियावनकाजा  
 मेंमिपालतहोमुनिराजा ॥ याकारनपुवहमकिना ॥ मोहनपावऊं तसप्रविना ॥ ४३ ॥ शुक्रकहेधर्म  
 गृहीकेजेता ॥ पावनसवयावतहरिनेता ॥ हृद्यएकसबकेयरमांऊं ॥ इनकियोगमायाकुंताइ ॥ वे  
 रवेरनारदतीतोई ॥ उल्लवज्जनरदेविस्मितहोई ॥ ४४ ॥ धर्मअर्थअरुकापमेंजोउं ॥ अज्ञानतश्री  
 हृद्यसोवे ॥ नारदकुंप्रसनकियेतवही ॥ हरिकुंस्मरतगयेमुनितवही ॥ ४५ ॥ मनुषकरेतेसेंहरि  
 करही ॥ सबकेसुभलियेमुरतीधरही ॥ नागयणानारिसवसंगे ॥ रमतभयेसोसराप्रमेगे ॥ ला  
 तसकद्रपणुदेतामांई ॥ हासविलासकरिनारिताई ॥ ४६ ॥ उसतिपालननाशकरजोउ ॥ सहनक  
 र्मकरतजोसोउ ॥ तिनकुंजातसुनतजनतेऊं ॥ शुभुमेंभक्तिपावततेऊं ॥ ४७ ॥ होहा ॥ इतिश्री  
 मतभागवत ॥ दशमस्कंधमीजेऊं ॥ सबगेहनारददेरवत ॥ भूमानंदकहेऊं ॥ ४८ ॥ इतिश्रीस

हजानंदस्वामिज्ञिष्पभूमानंदहनभाषायां(कीनपहितमोः) ध्यायः ॥ ६६ ॥ होहा ॥ निसक  
 र्मश्रीहृद्यको ॥ इतनारदकोकाज ॥ तामेंमंत्रविचारजो ॥ सितेरऊंमेंसमात ॥ १ ॥ चोपाई ॥ शुक्रक  
 हेघानहोतहीतवही ॥ कुंवगृहीतहरिनारितवही ॥ विरहसेआतुरसबहोइ ॥ ज्ञापदेतकुंकुरकुं  
 सोई ॥ २ ॥ मंदारवनवायुसेंजेऊं ॥ मधुकरगानकंनिकेएऊं ॥ बोलतपक्षिवंदिजनमाइ ॥ जगातह  
 द्यकुंकुमुदपाइ ॥ ३ ॥ हरिभुजमेंहीरुवमीलितेहा ॥ सुभसुकरतकुंनचहनतेहा ॥ ब्राह्मसुकरत  
 उवितगनाथा ॥ तलऊंसेंपोवतपदहाथा ॥ ४ ॥ अतिप्रसनइंद्रीहृतहोई ॥ तमपरनितकुंधारत  
 सोई ॥ अखंडउपाधिरहीतएऊं ॥ सौतिअव्ययमायातिततेऊं ॥ ५ ॥ जगउसतिनाशकेकरता ॥ ब्र  
 ह्मनामकुंदेजोधरता ॥ आनंदसतारुपहेतोउ ॥ ब्रह्मकोध्यानधरिसेतोउ ॥ ६ ॥ सोरगा ॥ निरमल  
 जलमेंस्नान ॥ करिकेसंध्याआदिसव ॥ क्रियाकरिकृतध्यान ॥ द्विपरधरवेगरविसमीय ॥ ७ ॥ चो  
 पाई ॥ अग्निहोमकरिपुनिएऊं ॥ ब्रह्मगायत्रीकरतहीतेऊं ॥ उगतरविउपासकेतोउ ॥ देवरूषी  
 पित्रत्पतकरिसोउ ॥ ८ ॥ वृधअरुविषकुंपुनिएऊं ॥ धेनुदेतविषकुंतेऊं ॥ कंचनशृंगिमोतन

भा. द. उ.  
॥ ५२ ॥

माला ॥ पैले विद्यानि कृत वल्लवाला ॥ १० ॥ दुःखनिःश्रुपरसें संगारी ॥ साधवीरूप सुखामे शारी ॥ तिल  
श्रु हरि वृमन कृत जेहा ॥ बंधवध दिन दिन देत ही तेहा ॥ नेर हजार चोरा सिने फुं ॥ एक बंध गोजानो  
ते फुं ॥ १० ॥ देवता गी विप्र वृधताई ॥ गुरु प्ररु सव भूत कुं शिरनाई ॥ निज विभुति फुं कुं ए फुं ॥ कपीला  
दिकुं परवान ते फुं ॥ ११ ॥ सब नर को भुषण निज देहा ॥ पट कौस्तुभ कृत करि के तेहा ॥ घिदर पन में  
निज मुख तोई ॥ वृष गौ द्वि ज रे वदे खत सोई ॥ १२ ॥ चक्रुं वर्ण अंतर पुर कि मांई ॥ मन वांछित हरि दे कर  
ताई ॥ प्रधान प्ररु निज दारा ते ती ॥ वांछित दे प्रसन कि ये ते ती ॥ १३ ॥ दोहा ॥ स्रुत तो बूल प्ररु चंदन  
पैले द्विज कुं देत ॥ दारा कू हद प्रधान ही ॥ देकर अपैले त ॥ १४ ॥ चोपाई ॥ तव कृत प्रति प्ररु नर थ  
लाई ॥ कर जो रिगले दिग आई ॥ सारथिकर निज कर से साई ॥ वेते रथ पुरु धी नम आई ॥ १५ ॥ सा  
सकी उधव सही त क हाई ॥ उदया चल पर प्ररु की नांई ॥ प्रमल ज्ञान कृत ने न प सारी ॥ अंतर पुर की  
देखत नारी ॥ १६ ॥ नेन से हरि कुं जोरत नांई ॥ निकसे हास से हरि मन तोई ॥ सब गेह से सव मुनि तोई ॥  
आत कू धर्मा में एक होई ॥ १७ ॥ सब जइ चैव चक्रुं प्ररु आई ॥ या सभा में पट उर मि नांई ॥ आसन पर ॥ ५३ ॥

अ. ७०

सारथी

॥ ५३ ॥

वैवे प्रविनासी ॥ निज ते जे सव दिश प्रकाशि ॥ १८ ॥ जादव से वृत्त सो भत जै से ॥ तारा वृत्त न भमि चंद जै  
से ॥ तामें मंत्रि वैवे जेहा ॥ हास से हरि कुं हसाते तेहा ॥ १९ ॥ सोरवा ॥ नट प्ररु नरत की नार ॥ तोर व  
नृत करि के सव ही ॥ प्रभु कुं सेव ही प्यार ॥ करि के प्रथक प्रथक मिलि ॥ २० ॥ चोपाई ॥ तव कृत प्र  
ति प्ररु नर थ लाई ॥ कर जो रिगले दिग आई ॥ सारथिकर निज कर से साई ॥ चीला वेणु मुदे गताला  
मुर जज्ञां स्वके श च्चि शाला ॥ कृत माग धवं दित न जे फुं ॥ गात न चत स्त वचन करि ते फुं ॥ तामें ब्रह्मण  
वैवे ते ता ॥ वेद उचारण करत ही ते ता ॥ २१ ॥ बोलि में प्रति चतुर तो उं ॥ पुर्व नृप कथा कहत ही सो उ ॥  
पुरुष एक सभा के मांई ॥ आयो सो क बुदर शि त नांई ॥ २२ ॥ द्वारपाल हरि आगपालाई ॥ पैनाई या कुं सभा  
मांई ॥ नमस्कार करि हरि कुं ए फुं ॥ कर जो रि वी जत पुनि ते फुं ॥ २३ ॥ जरा सं धने रुं धे तेहा ॥ राजा की डर  
कहे उं तेहा ॥ दिग विजय मी नृप न मे न आई ॥ गिरि ज्ञान डग में रुं धे ताई ॥ २४ ॥ राजा विश हजार हे एहा  
या कि प्ररु ती हे क नु तेहा ॥ हे हृष्ट रे मं ग ल कर ता ॥ हे शरणा गत को भय हर ता ॥ २५ ॥ भव से भय पा  
ये ह म जे फुं ॥ शरण आये पा ही तू म ते फुं ॥ या लो क पाप कर्म में रा ती ॥ तव से वा प्ररु चन कुं सा ती ॥

भा- २-३-  
॥५३॥

जालुंगफाललीकरहाई ॥ तांलुंकालवेगक्तनआई ॥ त्रिवनकिन्नाप्राज्ञाजोयाकि ॥ तेरततूमछेदत  
होताकी ॥ २६ ॥ कालरूपतोयनमीनमामि ॥ याजगकेतूमइशहोस्वामि ॥ संतरक्षणाखलनिग्रह  
काज ॥ रोश्वर्यक्तप्रगटहिगता ॥ २७ ॥ जगसेधादिन्नाग्पातोशि ॥ जलधिवरततहेतोरी ॥ तवजनड  
खभोगतहेतेऊं ॥ यामेंहमनहीजानततेऊं ॥ २८ ॥ स्वप्नतल्पनृपकोकरवतोउं ॥ विश्रमेकंहीनहेतेऊं  
कृतदागदिकिचिंताजेहा ॥ वहनकियेहमकेवलतेहा ॥ २९ ॥ तूमसेनिका मिजोपाई ॥ सोकरवहम  
नेदिनेचहाइ ॥ तवमायाऊंसेनगमांई ॥ केशप्रतिपायेप्रवताई ॥ ३० ॥ नारणागतकेडुरवहरजे  
ऊं ॥ तवपदपकजकीयुगतेऊं ॥ कर्मपात्रामागधरुपजेहा ॥ हमकुंवांधरहेहेतेहा ॥ ३१ ॥ केशरिशिं  
हप्रजाकिन्माई ॥ तासेतूमदेऊंछोराई ॥ अयुतगतवलरहेएकधारी ॥ याकारनकरोसायहमारी  
३२ ॥ अगारवेरलरनसोप्राया ॥ मतरवेरतूमनेनसवाया ॥ मनुषदेहधारिहरितोइ ॥ एकवेरनि  
सोहेसोई ॥ ३३ ॥ गर्वकृतभयोतचतोई ॥ तवप्रताकुंभीउतहिआइ ॥ इतकहेमागधनेएह ॥ डुरगमें  
रुंधेनृपजेहा ॥ तवदरशनकिइलातांइ ॥ पायेतोरचरनकुंआई ॥ जेसेइनकुंकरवहोताइ ॥ तेसेप्रभु ॥ ५३ ॥

अ- १७

॥५३॥

करोतूमधाई ॥ ३४ ॥ सोइ ॥ शुककहेनृषडलबोलन ॥ गदेनारदआई ॥ पितजराधररूषीसो ॥  
रविसमरहेकहाई ॥ ३५ ॥ चोपाई ॥ श्रीहृदमनारदकुंजोई ॥ सभासहितउवेइशसोई ॥ सिरसेंचंदन  
करिपुनितोई ॥ किनेपुजनआसनवेगाई ॥ ३६ ॥ सुंदरबचमुखसेउचारि ॥ बोलतमुनिसेतृमिका  
रि ॥ यहवउलाभहमारोप्रायो ॥ त्रिलोकफिरिचरतातकंनयो ॥ ३७ ॥ ईश्वरहृतसबलोकिकमाई  
तोराप्रताशोबलुवेनांई ॥ पांरवकोइछितहेतोउ ॥ तुमसेहमपुछतहेसोउ ॥ ३८ ॥ नारदकहेप्रभु  
मायातोरी ॥ देखिहमप्रतितरनकवोरी ॥ अज्ञअरूपोरमायावितोउ ॥ ताकुंमोहकहोतूमसोउ  
नितनाक्लिसेसबजनमांई ॥ विचरतअंतरजामीताइ ॥ अग्निमुंतूमतेजलुपाइ ॥ पुष्टकरतहोआ  
श्वर्यतेई ॥ ४० ॥ नितमायासेजकहीतोउ ॥ सरजतनाशकरतहोसोउ ॥ योविधतोरचरितहेतेऊं  
काडुंजुंनानपरतनतेऊं ॥ ४१ ॥ मायासेजगभासतस्वामी ॥ अचिंसरुपहरितोयनमामि ॥ तम  
ऊंसेतोचरहेअवगाई ॥ अनथंप्रददेहकुंपाई ॥ ४२ ॥ तिनसेंनमधरतहेएऊं ॥ मोक्षउपायनजान  
ततेऊं ॥ धरिअवतारनितजगारुपेऊं ॥ देतप्रकाश्रिदियकतेऊं ॥ ४३ ॥ म्हंनोजिवहोतहेमोक्ष

भा. द. उ.  
॥ ५४ ॥

गामी तोरशरणहमपायेस्वामि ॥ पांडवकीइच्छीतहेजोउ ॥ प्रभुहमतोयसंनावेसोउ ॥ ४४ ॥ रातक  
यऊंसें पांडवतोउ ॥ यतनइछतहेतूमकुं सोउ ॥ ब्रह्मलोकइछतनृपतोई ॥ प्रभुयाकितूमकरोसहा  
ई ॥ ४५ ॥ सोमत्वमेकरादिकनेऊं ॥ तूमकुं देखनइछतनेऊं ॥ सबप्रावेगेपुनिसवराजा ॥ सोभिन्ना  
येगेऊतसमाता ॥ ४६ ॥ सोरजो ॥ श्रवणकिरतनध्यान ॥ ऊंसेश्रवचादिःसुधहीन ॥ प्रगतपसंहग  
पान ॥ करतयाकिक्वाचतियां ॥ ४७ ॥ चोपाई ॥ प्रभुनरातोरहेउछाई ॥ भूमिप्ररुदिवरसातलमोई  
दिशभूषणजगअधहरएऊं ॥ चरणोदकगंगापुनितेऊं ॥ ४८ ॥ दिविमुंदाकिनिरसातलमोई ॥ भो  
गवतिभूमिगंगाकहाई ॥ तुमजज्ञमेंताःप्रोगितवही ॥ सबहीपवित्रहोयगीतवही ॥ ४९ ॥ शुक  
कहेनारदनेकहितोउ ॥ ज्ञादवसबमानिसससोउ ॥ जगसंधनितनकुंधारी ॥ उधवसेंचोलेमुरा  
रि ॥ ५० ॥ उधवतूमहोचक्षुहमारो ॥ विचारकोफलजाननहारे ॥ करनजोग्ययामेंतोहोई ॥ कहोतू  
महमकरेगोसोई ॥ ५१ ॥ सर्वज्ञानहरिअज्ञानयाई ॥ जोवतियांकहिसंनिकेतोई ॥ उधवप्राग्पात्र  
रचलाई ॥ बोलतस्वामिसेमुदपाई ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमितेऊं ॥

अ. १०

॥ ५४ ॥

आद्रिककर्मप्रभुऊंके ॥ भूमानंदकहेऊं ॥ ५३ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायां  
सप्ततितमोःश्रावः ॥ १० ॥ दोहा ॥ उधवजिकेविचारमें ॥ इंदुप्रस्थहीजाई ॥ पांडवकुंडसवभयो ॥  
एकोतेरअध्याई ॥ १ ॥ चोपाई ॥ शुककहीनारदकेवचतोई ॥ सनिसभासुदकोमतसोई ॥ पुनिश्री  
हृदयकोमतजानी ॥ महामतिउधवबोलतबानि ॥ २ ॥ कुंडकतयागकरेगताई ॥ याकिप्रभुतूमक  
रऊंसहाई ॥ शरणागतसवराजातेहा ॥ करऊंयाकिरक्षातेहा ॥ ३ ॥ रातकयकरावऊंजामें ॥ नृ  
पकीरक्षाहोयगीतामें ॥ जगसंधकुनिततो ॥ तेऊं ॥ दोउअर्धमतमेंरोएऊं ॥ ४ ॥ अपनोबरोअ  
रथहेतोउ ॥ सिधहोवेगैमखसेंसोउ ॥ बंधनपकुंछोराओतेऊं ॥ तेरोनराहोवेगेतेऊं ॥ ५ ॥ अ  
युतगतबलमागधमांई ॥ भिमविनकीउयासमनोई ॥ शूतअशोणिमिलिकेतोई ॥ इंदुधविनजी  
मानताई ॥ ६ ॥ सोरजा ॥ इजज्ञाचेतोःप्राई ॥ ताकुंनेतिनांहिकहे ॥ ब्रह्मएणदेवकहाई ॥ ज्ञाचऊंवि  
प्रहोईभिम ॥ ७ ॥ चोपाई ॥ मारेगेइंदुपुधमेंताई ॥ तोरसमीपभेमसेनताई ॥ मारनहारेतूमहोतो  
ई ॥ निमितमात्रभिमकहाई ॥ ८ ॥ जगउत्पतिनाशकरतोई ॥ अज्ञशिवनिमितमात्रेदोई ॥ जगसंध

रुधे नृपतेता ॥ तिनके प्रमेनारितेता ॥ १७ ॥ बालक कुंखे लावत जवही ॥ शुधकर्मतवगावततवही  
जरासंधवधतुमसेतोउं ॥ निजस्वामि लुटेगे सोउं ॥ १७ ॥ सुंगोपिसंसुचुरवधगाई ॥ निजकुंको  
लुटेकारोचाई ॥ घाहवधगतगावहितैसें ॥ रावणावधमिताजीतैसें ॥ ११ ॥ मातताततचकंसव  
धोई ॥ हमअरुमुनिसबअरिवधचाई ॥ प्रभुजरासंधकोवधतोउं ॥ शिशुपालादिवधकरसोउं  
यागअरुमागधवधतोउं ॥ ताओगित्मतवहोयगिरोउं ॥ १२ ॥ दोहा ॥ शुक्रकहेउधवकोव  
च ॥ सबकुंकरवकरतेऊं ॥ कंनिनारदतइहमजो ॥ पुजतसबमिलितेऊं ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ पुनि  
यागमेतावनकाता ॥ राकतैवभूससमाजा ॥ प्रभूलेआगपाइनकुंदिना ॥ वस्केवसेआगपा  
आपलिना ॥ १४ ॥ निजदागकुंआगुचलाई ॥ बलउपसेनकिआगपापाई ॥ तवसतगरुध  
तरथलाई ॥ तापरवैवेउप्रभूआई ॥ १५ ॥ कितनेकपालाहयचरेहा ॥ कितनेकरथपरवैवेते  
हा ॥ वडेसेनसेंरुनहरिहोई ॥ निकसेवातितरजूतसोई ॥ नारवरुआनकमूदेगवाजे ॥ भेरिगो  
मुखसेदिशगाने ॥ १६ ॥ पतिरुताप्रभुनारितेती ॥ कंचनपालखिहयपरतेती ॥ बलिप्रभुकैपी

छेएहा ॥ वसनभुषनमालाधरितेहा ॥ १७ ॥ बालअमिकरकुंमेंधारी ॥ ऊधाचौओरविचहरिना  
री ॥ गायकवेषाआदिकतेती ॥ अलंकारधरिनिकसेतेती ॥ १७ ॥ उरबेलमहिषगतगरी ॥ शुक  
रखचरखरलिनैहारी ॥ तापरवारकूटकुटियाउरी ॥ पटकांचलकेतेवुधारी ॥ १८ ॥ निकसेसेना  
अतिबराऊं ॥ ध्वजलवचामरकततेऊं ॥ आयुधबकतरकिरिठधारी ॥ रविकिरणसेचलकही  
भारी ॥ करिकुलाहलसोहतएऊं ॥ जनुमलउरैमिसेंसिंधुतेऊं ॥ १९ ॥ पुनिप्रभुपुजितनारदतेहा  
प्रभुपदनमिउधारकेतेहा ॥ हरिनिश्चितसबकंनिकेएऊं ॥ दरशनकरौचलेनभमगतैऊं ॥ २० ॥  
नृपकोइतआयेथेतांइ ॥ प्रभुकहेमतउरऊंतूमभाई ॥ मागधकुंमारगेएऊं ॥ इतकहेवपदिगतै  
तेऊं ॥ कंनिसबनृपदेखतमगतैहा ॥ दरशनकोमुमुक्षुएहा ॥ २१ ॥ सोरगा ॥ ओरवासोरवमरु  
त ॥ देवालेधिकुरुखेतगई ॥ गिरिनदिगामपुरकत ॥ नेहरवाणिसंबलंपैउ ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ गंड  
किसरखतीनदिरुदेवा ॥ पंचालमलउलेधीएसा ॥ इइप्रस्थगयेपुनिएऊं ॥ प्रभुआयेकंनियु  
धिष्टिरतेऊं ॥ २३ ॥ अतिप्रसनहोइदरवाकाता ॥ गुरुसुरुदकतनिकसेगता ॥ गितवातिजवेदउ

भा. द. उ.  
॥५६॥

चारी ॥ आयेसमीपें सुदक्तभारी ॥ ३५ ॥ ते सें इंद्रिजिवकुं पाई ॥ सुहरि देख पाहुं हरखाई ॥ अतिवल  
भकुं न्हे हसें आई ॥ मिले उफिरफिरकुं उलगाई ॥ ३६ ॥ निरदोषाश्रि निकेततनु तो उ ॥ हनत अफभमि  
लिंगतासो उ ॥ खरे रोमलोचनतलजाई ॥ अवहारभुलि निवृतिपाई ॥ ३७ ॥ मामासुतकुं मिलिभिम  
तो उ ॥ प्रेमयाकुल इंद्रिजितसो उ ॥ नकुलसहदेव अरक्तनेहा ॥ नेन निरभरि मिले उ तेहा ॥ ३८ ॥ अर  
नुनमिलिभरिभुतमेताई ॥ सहदेवनकुलनमे उ आई ॥ बालाण अरुचकुं हरितो उ ॥ यथायोग्यनम  
तहे सो उ ॥ ३९ ॥ कुरुसंतयके कयथेताई ॥ पुनिकतमागधचेदिकहाई ॥ उपमंत्रि अरुगंधर्वतेऊ  
सबकुं मानदेत हरितेऊ ॥ ४० ॥ दोहा ॥ यणवपटह गोमुखतो ॥ वीणात्रो रवमृदेग ॥ वाततस्तवन  
करिहीत ॥ गातरुनाचतसंग ॥ ४१ ॥ दोपाई ॥ याविधसवसुहृदचौ प्रोरी ॥ घेरिस्तवन करतकर  
तोरी ॥ अलंकारकृतपुरऊं किमोई ॥ पैवे पुरुषोत्तममुददाई ॥ ४२ ॥ सोपुरमे मगचीकहीतेऊ ॥  
गतमदतलसैमिंचततेऊ ॥ कनकतोरणरुध्वतहितामे ॥ पुरणाकुं भप्रतिगोहतामे ॥ ४३ ॥ नयेवस  
नभुषणस्रजधारी ॥ पुरसाभावही अनितरनारि ॥ घतिगेहधुपदिपकुलहाण ॥ गोखसैनिकसत

अ. ११

॥५६॥

पं ग ती

धुपअपारा ॥ ३४ ॥ तुतपताकासंदरगेऊं ॥ रुपाकेशिखरपरएऊं ॥ हेमकलशरहेहे गती ॥ यावी  
धगेहकीपुरमेपाती ॥ ३५ ॥ आयेपुरमे प्रभुसंनिनारी ॥ छुटेकेशवसन अंगधारी ॥ गेहकाज  
पतितनिततकाला ॥ आइदेखनमगमि रूथवाला ॥ सबजनलोचननिवासतो उ ॥ हरिमुरती  
कुंदेखतसो उ ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ हयगजतरथनरभिर ॥ मचिहेराजमगमे अती ॥ नारिकृतसामश  
रा ॥ देखतदारागोखचरि ॥ ३७ ॥ दोपाई ॥ मिलिप्रनमेकुलशरतगहा ॥ निरखनहाससेंपुजत  
तेहा ॥ चंदसहीतसुं सोहेतारा ॥ देखिमगमें हृदप्रजतदारा ॥ ३८ ॥ जोखतहेसबपुरकिनारी ॥ क्वा  
पुस्यइनुनेकिनाभारी ॥ याकीचक्षुकुं उलचएऊं ॥ हासविलाससेंदेवततेऊं ॥ पुरजनपुजापरमे  
जाई ॥ पुजतसबमगऊं मे आई ॥ ३९ ॥ जेतेकसचीमे सुखीतेऊं ॥ संनिके निसपापभयेऊं ॥ ग  
जभवनसें सचजन आई ॥ किनसतकारप्रभुपधराई ॥ ४० ॥ आतसुतकुं कुंजातोई ॥ जेवपलंग  
सेप्रसनहोई ॥ द्रोपदिकतमिले उ हरखाई ॥ पुरुषोत्तमकुं महामुदपाई ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ भवन्न  
त्याकेइराकुं ॥ नितगेहमिपधराई ॥ पुताकरतधुधिरि ॥ प्रेमसेविधिभुलाई ॥ ४२ ॥ दोपाई ॥ कु



भा. द. उ.  
॥५७॥

इकुं वंदनकी नहरितवही ॥ द्योपदिभगनि नितकुंतवही ॥ कुंतापेरित हटभातेहा ॥ हृद्यप्रपत्तिकुं  
जततेहा ॥ ४३ ॥ रुक्मिणीससाभद्रातेहुं ॥ जाववतिकाखितेहुं ॥ नागनितिप्ररुगोआतोइ ॥  
मिन्नविदादिप्रएकहाई ॥ ४४ ॥ सोलसहस्ररातओरनारी ॥ वसनभुषनसेपुनतप्यारी ॥ सेस्य  
प्रमास्यपलीजततेहुं ॥ प्रभुकुंरागुतराजातेहुं ॥ ४५ ॥ प्ररक्तनक्तहरिवनमेंताई ॥ स्वोउवसेप्र  
गनिवमाई ॥ मयदानवतामेंचेचाई ॥ तिनसेदिव्यसभावनचाई ॥ ४६ ॥ नृपकीषियुइलकेएहा ॥ व  
हुंमासरहेपुरमेंतेहा ॥ प्ररक्तनप्ररुभटक्तहरिाहुं ॥ रथपरवेवकेरमहीतेहुं ॥ ४७ ॥ रोहा ॥  
इतिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमितेहुं ॥ इंदुपुस्थप्रायेप्रभु ॥ भूमानंदकहेहुं ॥ ४८ ॥ इतिश्री  
सहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदसुतभावायाएकसमितमो ॥ प्रायः ॥ ११ ॥ रोहा ॥ अतयज  
रासुतजानिके ॥ प्रभुभिमसेनताइ ॥ याकोवधकरायजो ॥ चोतेरहुंमेंगाई ॥ १ ॥ चोपाई ॥ श्रीशु  
ककहेसभाकेमोइ ॥ द्विजक्षत्रिविश्रामरुनिनभाई ॥ ताविचवेगेएकदिनप्राई ॥ प्राचारजकुल  
वदकहाई ॥ २ ॥ ज्ञानिओरसवधिहेतेहुं ॥ चोओरवेवेधेरितेहुं ॥ सबकुं संनावनकेकाजा ॥ श्री

प्र. १३  
सत्या

न. जी. गोम

॥५७॥

हृद्यप्रसेंचोलतराजा ॥ ३ ॥ प्रभुतिहारेअंशहेजोउ ॥ राजसयसेंयक्तमेंसोउ ॥ संपादनतूमकरोगी  
जवही ॥ कार्यममसिधिहोयोगतवही ॥ ४ ॥ तनुंसेंचरनतवसेवेतोउं ॥ मनसेंधानधरेपुनिकोउ  
वचसेंपदतशगावहितेहा ॥ जन्मकोअंतपावहीतेहा ॥ पुनिस्रुधिपायेवतेहुं ॥ चक्रवरतीनही  
पावेतेहुं ॥ ५ ॥ तोरचरनसेचाकीतेहुं ॥ महीमासबननदेखोतेहुं ॥ कुरुप्ररुस्यंतयहुंकेमाई ॥ तू  
मकुभनेप्ररुनभजेताइ ॥ रोनुहुंकिनिषाहोहितेसो ॥ देहुंमोइओलरावाइतेसी ॥ ६ ॥ सोरवा ॥ उ  
पाधीरहितजोउं ॥ सर्वअंतरजामिसमहज्ञा ॥ स्वपरमतीनहीतोउं ॥ रागद्वेषरहीततूमही ॥ ७ ॥  
चोपाई ॥ याविधतुमहोतोभितोरि ॥ प्रसनतासेवकपरजोरि ॥ रागरहोतकल्पदुमतेहुं ॥ चिंतन  
हारकुंफलदतेहुं ॥ ८ ॥ प्रभुकहेनृपतूमनेएहुं ॥ निश्चेकिनोसोकभगेहुं ॥ इनुंनेहोयगिकिरती  
तारी ॥ सर्वलोकविरव्यातवहोरि ॥ ९ ॥ देवकृषीपित्रस्रुदतेता ॥ हूमप्ररुसर्वजोवहीतेता ॥  
सबकुंइलीनहेमखाहुं ॥ सबनृपतितिकेकरोतेहुं ॥ १० ॥ सबभूमीवज्ञाकरिकेएहा ॥ यज्ञसमा  
जलाहुंतूमतेहा ॥ नितइंदियमुधिधिरहोई ॥ तूमनेवज्ञाकरिजिनेमोइ ॥ ११ ॥ नृपतोरसबभात

हितोत्रं ॥ लोकपालसेंभयेहि सोत्रं ॥ मम आश्रितजनकुंआई ॥ प्रभावजसमेनादिकलाई ॥ जित  
नकुंकोउस्मरथुनाई ॥ देवप्ररुनृपजोतीकहाई ॥ १२ ॥ शुककहेपभुवचसंनिनृपेऊं ॥ प्रकुलव  
दनकृतपसनभयेऊं ॥ दिवा जितननिजबंधुकुणहा ॥ घेरतयुधिष्ठिरनृपतेहा ॥ १३ ॥ तौहा ॥ संत  
युक्ततमहदेवकुं ॥ दक्षिणादिशामिषगाई ॥ मत्स्यनृपसहीतनकुलकुं ॥ पश्चिमदिवाकिमोई ॥ १४  
चोपाई ॥ केकयनृपकृतप्ररक्तनतेऊं ॥ उत्तरदिशामेंघेरेंउतेऊं ॥ मद्रकनृतजोभिमकहाई ॥ उग  
मनिदिशघेरेंउताई ॥ १५ ॥ मोनृपजितितिदिवाधनलाई ॥ युधिष्ठिरकुंदेतवऊंआई ॥ प्रजिततर  
कृतकनिनृपएऊं ॥ करतविचारहीमनमेंतेऊं ॥ १६ ॥ तबहरियाकुउपायकिना ॥ उधवऊंसेंआ  
पजोचिना ॥ भिमप्ररक्तनश्रीहृत्प्रतिना ॥ ब्राह्मणवेशाधरकेप्रवोना ॥ १७ ॥ गयेगिरिब्रजपुरमें  
तेऊं ॥ तरासंधजामांइरहेऊं ॥ प्रतिथिवेलासेसोताई ॥ ताचतगेषोकारीताई ॥ १८ ॥ नृपब्र  
ह्मणहृमतोयमानी ॥ आयेप्रतिथिलेतुमजानी ॥ जोहृमइछेदेऊंताई ॥ तोरकस्याणत्तरनहो  
ताई ॥ १९ ॥ सोरता ॥ प्रसाधुजनतोहोई ॥ ताकुंप्रकरनकछुनाई ॥ तितिक्षररहेजोई ॥ सहनक ॥ ५८ ॥

रेसबसोत्रजन ॥ २० ॥ चोपाई ॥ प्रतिउदारकुंप्रदेननांई ॥ समदरशिकुंपरनकहाई ॥ याकारनसवरा  
सचिनतोऊं ॥ रत्नआदिदेनजोग्यसोत्र ॥ २१ ॥ नाशावंतनरतनुंसेंतेऊं ॥ प्रचलजगविस्तारेनतेऊं  
अतिस्मृथआयेहोइएहा ॥ निंशाकरनजोगपहेतेहा ॥ २२ ॥ विश्वामित्ररणाछुटनकाता ॥ दारकृत  
जूनहरिचंद्रगता ॥ चारालकुकेपुरुवेकाई ॥ छुरिरागायेस्वरगहीमांई ॥ २३ ॥ कुटुंबकृतरेति  
देवतेऊं ॥ प्ररतालिसजोपनकरितेऊं ॥ पायोअनताचककुंदिना ॥ ब्रह्मलोकमेंगयेप्रविना ॥  
२४ ॥ उच्छ्रतिषटमासलुंएऊं ॥ कुटुंबकृतपिशायेतेऊं ॥ अतोथिद्रकुंअनदेइएहा ॥ ब्रह्मगती  
पुनिपायेउतेहा ॥ २५ ॥ शिविज्ञारणागतकपीतकाता ॥ निजमांसदइरूपेनहिरगता ॥ बलिद्विनरु  
पधरहरिकुंदिना ॥ सबधनदेकरकभगनिलिना ॥ २६ ॥ कपीतनिजदाराकृतजोउ ॥ आधिलि  
युज्जरिमांसदइसोत्र ॥ आधेननुकीसम्यताजोई ॥ विरागपाइतपकरसोई ॥ देहजारिकेस्वरगग  
येऊं ॥ बद्रूपवगतिपायेतजोदेऊं ॥ २७ ॥ शुककहेसंनिजराकृतजोउ ॥ स्वररूपपणछांकिंत  
सोत्रं ॥ गताहेयुतरमेंतानी ॥ चिंततआगुंरेखियुमानि ॥ २८ ॥ नृपहोइद्विनरुपधरिजबही ॥ शि

भा. द. न.  
॥५८॥

रमागोत्रो देवेतवही ॥ विप्ररूपविद्युनेधारी ॥ दिनचलिकुंगतसेंपारी ॥ याकिउत्तलकिरतिनेहा ॥  
सवदिशामेषसरिहेतेहा ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ इंदुलियेजाचतपभु ॥ दिनरूपधरघरुआई ॥ घुकाचारकुं  
नहीगनि ॥ बलिवेतेमहीनाई ॥ ३९ ॥ चौपाई ॥ क्षत्रिपरतनिजतेहसेंजोउ ॥ दिनलियुचउतवाकरे  
नसोउ ॥ जिवतकाफलयाकुंनाई ॥ शुक्कहेतरासूतअसगाई ॥ ३९ ॥ इहमभिमअरऊनसेंएऊं  
अतिउदारमतिबोलेतेऊं ॥ दिनइलीतवरमागऊंजोउ ॥ ममशिरसोभिदेवेमोउ ॥ ३९ ॥ प्रभुकहेन  
पहुहुधुधदेऊं ॥ जाचतहेहमत्तमसेंएऊं ॥ हमराजानूधकरनेआये ॥ ब्राह्मणअनेअधिनुही  
धाये ॥ ३९ ॥ यहभिमअरऊनयाकेआता ॥ इनमामाकासूतसाक्षाता ॥ तवरिपुहूरमतानऊंमो  
ई ॥ संनिअतिहसेउमागधसोई ॥ ३९ ॥ बोलतइरषान्तपुनिसोई ॥ हेमंदऊधदेवेगितोई ॥  
ऊधमेंविकलचितहेतेरो ॥ विकलमेंऊधहोहिनमेरो ॥ मधुगंपुरिनिततकेतेऊं ॥ ममउरसें  
सिंधुमेंहेऊं ॥ ३९ ॥ अरऊनऊंमेंअतिचलनाई ॥ वयकरमोमेंजोठकहाई ॥ याकारणजोधा  
नहीएऊं ॥ मोरेतूत्यवलभिमहीतेऊं ॥ ३९ ॥ युंकरहीगदाभिमकुंदिना ॥ इसरिजरासंधकरलिना ॥ ५८ ॥

अ-१३  
नासवं  
॥५८॥

निकसेपुरसेंवाहीरदोउ ॥ समभुमिपरगदेउसोउ ॥ ३९ ॥ विरपरस्परहनतहिएहा ॥ वज्रतूत्यदि  
गदमेंतेहा ॥ गदायुधकिगतिभेदनाना ॥ रायेतमनेफिरतसूताना ॥ ३९ ॥ सोरज ॥ गिरतवि  
जसमदोउ ॥ गदाकिप्रतनाहोतहा ॥ रंगमिनरममसोउ ॥ ऊधयाकोअतिसोहतहि ॥ ३९ ॥ चौ  
पाई ॥ शरतदोउगदाकेतेसे ॥ होतकराकागजदेतेसे ॥ भुजवेगसेंशरेतेहा ॥ कटिकरउरुक  
वपरशितेहा ॥ ४० ॥ चुरणभयेआकफलन्याई ॥ सुंदोनुगजबिचलपदाई ॥ याविधलरिकोध  
नुतदोउ ॥ गदाप्रहारकरेजोउ ॥ लोहसमनिजमुष्टिसएहा ॥ गराचुरणहोगइतवतेहा ॥ ४१  
करतलताउनराचभयेउ ॥ वज्रपातसमकवोरतेउ ॥ प्रभावबलअभ्यासहीभारी ॥ समहेओ  
जऊगलनूधकारे ॥ ४१ ॥ याविधअनुपनूधकिनएहा ॥ ससाविशदिनपर्यंततेहा ॥ रतियोंमें  
सूदकिसाई ॥ रहतहीदोनुएकथलताई ॥ ४१ ॥ एकरतियोंहइमदिगताई ॥ भिमकहेयानूध  
केमाई ॥ जरासंधजिसोनहिताई ॥ संनिवचपभुविचारतताई ॥ ४१ ॥ होकरेजमैथेजोउ ॥ ज  
गराक्षसिसंधितसोउ ॥ पुनियाकेठुकहोवेतेहा ॥ याविधमसुविचारितेहा ॥ ४१ ॥ अरिवध

॥५८॥

कोउपायहेतेहुं ॥ संकेतकरदेखाइतेहुं ॥ शलिदुमहुं किकरधारी ॥ भिमकुं देखावनसोफारी ॥ ४६ ॥  
 जानिसंकेतसोबलवाना ॥ शत्रुपावपकरसजाना ॥ पटकिभूतलपरपुनीताइ ॥ पदपकरी एकपद  
 हिदवाइ ॥ ४७ ॥ गुदसंफारी शररोसे ॥ महागतकारकि शलीजेसे ॥ एकपदउरुचुषणकरिाहुं ॥  
 कोउस्तनखेभाएकेहुं ॥ बाहुलोचनभुएककाना ॥ रुकदौदेखतपुतानाना ॥ ४८ ॥ हनेउमागधर  
 गजकुंतवही ॥ हाहाकारभयोअनितवही ॥ भोमदेगजिधुविधुआई ॥ पुनतपुरमानंदरुत  
 ताइ ॥ ४९ ॥ सोहा ॥ जगसंधकोपुत्रजो ॥ सहदेवकुं प्रभूकीन ॥ मगधदेशकोइशासो ॥ वधनृपलो  
 रिदिनु ॥ ५० ॥ इतिश्रीमत्भागवत ॥ दशमस्कंधमीतेहुं ॥ भिमअरुनहरिविषभये ॥ भूमानंद  
 कहेहुं ॥ ५१ ॥ इतिश्रीमत्मानंदस्वामी शिष्यभूमानंदहतेभाषायोविसमितमो ॥ ध्यायुः ॥ ५२ ॥  
 सोहा ॥ प्रभुगतालोरायके ॥ उचितभोग दोइजोई ॥ नितदेशपतिघेरत ॥ त्रौतेरमिअध्याई ॥ १ ॥  
 जोपाई ॥ शुक्रकहेजुधमेजितेतेहा ॥ सहस्रविश्वअवशुं नृपतेहा ॥ गिरिगुफामेंरुंधितएहुं ॥ मली  
 नअंगवसनरुततेहुं ॥ २ ॥ हजाननुंमुखभुससंतोउं ॥ देखतहरिकुं नृपमबसोउं ॥ घनसमसोमव ॥ ६७ ॥

सनपितधारी ॥ श्रीवलचिद्रुकोस्तभशारी ॥ ३ ॥ चहुंभुजलालकमलसमनेना ॥ सुंदरघसनमूस  
 कृतवेनां ॥ करणकुं उलमकरसुं राते ॥ गदाचक्रकमलशंगुल्लजे ॥ ४ ॥ मुकुटहारकरांकरमाई  
 कटिमैरवलावाहुंरुहाई ॥ वनमालाकृतहरिकुंजोउं ॥ नेनसंनृपननुं पिचसोउं ॥ ५ ॥ जिह्वासेंन  
 नुंचारहीतेहुं ॥ नामासेंनृपतजनुंएहुं ॥ बाहुसंननुं मिलेगेएहा ॥ परेचरनश्रीरनाइतेहा ॥ ६ ॥ सो  
 रवा ॥ दरशनहरिकोपाई ॥ मुदसंपायरुतापगइ ॥ करतस्तुतिशिरनाइ ॥ प्रभुकुंकरतोरिगजा ॥  
 ७ ॥ जोपाइ ॥ शरणागतकेइरहरस्वामी ॥ पाहीजनमसैनमोनमामि ॥ मागधकुंरुहमपुरवतनो  
 इ ॥ रासुहुंसेंगोरायेउताइ ॥ ८ ॥ तामेंअनुग्रहभयोनिहारो ॥ पौरसंस्तुतिकोछुटकारो ॥ रासु  
 ऐश्वर्यमेमतहीइ ॥ नितसुभताननहीनृपसोइ ॥ ९ ॥ तवमायामोहीतहेतेहा ॥ अनितसंपन  
 सतमानितेहा ॥ सुंमृगतृष्णादेखहीवाला ॥ मानतलकेरुदविश्राला ॥ १० ॥ अविवेकीपुरु  
 षसुंतेहुं ॥ राजादिससमानततेहुं ॥ श्रीमदसेअंधहोइहमजेहा ॥ भुजियुंमहोमहीवेरकरेहा  
 ११ ॥ जितनकिइलाउरधारी ॥ निरदइनितरहितहममारी ॥ मूसुरुपखरेआगेतोइ ॥ मदहुंसंह

प्रगिनेनसोई ॥ १२ ॥ लोहा ॥ प्रभुप्रवदपरहीतहम ॥ चरनसमरहीतिहार ॥ कालरूपतुमंनेप्रभो  
 त्रिसैंदियेनवपार ॥ १३ ॥ चोपाई ॥ मृगनृपासमरासहितोउ ॥ अथगोगरूपदेहसेसोउ ॥ सेवनजोग  
 हमइलतनोई ॥ पुनिस्वर्गादिभोगकहाई ॥ इरषामलरहेयामोई ॥ इनकुंमिहमइलतनोई ॥ १४ ॥ अ  
 यउपायकहोहमताई ॥ जासैंतोरचरणकेमाई ॥ रहेसमरतिज्ञानसदाई ॥ जन्मधरेहमतोभिनतोई  
 १५ ॥ वासुदेवहरिहृद्यतोई ॥ वेरवेरनमतेहमतोई ॥ शुक्कहीसवराजानेऊं ॥ स्तवनकीनबंध  
 न्छुटतेऊं ॥ पुनिप्रभुनृपसैंवोलतवानि ॥ अतिमनोहरस्खनिधानी ॥ १६ ॥ नृपममभक्तीइल  
 ततोउं ॥ अत्रसैंददतिहारेहोउं ॥ नृपत्नमोरभजनकाकतेऊं ॥ करनोएसैंनिश्चिनतेऊं ॥ १७ ॥ म  
 गलरूपविचारेउऊं ॥ श्रीगोश्वर्यकामदतेऊं ॥ बंधनरूपहमदेखततेऊं ॥ अंधहोतनरपाइतेऊं  
 १८ ॥ सोरवा ॥ अिमदसैंपाइनाउ ॥ सदस्यार्जनचेननरुष ॥ रावणनरउदास ॥ करअकरनृपव  
 ऊनगिरे ॥ १९ ॥ चोपाई ॥ देहगेहादिनाउवंतजानी ॥ पालोप्रताधर्मउरआनि ॥ करियागनृस  
 यतऊंमोई ॥ पुत्रादिकुंसेवऊंसोई ॥ २० ॥ करखडरपासहोवेआई ॥ समचितविचरोसैंहीतृप्तताई

देहादियेंउदासीहोई ॥ आत्मनिष्ठन्नतधरत्नतोई ॥ २१ ॥ अंतसमेमोमेंमनप्रोई ॥ ब्रह्मरूपपाचो  
 गेमोई ॥ शुक्कहीगताकुंप्रभुऊं ॥ आगपाइतनिकरकेतेऊं ॥ २२ ॥ पुनिनृपस्थानादिलियुंएहा  
 दासदासिकुंघेरनतेहा ॥ परभूषनखनचंदनलाई ॥ नृपउचितसहदेवदिनताइ ॥ २३ ॥ स्नानअ  
 लंकारकृतहीताई ॥ पुनिबहुभोतिअंन्यनिमाई ॥ तांबुलादिकभोगहेतोउं ॥ पुतेउसहदेवहीसो  
 उ ॥ २४ ॥ कष्टऊंसैंछोरायेतेहा ॥ कुरलकृतसोहतनृपतेहा ॥ वृषाकृतकेअंतेतैसे ॥ चंद्रादिप्र  
 हसोहेनैसे ॥ २५ ॥ लोहा ॥ रथघोराश्रुगारिके ॥ मणिकंचनसैंतोउं ॥ तापरनृपवेगयके ॥ देश  
 पगवतसोउ ॥ २६ ॥ चोपाई ॥ हृद्यमंनेछोरेनृपएहा ॥ प्रभुहृतचिततगयेउएहा ॥ हरिहृतदा  
 रसैंकहितताई ॥ सुंहरिकिनकरतसुंताई ॥ २७ ॥ शुक्कहेप्रभुभिमसैंमारी ॥ जरासंधकुंफिरेमुर  
 रि ॥ सहदेवनेपुतेप्रभुऊं ॥ भिमअरकनकृतआयेतेऊं ॥ २८ ॥ इंदुप्रस्थानइशंखचनाइ ॥ अरिती  
 तिसकरुदमुदराइ ॥ रात्रुकुंभयकारकएऊं ॥ संनिप्रसनभइपुरजनतेऊं ॥ २९ ॥ नाज्ञानरासतपायो  
 जानि ॥ पुरनमनोरथधर्महीमानि ॥ भिमअरकनश्रीहृद्यतेऊं ॥ राजाकुंवेदनकरितेऊं ॥ ३० ॥

भा. द. उ.  
॥६२॥

जरासंधकुंमारितोउं ॥ देनकं नाइसवहीनेऊं ॥ प्रभुनेकारतकिजोतोउं ॥ कंनिकेसवयुधिष्ठिरसोउं ॥  
आनंदजलअंखिमेलोई ॥ सुखकुंसेकच्छुबोलननाई ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ इतिश्रीमत्भागवत ॥ इन्द्र  
मस्कंधमितेऊं ॥ जरासंधकुंरने ॥ भूमानंदकहेऊं ॥ ३२ ॥ इतिश्रीमद्भगवानंदस्वामीशिव्यभूमानं  
रुद्रतभाषायां विसृष्टितमोः ॥ ध्यायः ॥ १३ ॥ दोहा ॥ अग्रपुत्रालियेहने ॥ शिशुपालदिततोउं ॥  
किनेक्रियाराजस्युकि ॥ चमोतेरमेंसोउं ॥ १ ॥ चौपाई ॥ शुक्रकहीमागधवधरुपतोउं ॥ हरिमही  
मासंनिराजासोउं ॥ होदिप्रसनवोविहरिताई ॥ गुरुहेतोत्रिलोककीमांइ ॥ २ ॥ लोकापालसनका  
दिकनेऊं ॥ तवप्राग्पाशिरवहतदीतेऊं ॥ सोनमप्राग्पादिनपरसोउं ॥ करतहीतवनेजहानीसो  
उं ॥ ३ ॥ अद्वितब्रह्मतेजतवनेऊं ॥ कर्मसेवधेघरेनतेऊं ॥ अहंमममतिवचननकुंनोइ ॥ अज्ञकुं  
सुतनुंमानरहाइ ॥ तवपुभुतोरकहांकंहोई ॥ अहंममअसेमतिहिसोई ॥ ४ ॥ शुक्रकहेनपंच  
कहीएऊं ॥ यागकरनवरीरुलीतनेऊं ॥ इध्रकुंनेउच्छाहरदिना ॥ चरेविप्रवेदज्ञानप्रविना ॥ ५  
सोरग ॥ भारद्वाजक्यास ॥ समंतुगौतमअसितपुनि ॥ चचनवसिष्टकहास ॥ मैत्रेयकणवकव

अ. १४  
॥६३॥

षट्त्रित ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ विश्वामित्रजैमिनिनेहा ॥ क्रतूवामदेवकमतिनेहा ॥ पैलपरशुरारगर्गनेऊं ॥  
वैशंपायनअथर्वनेऊं ॥ ७ ॥ धौम्यकतुपपन्नरुपरशुरामा ॥ भार्गवआसरीप्रधुछंदाभा ॥ विति  
होचन्नाविरसेनतोउं ॥ अकृतत्रणपुनिरुलीजसोउं ॥ ८ ॥ आरुरेरायेमखमिनेहा ॥ भिष्मद्रोण  
हपादिकनेहा ॥ पुत्रसहीतधतरएतेऊं ॥ महामतिविदरआयेतेऊं ॥ ९ ॥ द्वितक्षत्रिवैशंपुष्टने  
हा ॥ मखदेखनआयेसवनेहा ॥ सवन्पनृपकेप्रधानतोउं ॥ आयदेवयजनमेलोउं ॥ १० ॥ द्वित  
केचनहलसेखेराई ॥ मखभुमेंनृपदिक्षापाई ॥ सराजामकचनकेतेऊं ॥ वरुणयागसमकिनेतेऊं  
११ ॥ दोहा ॥ इंद्रादिकलोकपालही ॥ अज्ञशिवकृतसवदेव ॥ नागविराधरसिधतो ॥ गंधर्वमु  
निरुभेव ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ यक्षरक्षस्वगविन्नरनेऊं ॥ राजापत्निजतसवनेऊं ॥ चारणराजस्युमें  
आये ॥ ससेपनदेखिमुदपाये ॥ १३ ॥ राजाकुंरुत्विजसवनेहा ॥ यागकुंसेजताचतनेहा ॥ प्रचे  
तानुंअमरनेसे ॥ विप्रज्ञावतनृपकुंनेसे ॥ १४ ॥ सोमअभिषेवदिननृपएऊं ॥ कृत्विजसभास  
रकुंनेऊं ॥ पुनतयथाविधिजतनेऊं ॥ पुनिप्रथमपुत्राजोगएऊं ॥ १५ ॥ सोधतसभामिसवयी

वरुण

सोड-७

भा. द. उ.  
॥ ६३ ॥

लितेहा ॥ वक्रतो गणकनपाइतेहा ॥ सहदेवतवबोलतहिएकं ॥ जइपतिसबसंश्रेष्ठहेतेकं ॥ १६ ॥  
वेत्ताकालधनप्रादिकजेहा ॥ देवसबेप्ररुयागहीतेहा ॥ अग्निप्राकृतिमेवहितीउं ॥ सांख्ययोग  
सबविश्वसोउ ॥ १७ ॥ सबमिलियाकोरुपकहाई ॥ विगटरुपसोयाविननोई ॥ श्रीहरमसो जगसब  
जेकं ॥ स्रजहीपालहीहनतहीतेकं ॥ १८ ॥ सोहा ॥ इन्द्रप्रनुग्रहसेजेकं ॥ तपजोगादिकर्मकरही ॥  
फलरुपकभकुंतेकं ॥ पावहीप्रभुदेवनेतो ॥ १९ ॥ जोपाई ॥ याकारणपुतोएकएकं ॥ पुतायेसबज  
नप्रापतेकं ॥ सकलतीचकेजिवनकहाई ॥ वक्रफललेचनदेकंताई ॥ २० ॥ सहदेवनेइतनेवचकीना  
पुनिचुपहोयकेरहेप्रविना ॥ संनिसभामेद्विजयतेहा ॥ निकिनीकीबोलतसबतेहा ॥ २१ ॥ द्विजव  
चसनीयुधिष्ठीरजोउं ॥ हारदसभामदकोलइसोउ ॥ पितचेमविरुलप्रतिहोई ॥ श्रीहरमकुंपुत  
तहेसोई ॥ २२ ॥ प्रभुपदधोईपवित्रपानि ॥ शिरपरधरतकुंंबजतगानि ॥ पितवसनभूषनधनला  
ई ॥ देतहरिकुंमहासुरपाई ॥ २३ ॥ अंखिनजपुरणहोईकं ॥ हरिकुंरेखनसमृथनतेकं ॥ याविध  
नृपनेपुनेउतवही ॥ देखकेकरजोरिननसबही ॥ २४ ॥ नमतहीजयजयबोलिआकं ॥ करतक ॥ ६३ ॥

अ. १४

॥ ६३ ॥

मनकंकीदृष्टितेकं ॥ याविधहरिगुनवरननजोउं ॥ शिशुपालसंनिहीपिनसेसोउ ॥ २५ ॥ उरकेवो  
लेभुजउछारी ॥ कवोरचचप्रतिदुरपाकारी ॥ निरभयहृष्टमकुंकुंननाई ॥ बोलैराजसभाकेमाई ॥ २६ ॥  
सोहा ॥ बलिष्ठगतिहेकालकि ॥ श्रुतिकहतसससोउ ॥ बालवचनसवधकंकी ॥ बुधिभेदपाइतो  
उ ॥ २७ ॥ जोपाई ॥ पात्रज्ञानसभापतीजेहा ॥ बालवचनमतिमानोएहा ॥ पुजनजोगुहृष्टमहेतोउ  
कुंमोनिस्सवचतूमसोउ ॥ २८ ॥ तपविद्यात्रतधरतुमजेहा ॥ ज्ञानसेपापबहाइदेहा ॥ परम  
रूपीब्रह्मनिष्ठजोउं ॥ लोकपालपुजिततूमसोउ ॥ २९ ॥ याविधतूमकुंमपमानकीना ॥ गोपकं  
किपुजाकरीदिना ॥ कुललेखनपुजाजोगपनाई ॥ पुरोउवाकाककुंपाई ॥ ३० ॥ बर्णाश्रमकुलसे  
गिराएकं ॥ सबमिलिवहिनिकासेतैकं ॥ गुणहीनप्ररुनिजइछाचारि ॥ सोकुंहोहीपुताअधि  
कारि ॥ ३१ ॥ जइकुलकुंनृपययातितेकं ॥ श्रापदियेरासजोगनतेकं ॥ सहाहिवृथापानरतजोउं  
पुजनजोगपकुंहोहासोउ ॥ ३२ ॥ ब्रह्मरूपीकतरेशसबनेकं ॥ सागकरिसिंधुडरगरचेकं ॥ ब्र  
ह्मतेजरीभतयामाई ॥ रहीपुजापितवचोरयाई ॥ ३३ ॥ याविधकठिनवचनबक्राकं ॥ बोलतप्र

अ.

मंगलरूपतेऽङ्गं ॥ रहेकं निप्रभु क्लृप्तबोले ॥ फेरवचसुं सिंहकिंतोले ॥ ३५ ॥ **मोरगा** ॥ प्रभुनिंदाकनी  
 एङ्गं ॥ सभासदकानमुदितो ॥ किंनेषलायनतेऽङ्गं ॥ शापदेतशिष्यपालकुं ॥ ३५ ॥ **चोपाई** ॥ हरिहरिज  
 ननिंदाकं निनेहा ॥ तेहिथलसेनभागतनेहा ॥ पुसंधानसेगिरिकेएङ्गं ॥ निचगति कुंपायेउतेऽङ्गं  
 करिकोधपांडुसुनतेहा ॥ सुंजयमल्लकैकयहितेहा ॥ शिष्यपालमारनकुंएङ्गं ॥ उखरेऽप्रायुध  
 धरतेऽङ्गं ॥ ३६ ॥ करिकोधपांडुसुनतेहा ॥ सुंजयमल्लकैकयहितेहा ॥ शिष्यपालमारनकुंएङ्गं ॥ उ  
 खरेऽप्रायुधधरतेऽङ्गं ॥ ३७ ॥ तबनिशंकशीष्यपालतोऽङ्गं ॥ टालखरगपकरिकेसोउ ॥ हृद्यङ्गं  
 केपक्षिकुंएङ्गं ॥ करितिसकारसभांमंतेऽङ्गं ॥ ३८ ॥ तबप्रभु निजजनकुं निचारी ॥ करिगेषद्वरिच  
 क करधारी ॥ आतरिपुडुकोद्विरतोऽङ्गं ॥ शरैलेदिकेभुपरसोउ ॥ ३९ ॥ **दोहा** ॥ होतकुलाहल  
 गृहतो ॥ शिष्यपालवधदेख ॥ इनकेपक्षिन्पसव ॥ भागतजिवनोलेख ॥ ४० ॥ **चोपाई** ॥ च  
 यदेहनि कसीतेतेऽङ्गं ॥ सबलो ककुं देखततेऽङ्गं ॥ प्रभुमें लिनभयेउतेमें ॥ नभगिरेविजभूतल  
 येतेसे ॥ ४१ ॥ तिनजन्मकेवेरसेएङ्गं ॥ निशिदिनचितनकरतहीतेऽङ्गं ॥ ध्यानजन्मकोकारणतो

उं ॥ फेरपारसदभयेउसोऽङ्गं ॥ ४२ ॥ सभासदकनरु त्विजकुंएङ्गं ॥ दक्षिणादेतपुधिष्ठिरनेऽङ्गं ॥ सब  
 कुं विधिकृतपुजनकिना ॥ प्रवभृथस्नानकरतषविना ॥ ४३ ॥ हृद्ययागपुरणकरिएङ्गं ॥ वङ्गमा  
 सरवेनृपनेतेऽङ्गं ॥ पुनिःप्रारणानृपसेहरिलिना ॥ दारःप्रमासकृतगयेप्रविना ॥ ४४ ॥ **मोरगा**  
 परिक्षितहमनेकिन ॥ आख्यानसबविस्तारही ॥ पुनिपुनिजन्मजौलिन ॥ वेकुंरवासमिषिप्रशा  
 पि ॥ ४५ ॥ **चोपाई** ॥ राजसूयकोऽप्रवभृथजोऽङ्गं ॥ स्नानकरिकेयुधिष्ठिरसोऽङ्गं ॥ ब्राह्मणक्षत्रिस  
 भाकिमांई ॥ सोहतताराचंदकिन्मांई ॥ ४६ ॥ स्मरनरःप्ररुप्रमथजोऽङ्गं ॥ राजानेपुजितसबसोऽङ्गं  
 बखानतेमखहृद्यमहीएहा ॥ मुदकृतनिजनिजधामगयेहा ॥ ४७ ॥ धर्मदेवीकलिकोऽप्रमा ॥  
 नाशकरनकुंरुकुलवेशा ॥ दुयेधनश्रीदेखिएङ्गं ॥ योउचकिनहिसहतहितेऽङ्गं ॥ ४८ ॥ शिष्यपा  
 लवधरुपहतयाको ॥ नृपछारायेमखहतजाको ॥ याविधकर्मगाइजनजोऽङ्गं ॥ सकलयापसेहु  
 रहीसोउ ॥ ४९ ॥ **दोहा** ॥ इतिश्रीमत्भागवत ॥ दशमस्कंधमितेऽङ्गं ॥ शिष्यपालवधकिनेजो ॥  
 भूमानंदकहेऽङ्गं ॥ ५० ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामीशिष्यभूमानंददत्तभाषायांचतुःसत्तितमोऽ



भा. द. उ.  
॥ ६५ ॥

॥ **ध्यायः** ॥ १४ ॥ **सोहा** ॥ नवभूथरूपानकी उच्यते ॥ दृष्टिभ्रममंतो उ ॥ मानभंगदुर्योधनको ॥ पंचो  
तेरमें सो उ ॥ १ ॥ **चोपाई** ॥ परिक्षितक हेराजस्ये ॥ आनेदपायेदेवसवे ॥ दुर्योधनविनत्सजो  
किना ॥ मुदपाये नृपकृषीप्रविना ॥ तूमसेगाथासुनिहमते ॥ यामेकारणकहते ॥ २ ॥ शु  
ककहितारपितामहजो ॥ राजस्यकेकाजमें सो उ ॥ रसोईकाजमें भिमवउकिनो ॥ दुर्योधनधु  
नदेनमेचिनो ॥ ३ ॥ सहदेवकुं नृपपुत्रामां ॥ नकुलकुं द्रव्यलावनतो ॥ गुरुपुत्रामे अरकनते ॥  
नृपपदधावनहृदपते ॥ ४ ॥ पिरसनमेवउई पदिजो ॥ दानदेनवउरुमहेसो उ ॥ युयुधान  
विकर्णविदुरतेहा ॥ हाहिंकरुवाक्कि ककततेहा ॥ ५ ॥ धुरिसतरदनआदिकए ॥ यज्ञका  
जमें जोरते ॥ नृपकुंको प्रियइछतएहा ॥ यज्ञकाजचलावततेहा ॥ ६ ॥ **सोरवा** ॥ सभासदअ  
रुरुत्वीज ॥ शायानामवकुं पुते ॥ संदरवचसें दिज ॥ दक्षिणादेवतनृपपुनि ॥ ७ ॥ **चोपाई** ॥  
विश्वपालहरीपदपाइतवही ॥ प्रवभूथकरतगंगाप्रितवही ॥ मृदंगशारवणवधुधकारा ॥  
गोमुखआनकवानेप्रचुग ॥ ८ ॥ नरतकिनरतकरेजामां ॥ गायकगानंकरेमुदपाइ ॥ विणावे

अ. १५

॥ ६५ ॥

एगुतालिनादजो ॥ सपरसकरतदिवकुं सो उ ॥ ९ ॥ विचित्रध्वजपताकाजे ॥ तेहिजतरथअरुग  
तहेते ॥ हयनरकतचतुरंगसेना ॥ नातभयेकोउवेगिमेना ॥ १० ॥ यइरुसंजयकांभोजतो ॥  
कैकयकोशुलकुरुपुनिसो ॥ भूमिकुंकापावतएहा ॥ युधिष्ठिरपिछेगयेतेहा ॥ ११ ॥ छितरुत्वीज  
अतिवेदउचारि ॥ देवकृषीगंधरवकुल्यारि ॥ वसनभूयनलेपनसेंए ॥ अलंकारनृतनर  
त्रिये ॥ १२ ॥ चक्रविधरससेंखेलनगरी ॥ सिंचतअरुलेपतहेभारी ॥ गोरसतेलगंधतलनेहा  
हरदिकुंकुमलेनराहा ॥ लिंपतवेगाकुं पुनिए ॥ नरकुं लिंपतखेलतते ॥ १३ ॥ चक्रंओरपु  
रुधरहेहीषेरी ॥ रथसेंआईनारिनृपकेरी ॥ याकुंजलसारकतहिने ॥ मामाकतसखाकतने ॥  
१४ ॥ सलजहाससेंकुलेताके ॥ मुखअतिसोभतहेत्रियाके ॥ रतिं कुंमेंजलभरिकेएहा ॥ छिर  
कतदेवरसखाहीतेहा ॥ १५ ॥ **सोहा** ॥ भिजवसनमेंअगसव ॥ दरशितहोतहिताई ॥ छुटिशि  
रकेशुउछाहसं ॥ फुलगिरतयामां ॥ १६ ॥ **चोपाई** ॥ याकुं देखकामीनरजो ॥ पायक्षोभका  
मसेंसो ॥ रथपरवेउतराजाए ॥ सोहननिजनारिकृतने ॥ १७ ॥ पत्निसेयातयज्ञकहाई ॥

३०

कृत्विन्नवभृथुंसेकराई ॥ आचांतस्नानगंगासांई ॥ द्यौपदिहूतकरपुजाई ॥ १७ ॥ सहितनगारे  
 उडुमिनेऊ ॥ देवरुषीकरतकुलरुस्तिऊ ॥ तेहिथलस्नानकरेनरकोउं ॥ महापापसेछुटेसोउं ॥ १८ ॥  
 द्विहिरवसननविननृपधारी ॥ परभूषनलेकेभयेंसारि ॥ अतकृत्विनसभासदजोउं ॥ ताहिंकुंपु  
 जतगजासोउं ॥ २० ॥ ज्ञातिबंधुकरुद नृपतेता ॥ प्रीरमिन्नमुखमेंधेंतेता ॥ ताकुंभिपुजननृपए  
 ऊं ॥ करतूत्यकातिधरसबतेऊं ॥ २१ ॥ मणिकुंडलसूत्रपगिउंधारी ॥ अंगिउंहारडनालाभारी  
 कुंडलकेराकरहेमुखनारी ॥ कनकमेखलाकरिसंगारी ॥ २२ ॥ पुनिःप्रतिशिलवतकृत्वीजजोउं  
 वेदहितानसभासदसोउं ॥ छुट्टेचैराक्षत्रिदितनेहा ॥ देवरुषीराजापिन्नतेहा ॥ २३ ॥ लोकपाल  
 अन्नचरकृतनेऊं ॥ पुजेनृपसबसोभहीतेऊं ॥ प्राग्यामागिनृपसेंएहा ॥ निजनिजतामगयसब  
 तेहा ॥ २४ ॥ सोरवा ॥ मुखपुरनभयोताई ॥ त्रिभिनयातकौबस्वानि ॥ ज्युःअमृतकुंयाई ॥ मनुषत्र  
 प्रनहोतजिमि ॥ २५ ॥ जोपाई ॥ पुनिनृपहरिविजोगभयपाई ॥ रवतकरुदकुंघंमहीलाई ॥ र  
 हेहरिनृपधियकरनेऊं ॥ सांवादीकतडविरकुतेऊं ॥ कुरास्थलिऊंमंघेरेउं ॥ श्रीहरमरहेउस्थल ॥ ६६ ॥

एऊं ॥ २६ ॥ राजकयुरुपमनोरथजोउं ॥ सागरसमडुस्तरतरिसोउं ॥ श्रीहरमकेवलऊंसेंएऊं ॥ न  
 चित्तहोपरहेनृपतेऊं ॥ २७ ॥ एकदिनपांरुकेग्रहमोई ॥ अज्जुतसोभादेखिताई ॥ राजकयकीम  
 हिमातोउं ॥ डयोधनतपदेखिसोउं ॥ २८ ॥ करःअकरनरऊंकेनृपतोउं ॥ ताकिसूधिहेकलुसोउं  
 सोसबमयूसानवरचिगेऊं ॥ याविधगेहमेंडुपदितेऊं ॥ सेवतनिजपतिऊंकुंतेऊं ॥ जामिशूक  
 डयोधनरेऊं ॥ २९ ॥ सोहा ॥ सागेहमेंश्रीहरमकी ॥ नारिसोलेहजार ॥ चलतहीपदभुषनःअती  
 वाजतकृतपनकारा ॥ ३० ॥ जोपाई ॥ कुचकुंकुमसेंरकराहा ॥ कुंडलकेराधारीमबदारा ॥ मुख  
 कित्रोभाहेःअतिभारी ॥ याविधहरमकीसोभहीनारि ॥ ३१ ॥ रचीतमयदानवसभामोई ॥ युधी  
 छिरवेवेबिचःआई ॥ हरमकृतबंधुसेंविटाई ॥ कंचनःआसनपरकराई ॥ स्तवनकरतबंधुसब  
 ताई ॥ सोहतःप्रीरईडुकिनाई ॥ ३२ ॥ डयोधनःअतिहिःअहेकारी ॥ किराःअरुमालाउरधारी ॥  
 अंसिकृतकरउल्लारतएऊं ॥ वंधततःआतसभामितेऊं ॥ ३३ ॥ स्थलकुंजलमोनिकेएऊं ॥ वस  
 नसेकोचिउेतहितेऊं ॥ स्थलकिःभ्रातितलमेंजाई ॥ मयमायामोहितगिरिताई ॥ ३४ ॥ भिमह

रिनारिःशोरनृपज्ञोऽं ॥ गिरेऽयोधनदेखिसोऽं ॥ नृपनेवारेतोभिहा ॥ हृदमधेरिनहसतहितेहा ॥ ३५ ॥  
 लजिनवदननिचरोषेतलही ॥ चुपकरिहस्तिनपुरगयेतवही ॥ हाहाकरतविवेकिजोऽं ॥ प्रतिउ  
 दासभयेनृपहिंसोऽं ॥ ३६ ॥ भुभारहरनेविजहितेऽं ॥ बोइहरिमिमहाससैतेऽं ॥ कलूनबोलतसु  
 खसैतेहा ॥ निजहगसैभूमाइतेहा ॥ हृदमनेरचेमायासोऽं ॥ निमित्तमात्रमयदानवज्ञोऽं ॥ ३७ ॥  
 दोहा ॥ परिक्षिततुममोसंकिवै ॥ घृष्टमकोउतरदिन ॥ इयोधनकिइष्टमती ॥ राजसूयमेंमोकीन  
 ३७ ॥ इतिश्रीमत्भागवत ॥ इशामकेधमितेऽं ॥ इयोधनकिमानभंग ॥ भूमानंदकहेऽं ॥ ३८ ॥ इ  
 तिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदहृतभाषायोपंचसप्तितमोऽध्यायः ॥ ७५ ॥ तोडा ॥ सात्व  
 तइहिसंध्याममें ॥ सुमनगदासैतोऽं ॥ प्रद्युमनरणसंनिकसी ॥ छोतेरमिदेसोऽं ॥ १ ॥ चोपाई ॥ शु  
 ककहेःशोरहृष्टकिजोऽं ॥ लिजामोभयतोहनिकंतुसोऽं ॥ शिशुपालसखाशाल्वहितेऽं ॥ आ  
 येरुस्मीलियाहमितेऽं ॥ २ ॥ तइनेजितेऽं ॥ तरासूतआदिसवतेऽं ॥ सबसंनतशाल्व  
 निमलिना ॥ करेजिमिमेंतादवविनां ॥ सबनृपदेवोसामृथमेरी ॥ मूरकरतपतिज्ञापेरी ॥ ३ ॥ शि ॥ ६७ ॥

व-आगधनकरतहिण्डुं ॥ एकमुविधुलपायकेतेऽं ॥ आशुतोषनुमापतिजोऽं ॥ एकवर्षेवरदे  
 वतसोऽं ॥ ४ ॥ तबशाल्ववरमागतएऽं ॥ तइकुंभयकरविमानतेऽं ॥ सरुप्रसरनरगोधरवतेता  
 उरगराक्षसमिलिसवतेता ॥ याकुंतोरिसकेनहीकोऽं ॥ हमइलेसांतावेसोऽं ॥ ५ ॥ तबशिवकुं  
 नेआगपादिना ॥ मयनेपुरतवरचधुविना ॥ नामसौभजोहमयपुरएऽं ॥ रचिदिनेशाल्वकुंतेऽं  
 ६ ॥ सोरता ॥ तमरूपसवंगएऽं ॥ पायविमानशाल्वसोऽं ॥ गयेद्वारवतितेऽं ॥ तइहृतचेरसंभार  
 त ॥ ७ ॥ चोपाई ॥ बरिसेनालेशाल्वजोऽं ॥ दारमतिकुंघेरतसोऽं ॥ वादिप्ररुतपवनथैतेता ॥  
 तोरिशरतशोरनिकेता ॥ ८ ॥ पुररुगेहदरवाजातेऽं ॥ गेहप्रकाशितुंगिरततेऽं ॥ वेमानसैव  
 रषतहिबाणा ॥ दुमचनप्ररुनागपाषाणा ॥ ९ ॥ गिरतकराकतजलकिधारा ॥ चक्रवायुरजन्  
 तदिशासारा ॥ यावीधमोभसंपिडापाई ॥ हृष्टमकिद्वाराप्रतिकहाई ॥ त्रिपुरकुंसेमहीसवतेसं ॥  
 पुरिसखनहिपावतसै ॥ १० ॥ प्रजानितपिडातसवतेहा ॥ देखप्रद्युमनसमृधतेहा ॥ मतिररना  
 युक्हितनताऽं ॥ महारथिवैवेरथमिआई ॥ ११ ॥ सांवसासकिप्रकुरजोऽं ॥ हारदिकचारुदेम

भा. द. उ.  
॥ ६८ ॥

हिसोउं ॥ भानुविंइष्टुकसारणतेहा ॥ गदंअरुःप्रोरक्तधासवनेहा ॥ १३ ॥ रथयुधनकेपालकतेइं  
धनुषवक्ररक्तसवनेइं ॥ रथगतवाजिपालाजिता ॥ चक्रुःप्रोरपेरिनिकसेनेता ॥ १३ ॥ दोहा ॥  
नुधतइसंशालवक्रुकी ॥ वरततअतिवदतेइं ॥ सुंदेवनसेअसरकी ॥ रोमहरखकराइं ॥ १४  
चोपाई ॥ शालवकिसबमायातेहा ॥ दिअअरुसेप्रद्युमनेहा ॥ नात्राकरिशारेक्षणमांई ॥ निना  
तमसरतइंकिमाई ॥ १५ ॥ पचिसवाणप्रद्युमनशरे ॥ साल्वसेनपालककुंमारे ॥ वैरिग्रथितोत्र  
रमांई ॥ स्वर्णपुंखमुखमेंलोहताई ॥ १६ ॥ शतवाणशालवकुंमारा ॥ एकएकसबभरपरशारा ॥ द  
शादशासरसेसारथीतेता ॥ तिनतिनमारेहपहेतेता ॥ १७ ॥ जइशालवकिसेनादोउ ॥ प्रद्युमनक  
मंवरखानिसोउं ॥ पुनिमायाशालवनेकिना ॥ ज्ञानतनहिसवतइप्रविना ॥ १८ ॥ बक्रुपरएकरु  
पकबुएइं ॥ कबुदरशतहेकवुनतेइं ॥ कबुभुमिपरकवुनभमांई ॥ कबुगिरिकेपरकबुतलताई  
१९ ॥ जलतहिइंधनचक्रकिनाई ॥ भ्रमतसौभकिगतिनतनाई ॥ जोतोस्थलमिसोभैदराई ॥  
शेनअरुशालवक्तताई ॥ २० ॥ सोरना ॥ ताकुंजादवतोउं ॥ बाणमारतअनित्तल्य ॥ लागा

अ. ७६  
॥ ६८ ॥

तताकुंसोउं ॥ सर्यकिरणकिमाईमच ॥ चोपाई ॥ सर्पइंकेविषसमसबएइं ॥ सरसेपिशयावन  
तेइं ॥ २१ ॥ शालवकेसेनापतिनेता ॥ सरसेपिरतजइकुंतेता ॥ जइविरपिशयायेतोउं ॥ राणभुमी  
नहीतजतहेसोउ ॥ २२ ॥ अमासशाल्वकोद्युमनगना ॥ पैलेप्रद्युमनपिरितताना ॥ प्रद्युमनकुमा  
रिगदंआई ॥ कालालोहकिगरजतताई ॥ २३ ॥ गदाउरतोरिशारेजबही ॥ प्रद्युमनमुरछायेतब  
हि ॥ धर्मज्ञानदाकककततेइं ॥ राणसेअोरथलजेगयेइं ॥ २४ ॥ ज्ञानपाइमुरतएकपीछे ॥ प्रद्यु  
मनबोअतसारथिसें ॥ राणइंसेंअसुथलमोयलिनो ॥ अतिबुरोसुततूमनेकिनो ॥ २५ ॥ ज  
इकुलमेंतन्मैथेंतोउं ॥ राणसेभागसंनेनसोउ ॥ नपुंसकचितकतनेतोइ ॥ अतिवदकलंकल  
गाइमोइ ॥ २६ ॥ रामहृदमइंकेदिगताई ॥ क्याउतरदेवेगेताई ॥ हसतभ्रातकीदारातेहा ॥ नि  
श्रेकायूरकहेगितेहा ॥ शबुसेउरपायेउचिरा ॥ राणमेंकुंनधरेतूमधिरा ॥ २७ ॥ सुतकहेधर्म  
ज्ञानमेंतोइ ॥ राणमेंसंनिकासेउतोई ॥ रथिराणमेंमुरछितहोतावे ॥ सारथितबयाकुंबचावे  
२८ ॥ रथिकतइं कुंरवतहिजोउं ॥ यासवतानेहमनेसोउं ॥ अरिगदासेमुरछापाइ ॥ तवतो

भा. द. उ.  
॥ ६८ ॥

कुंहुमलिनेबंवाइ ॥ १० ॥ दोहा ॥ इतिश्रीमत्तभागतवत ॥ दशमस्कंधमितेऊं ॥ प्रद्युमनमुरछापाइही ॥ भू  
मानंदकहेऊं ॥ ३० ॥ इतिश्रीसद्वतानंदस्वामिशिष्यभ्रमानंददहतभाषायांघटसमितयो ॥ आप ॥ १६  
दोहा ॥ बडुमायाविशालकुं ॥ हनेहृदमनेतेऊं ॥ सौभचुराणकिनआयके ॥ ससोतेरमितेऊं ॥ १ ॥ सो  
पाई ॥ शुक्रकहेप्रद्युमनजलमोई ॥ नाईकमरवेधधनुचंगई ॥ प्रद्युमनकहेसारथिताई ॥ द्युमनेकेरी  
गमोइलेताई ॥ २ ॥ निजसेनाकुंमारतजानी ॥ अमृष्टबाणमारतसोतानी ॥ चौवाहनचौसरमेमान  
एकबाणपुनिकतपरडारा ॥ ३ ॥ धजाधनुषएकरकफतोरि ॥ एकडारकुंसेशिरकटगोरी ॥ गदसो  
वसासकिआदिजेहा ॥ शाल्वसेनकुंहनतहीतेहा ॥ ४ ॥ सबसेनाकेशिरकटाइ ॥ सौभसेगिरे  
सागरमोई ॥ जडशाल्वकोघोररुधजतऊं ॥ ससावित्रादिनरातिगयेऊं ॥ ५ ॥ शुक्रजीकहेयुधिष्ठिर  
राजा ॥ हृदमबोलायेथेप्रसुकाजा ॥ गजकयेपुरणकरिएऊं ॥ शिशुपालकुंमारकेतेऊं ॥ ६ ॥ सो  
रगा ॥ कुरुअरुपुनिकितोउं ॥ एथाअरुपृथाकेसतकी ॥ आग्यामागतसोउं ॥ घोरसकनंदविवि  
आये ॥ ७ ॥ सोपाई ॥ चोलतचिंताजतमगमोई ॥ बलरुतहमइंदपुरआई ॥ शिशुपालकेपक्षी ॥ ६८ ॥

अ. ११

दृषतेहा ॥ निश्चेद्वारमतिहनेतेहा ॥ ८ ॥ युंउरचिंतनितपुरआई ॥ देखननिजजनडरिवतामोई ॥  
सौभअरुशाल्वकुंजोई ॥ पुररक्षणबलपेरितसोई ॥ ९ ॥ पुनिसारुकसेबोलेएऊं ॥ शाल्वहिगरथ  
हाकममतेऊं ॥ मायाविहेशाल्वजेहा ॥ नहीरखनाउरचिंतातेहा ॥ १० ॥ युंकिनसतकुहरिनेजबही  
रथपरवैविहाकेतवही ॥ गरुडध्वजरथआयेतेऊं ॥ दोनुंसेनादेरवततेऊं ॥ ११ ॥ हृदमविलोकिया  
जवगजा ॥ मरणतुल्यसबसेनसमाजा ॥ सारुककेपरडारततेऊं ॥ अतिवेगजतसोमपुंऊं ॥ १२  
आतसोनभमैविजकिनाई ॥ हरिसरसेंशतटुककीनताई ॥ सोलसरशाल्वकुंषधुमारा ॥ सौभअ  
मतनभइंमैडारा ॥ १३ ॥ सौभस्यामचदलसमकोना ॥ कर्यउपमाहृदमकुंदिना ॥ बाणसमुहचला  
वतएऊं ॥ नुंकिरणोरविऊंकितेऊं ॥ १४ ॥ दोहा ॥ शाल्ववहरिकेहस्तपर ॥ करतगदापरहार ॥ त  
मणेसेसाई ॥ गीरे ॥ भयेउहाहाकार ॥ १५ ॥ सोपाई ॥ अतिगरजीकेशाल्वएऊं ॥ युंबोलतहरिऊंसे  
तेऊं ॥ मुदतमनेममसखाकितेहा ॥ दागकुंहरगयोहितेहा ॥ १६ ॥ असावधानहमिऊंसेतेऊं ॥ स  
भामभेमारेउतेऊं ॥ अजितपणकेमानितोइ ॥ क्षणएकटिकतोमारुंसोई ॥ १७ ॥ प्रभुकहीवथा

भा. २. ३.  
॥ १७ ॥

बोला मतमंदा ॥ कालनतिकनही देखत गंदा ॥ शुभामोई सामृथदेखावे ॥ निजबलमुखमें कबुनगावे  
१८ ॥ युं कही गदा लिने उदारा ॥ जालवके कं उपरमारा ॥ मुखसे रुधिरवमत हिएऊं ॥ अतिकंपकृत  
होत हेतेऊं ॥ १९ ॥ गदानिहृत्त्रिपायेउतवही ॥ अंतरध्यानजाल्वकरितवही ॥ एकमुरतपिलेनर  
आई ॥ किनवेदनहरिकुं शिरनाई ॥ २० ॥ रुदनकरत बोलेउसोई ॥ देवकिनेपववायेमोई ॥ हेहृत्प्रपी  
तातीरतेऊं ॥ बांधकेलाये जाल्वतेऊं ॥ २१ ॥ अचयाकुं मारेगेतेसें ॥ कसाईभेरवधकरहीतेये ॥ विधी  
तवचसंनिहृत्प्रएऊं ॥ निजतातपरस्याअतितेऊं ॥ २२ ॥ मानुषरितदेखावनकाजा ॥ घाहतजनसु  
बोलतगजा ॥ देवअसरनहिततेजाई ॥ याविधबलधुरविरकहाई ॥ सुखबलजालवतीतिताई ॥  
कालगतिबलवानकहाई ॥ २३ ॥ सोरगा ॥ युंबोलतगोपाल ॥ इतनेमेंजाल्वआये ॥ वसुदेवहीत  
तकाल ॥ लायकेहृत्प्रसं बोलि ॥ २४ ॥ चोपाई ॥ हृत्प्रतोरतातयहलाई ॥ तवदेखतमारेगेताई ॥  
जोतोरियामृथकछहोई ॥ रक्षाकरयाकुं कहुंतीई ॥ २५ ॥ याविधकहीमायाविणुं ॥ वसुदेवशिरस  
रगसेंतेऊं ॥ कारकेजाल्वलेगयेउं ॥ नभसोभमेंजाइछुपेउं ॥ २६ ॥ सिधज्ञानिहेतोभिएऊं ॥ तातस्वद

अ. ११

॥ १७ ॥

वज्ञहोइतेऊं ॥ मानुषकेस्वभावहीमोई ॥ इंचरहे एकमुरतताई ॥ २७ ॥ सबआसरीमायाजानी ॥ जाल  
वविस्तारेपैश्यानि ॥ इतअरुतांतकलेवरदोउ ॥ स्वप्नसाईनदेखतसोउ ॥ नभचरसोभविमानकि  
मोई ॥ वेतेदेखिकेप्रभुताई ॥ २८ ॥ पुर्वपरअनुसंधानतेऊं ॥ ज्ञानतनाहिरुषीजोतेऊं ॥ प्रभुकुंमोहभ  
योकरहेतेहा ॥ निजवचरूतकरतहेतेहा ॥ २९ ॥ शोकमोहभयअभयतेजा ॥ अज्ञानिमेंहेसचनेता  
ज्ञानविज्ञानतेश्वयंतेऊं ॥ असंख्यामरहहीतेऊं ॥ ३० ॥ जिनकिचरनसेवासेआया ॥ आत्मविद्या  
अतिवृधिपाया ॥ तासेंस्थूलरूपाकारवडवतेऊं ॥ सेतनाज्ञाकरतसचनेऊं ॥ जिनकुंसेविपरमपद  
पावे ॥ सोप्रभुमेंमोहकुंआवे ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ शास्त्रसमुहमेंजालव ॥ मारततडकुंतीई ॥ याकोधनु  
षकटारत ॥ जारऊंसेप्रभुमोई ॥ ३२ ॥ चोपाई ॥ सोभकवचराबुकेतोउं ॥ तोरिदेतगदासेंदोउ ॥ ग  
दाप्रभूनेपेरउतेहा ॥ सोभकिसहस्रदुककिनतेहा ॥ ३३ ॥ गिरेउचुरणहोईजलमोई ॥ मोभतजिज्ञा  
लवभुतलआई ॥ गदाउगाइप्रभुदिगोधाई ॥ प्रातसमीपेजिप्रचलाई ॥ ३४ ॥ गदासहीतवाऊंते  
वयाकी ॥ सरसेछेदिशरतताकी ॥ प्रलयकालसरजतल्पतेऊं ॥ जालवमारनपकरतेऊं ॥ ३५ ॥ अ

कंसहितउदयाचल्लैसै ॥ सोहनप्रभुचक्रकृततेमे ॥ किरिटकुंडलकृतशिरयाको ॥ देतउशाइचक्रसे  
 ताको ॥ ३६ ॥ इंदुवनचूनाकरसाई ॥ हाहाकरतदेखितनतोई ॥ शालवसौभहनेजवरोउं ॥ इंदुभिदेव  
 वजावतसोउ ॥ नितसरखापरलोकसखदाई ॥ देतवक्रअतिरिमकतधाई ॥ ३७ ॥ **सोहा** ॥ इतिश्रीम  
 तभागवत ॥ दशमस्कंधमितेऊ ॥ शालवसोभलोनुहने ॥ भूमानंदकहेऊ ॥ ३७ ॥ **इतिश्रीसद्व्रतानंद**  
**स्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषावासप्तसमितमोः** ध्यायः ॥ ११ ॥ **सोहा** ॥ देतवक्रविडुरथहनी  
 प्रभुरमतपुरमाई ॥ कृतहनेबलदेवने ॥ अगोतेरअधाई ॥ १ ॥ **चोपाई** ॥ शुक्रकहेशिशुपालस  
 खाई ॥ शालवपौदुकतिनुकहाई ॥ याकुं परलोकमिसखदाई ॥ इमतिदेतवक्रएकआई ॥ २ ॥ ग  
 दापालिक्रीधियदयाला ॥ पदसेभुंकंपकरविकाला ॥ अतिबलिकुं प्रभुदेखितवही ॥ गदाधारि  
 नितकरमेंतवही ॥ ३ ॥ रथसेउतरिरुंधततेसे ॥ सागरकुंतरुंधहितसे ॥ तवदंतवक्रगदानगाई  
 बोलतहरिदिगमदहिवहाई ॥ ४ ॥ तिनतन्मसेदुरततोई ॥ अवममहगरिगआयेसोई ॥ मामा  
 कृतबंधुतमहोई ॥ मित्रघातिमारैगोमोई ॥ ५ ॥ चेरवरमंगलममएऊ ॥ सनकादिकसेपायेतेऊ ॥

चनत्स्यममगदाहिजेहा ॥ पेलेहममारैगेतेहा ॥ क्षत्रिधर्मकिसेवाएऊं ॥ समनत्स्यजानोतूमतेऊं  
 ६ ॥ **सोखा** मित्रवल्ललहमहोई ॥ बंधुरूपअरितोयमारी ॥ मममित्ररणासोई ॥ छुटेगेव्याधितनकि  
 तनुं ॥ ७ ॥ **चोपाई** ॥ याविधकजीनवचनसेएसे ॥ हरिकुंहनतगजलकरितेसे ॥ गदाहृदयकेशिरमे  
 मारी ॥ सिंहनादपुनिकरतउचारी ॥ ८ ॥ हनेगदाऊंसेंप्रभुतोउं ॥ चलतनहीसंप्रामसेसोउ ॥ पुनिया  
 केस्तनविचहरिहा ॥ कौमोदकिगदमारततेहा ॥ ९ ॥ गदाहृदयतोरशरियाको ॥ रुधिरवमन  
 करतमुवताको ॥ घानरहितधरेधरनिाऊं ॥ करपदकेराविरवरकेतेऊं ॥ १० ॥ याकोसुकुश्मतेनही  
 जोउ ॥ निकसिपायेप्रभुकुंसोउं ॥ अदभुतसवतनदेखतताई ॥ शिशुपालकेवधकिसाई ॥ ११ ॥ ता  
 कोआतविडुरथआई ॥ आतसोकव्यापीउरमाई ॥ शालवउरगलइमारनधाये ॥ आतहरिदिगसा  
 सभराये ॥ १२ ॥ क्षरधारसमचक्रहरिलिना ॥ किरिटकुंडलकृतशिरकरदिना ॥ देतवक्रसोभशा  
 च्वमारी ॥ औरसेमरेनकधाचारी ॥ १३ ॥ **सोहा** ॥ करनरमुनिसिधचारण ॥ गंधर्वउरगआई ॥ वी  
 खाधरअप्यराअरु ॥ पित्रतक्षकिनराई ॥ १४ ॥ स्तवनकरततमगातसो ॥ प्रभुपरफुलवरसात ॥

तासंत्वननऽक्ततही ॥ नितपुरिङ्गंमंआन ॥ १५ ॥ चोपाई ॥ लिन्नासेअतिबलिकुंएऊं ॥ नितलेनधी  
 हृष्टमहीतेऊं ॥ एकवेरमागधजितेऊं ॥ तवअज्ञकहेहरिहारेउं ॥ १६ ॥ विडरथअंतपुतनाहितेऊं ॥  
 देनकुलहनिहृष्टउतेऊं ॥ मारनसेनित्तनभयेजबही ॥ सुतवचलकुंवलह्नितवही ॥ १७ ॥ कुरुपां  
 दुंऊधउद्यमसंनि ॥ मध्यस्थबलतिथंमिश्रापुनि ॥ गयेषुभासमीपितृकृषीदेवा ॥ स्नानकरिचपत  
 कीनतेवा ॥ १८ ॥ सरस्वतिप्रवाहकेताई ॥ चलेउविप्रऊंसेविताई ॥ पृथुकविडसरत्रितकुपा ॥ सुद  
 र्शनविज्ञालअनुपा ॥ १९ ॥ ब्रह्मतिथंपुनिचक्रहितोउं ॥ प्राचिनसरस्वतिअरुसोउ ॥ यमुनापीछे  
 तिरथतेता ॥ गंगाकेपिछेपुनितेता ॥ २० ॥ मोरगा ॥ इतनेतिथंकरेउं ॥ निमिषारणपआवतसो ॥ जे  
 हिस्थलकृषीतेउं ॥ रहीकेयागकरतसदा ॥ २१ ॥ चोपाई ॥ आयेरामजानिमुनिएऊं ॥ मुदक्ततउ  
 ननमतसबनेऊं ॥ यथाविधिपुजाकिनेजबही ॥ वेवेवलआसनपरतबही ॥ २२ ॥ कृषीसहीतअ  
 रचितबलएऊं ॥ रोमहरथणकुंदेवततेऊं ॥ आसनसेउतेनहीजेऊं ॥ नमनअरुकरजोरेनएऊं ॥ २३ ॥  
 तोकृषीसेउंचआसनकिना ॥ तापरकोपतवलपविना ॥ हेविषप्रतिलोमकुंतोउं ॥ उंचआसनकुं ॥ १२ ॥

गाथ

दिनेसोउ ॥ २४ ॥ धर्मपालसबअपनेतेऊं ॥ तिनकुंमारनजोगहितेऊं ॥ आसशिष्यहोइपदेउएऊं  
 धर्मशास्त्रपुगणामवेऊं ॥ २५ ॥ विनयअरुडापनहीनतोउं ॥ वृथापेरितमानिहेसोउ ॥ इतिहासआ  
 दिगुणहेतेता ॥ जुंनटवाकेहीनसबतेता ॥ २६ ॥ आअवतारधरेहेतोउं ॥ तिनकोकारणकऊंमेंसोउ  
 धर्मदेखातपातकीतेहा ॥ मोरेमारनजोगहितेहा ॥ २७ ॥ इतनेवचनकहीचलतोउं ॥ असतऊंकी  
 वधनतीहेतोउ ॥ होचनकुंकोमेरतनोई ॥ कुशाऊंसेदेतशिरउडाई ॥ २८ ॥ मोरगा ॥ सबमुनिमनमी  
 इखामके ॥ हाहाकरिपोकार ॥ बलकुंकहेअधर्मतूम ॥ किनयुंकहीरिगावार ॥ २९ ॥ चोपाई ॥ इ  
 नकुंब्रह्मआसनहमदिना ॥ गेगरहितआयुस्पुनिकिना ॥ अज्ञानेहसमारउएऊं ॥ ब्राह्मण  
 वधसमभयेउतेऊं ॥ ३० ॥ ब्राह्मणवधनदिकरनोतोउं ॥ तीरवचनदेवेदमिसोउं ॥ तवआगपापा  
 लोत्समनवही ॥ लोकसबेत्युकरेगंतवही ॥ ३१ ॥ बलकहेपापनिवारणएऊं ॥ कहीअचकरनजोगप  
 हितेऊं ॥ लोकअनुंपहऊंकेकाता ॥ करेगेप्रायश्चितमुनिगता ॥ ३२ ॥ इतिकचऊंआवरदातोउं ॥  
 बलअरुइंइज्ञानहीसोउं ॥ पुनिइलिततोसोकऊंमोई ॥ सबविधकरिदेवेहमसोई ॥ ३३ ॥ बेलअ  
 सारवा



भा. द. न.  
॥ १३ ॥

रूषीकहेरामजोई ॥ तव प्रसू विर्यं मसु प्रम ॥ वचन हमारे सोई ॥ ससहोवे सवयुं करुं ॥ ३४ ॥ सो  
पाई ॥ पितासुतरुपहीनहेजोउ ॥ याविधवेदवचनहेसोउ ॥ रोमहरषणांऊकोसुततेहा ॥ उग्र  
बाहोयेगितेहा ॥ ३५ ॥ तुमकुंपुराणवक्ताण ॥ बलईद्विआयुषवानतेऊं ॥ प्रवजोइछितहोय  
सोकहऊं ॥ करदेवेहमसोकलनहऊं ॥ ३६ ॥ पापनिवारनजानतनाई ॥ सुंत्तमकहोसोकंयेताई  
रूषीकहीईवलकीसुततेहा ॥ बलननामहीदानवतेहा ॥ ३७ ॥ पर्वपर्वऊंमेंसोआई ॥ जतहमा  
रादितवत्ताइ ॥ पापिकुंमारोत्तमजोई ॥ किनेहमारिसेवासोइ ॥ पाचरुधिरवितमुचहो ॥ जोउ ॥ स  
रामांसवरषतहेसोउ ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ भरतखंडफिरऊंत्तम ॥ क्रोधकामकरिमाग ॥ चारमासतिर  
थसचे ॥ नाइशुधऊंचरभाग ॥ ३९ ॥ इतिश्रीमत्तभागवत ॥ दरामस्कंधमीतेऊं ॥ बलदेवनेसुतकुं  
हनी ॥ भूमानदकहेऊं ॥ ४० ॥ इतिश्रीमहजानंदस्वामीशिष्यभूमानंदसुतभाषायांअष्टसप्त  
तमोऽध्यायः ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ रूषीधसनलियेकवल ॥ मारतिरथसचनाई ॥ सुतहसाचलमेट  
के ॥ उदासिकेमांई ॥ ४२ ॥ चौपाइ ॥ शुककहेआयेपर्वणितवही ॥ वापुचरेअतिरजततवही ॥ ४३ ॥

अ. १८  
॥ १३ ॥

पाचऊकीगंधहेजांमांई ॥ पुनिआयोचरघातहीताई ॥ ३ ॥ अशुधवस्तुचरषतणऊं ॥ बलनेनी  
रम्पोहितेऊं ॥ होततज्ञात्वापराहा ॥ शुलधरवल्लदरजाततेहा ॥ ४ ॥ अंतनपर्वतत्युहिदेहा  
डाविमुल्लशिरकेकेजांतेहा ॥ तपेलत्रांचवराणातेहा ॥ कालदंतशुहमुखमिणहा ॥ ५ ॥ ताकुंचलवि  
लोकिसंभारा ॥ हलमुद्रालआयेततकारा ॥ नभचरवल्लकुंछिततानी ॥ देसदमनहलअप्रमि  
आनि ॥ ५ ॥ परसेसभेदकमुद्रालतेऊं ॥ क्रोधकरिहनेशिरमेंतेऊं ॥ द्वितजोहिगिरेभूतलआई ॥  
फुटेशिरमूरवरकवहाई ॥ ६ ॥ करिपोकाररुधिररंगेउ ॥ जनुंगेरुरंगितगिरितेउं ॥ पुनिमुनिस्तनी  
करिधविना ॥ रामऊंकुंससआशिपदिना ॥ ७ ॥ सोरना ॥ रूषीअभिषेककीन ॥ बल्लहनेतव  
रामही ॥ अमरसचंजाधविन ॥ हृन्नहनईइऊंकोजस ॥ ८ ॥ चौपाइ ॥ वैजंतिमाजादेततेहा ॥ अ  
मलकंजज्ञोभाऊतजेहा ॥ दोवसनदेतचलकुंलाई ॥ पुनिदिनरिअभूषणनाइ ॥ ९ ॥ पुनिक  
पिऊंनेआरपादिना ॥ कौशिकिगयेद्वितजतधविना ॥ स्नानकरिसगेवरमांआये ॥ सगेवरमेकंस  
रकंताये ॥ १० ॥ सरककेषचाहेचलाइ ॥ प्रयागआईनावतताइ ॥ देवपितृनर्पणकरितेऊं ॥ पुल

हाश्रममें आयेताहुं ॥ ११ ॥ गोमतिगंरकिः स्वरूपियासा ॥ शोणानिरथनावतकलासा ॥ गथाहुंमेता ॥ १२ ॥  
 ६पितृजतेहुं ॥ गंगासागरसंगमताहुं ॥ १३ ॥ स्नानकरिमहैः ६गिरिताई ॥ पुरुश्रुगमदेखेतामोई ॥ स  
 मगोदावरिवेणानेहुं ॥ येपाभिमरथिनायेतेहुं ॥ १४ ॥ दोहा ॥ रामदेखकेस्कदकुं ॥ श्रीशैलपुनिआ  
 ई ॥ शिवआलयसोदेखके ॥ ६विरदेरापुनिताई ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ महापुण्यवेकरगिरियामे ॥ काम  
 कोधिक्कोचिपुरीतामें ॥ कावेरिनदिमेवरतेहुं ॥ श्रीरंगपुण्यतिरथहितेहुं ॥ १६ ॥ जामहिप्रभुसमी  
 पदेखाई ॥ हरिक्षेतकृषभआदिआई ॥ अरण्यमथुगंदेसिताहुं ॥ सेतबंधपुनिगयेतेहुं ॥ १७ ॥  
 तेहिथलधेनुंक्षितकुंदिना ॥ एकप्रभुतवलदेवप्रविना ॥ ताम्रपरणिहृतमालातेहा ॥ मलयकु  
 लाचलपर्वततेहा ॥ १८ ॥ तामेंबैवेअगस्तिताई ॥ स्नाननमनकरकेपुनिताई ॥ ६नुंनेआशिषआ  
 ग्पादिना ॥ अरण्यकुंपायेउप्रविना ॥ १९ ॥ तेहिथलकमानामहीदेवी ॥ दुर्गाकोदरानकरिसेवी  
 फाल्गुनपंचाध्वरसतोउं ॥ यामेंविष्णुदरसतसोउं ॥ सोरता ॥ याकुंनमिकरिस्नान ॥ अयुतगोदेवत  
 क्षितही ॥ चांस्कंचलेभगवान ॥ करलत्रिगर्तकआई ॥ २० ॥ चौपाई ॥ शिवखेतगोकर्णतोनामा ॥ जा ॥ १४ ॥

प्रेशिवदेदर्शनसामा ॥ द्वैपायनिदेविवलदेवा ॥ देखायेसुपरिकततखेवा ॥ २० ॥ तापिपयोश्री  
 निर्विधातोउं ॥ स्नानकरिआईदेस्कसोउं ॥ स्नानकरतरेवामेंआई ॥ चोखिमाहीष्मतिपुरीताई  
 २१ ॥ मन्निनिरथकरिप्रभामआई ॥ कुरुपांडवहुंकेनूधमाई ॥ सबनूपनानाभयोहेतेहा ॥ क्षितने  
 कहीसोसंनितेहा ॥ २२ ॥ भुभरहरेहरीमानतएहुं ॥ भिमदुर्योधनकोऊधतेहुं ॥ होतगदासंस्कनि  
 केतेहुं ॥ निवारनकुरुखेतगयेहुं ॥ २३ ॥ अरऊनहरमपुधिधिरतेहा ॥ देखिवंदनकरकेतेहा ॥  
 क्याकेवेगोमहीएहुं ॥ युंजानिसवचुपभयेतेहुं ॥ २४ ॥ क्रोधकृतक्षितनइछतदोउं ॥ लरतगदा  
 सेबहुविधसोउं ॥ तासेंयुंचोलतवलवानि ॥ सरविरतल्यवलदोउंजानि ॥ २५ ॥ अधिकवलतो  
 रभिमत्सतानो ॥ शिक्षाबहुंदुर्योधनमानो ॥ समबलियेतूमदोनुमाई ॥ क्षितएककीकबहुंनता  
 ई ॥ यासेंप्रामरखोत्सदोउं ॥ फलविनहेविचारहुंसोउं ॥ २६ ॥ दोहा ॥ अरण्यसहीतवलवचन  
 मो ॥ मानतनहीसोदोउं ॥ दुखहतिदुरवचसमरही ॥ अतिवैरकृतसोउं ॥ २७ ॥ चौपाई ॥ याकोक  
 विनकर्मवलजानि ॥ हारवतिपुनिगयेगुमानि ॥ उपसेनआदिकतदुतोई ॥ आयेसमिपेंप्रसन

भा. द. उ.  
॥ १५ ॥

होई ॥ २८ ॥ निप्रियारणपुनिगमगयेउं ॥ मखसंततावतकृषीसवेऊं ॥ वैरसचेतनीदिनेउतेऊं ॥ ज  
तमुरतीहेवलतेऊं ॥ २९ ॥ अतिविशुधविज्ञानहीजेहा ॥ देतकृषीकुंचलदेवनेहा ॥ जोज्ञानमेंकृषी  
यवतेऊं ॥ आत्मज्ञानपाईसवतेऊं ॥ ३० ॥ अवभृथस्नानकिनवलजाई ॥ निजनारिऊतसुहृदविरा  
ई ॥ वसनभूषनमेंसोहनएऊं ॥ जनुंनितकोतिमेंचंदनेऊं ॥ ३१ ॥ याविधअनेतचरितहियाके ॥ मा  
यासंमनुष्यभयेताके ॥ अनेतअतिवलवेंतरिणऊं ॥ नितबलमेंवलसोभिरहेऊं ॥ इनकेकर्मगाय  
संनितेऊं ॥ सायंपातउवकेतेऊं ॥ अतिवलभविष्णुकुंएहा ॥ रामचरितगावतजोनेहा ॥ ३२ ॥ दोहा  
इतिश्रीमत्भागवत ॥ दशमस्कंधमितेऊं ॥ तिर्थमेंवलवलहने ॥ भूमानंदकरेऊं ॥ ३३ ॥ इतिश्रीस  
हजानंदस्वामीशिष्यभूमानंदकृतभाषायांएकोनाश्रित्तिसोः ॥ १५ ॥ दोहा ॥ गेहः प्रा  
येश्रीदामकुं ॥ पुत्रीपुल्लतहरिणऊं ॥ गुरुगेहकिगाथासवे ॥ असिअध्यामेंतेऊं ॥ १ ॥ चोपाई ॥ प  
रिश्चितकहेपभुकेजोउं ॥ प्रारअनेतपाकमहेसोउं ॥ यासंननकिइलाहेसोई ॥ पभुकिकथामनोह  
रजोई ॥ २ ॥ याकीस्मरणतनहीजेऊं ॥ संनिविशमनहीपावतनेऊं ॥ गानकरेहरिगुणसोवानि ॥ ३ ॥ १५ ॥

अ. ६०

॥ १५ ॥

भुलियुंकर्मकरेकरजानि ॥ ३ ॥ स्थिरजंगमभिरहेहरिजेऊं ॥ याकीस्मरणकरेमनतेऊं ॥ कथासंने  
साकर्णकहाई ॥ शिरवलअचलमुरतिकुंनई ॥ ४ ॥ याकुंदेखनचक्षुसोउं ॥ चरणोदकसेवेतनुं  
जोउं ॥ सुतज्ञानकसेकहहिणहा ॥ परिश्चितनेकहीशुकसेतेहा ॥ ५ ॥ सोशुकहृदयमेंमग्नहो  
ई ॥ चोलतपरिश्चितसेसोई ॥ हरिसखात्राद्युणत्रद्यतानी ॥ पंचविवेमेसागीगुमानी ॥ ६ ॥ प्रसां  
तमनजितइंद्रियतेऊं ॥ जोमिलेतासेंवरतेतेऊं ॥ गृहाश्रमित्तेपटधारी ॥ भुखसेंडरवलयाकी  
नारी ॥ ७ ॥ मोरगा ॥ हजामुखिपतिचतधर ॥ दरिद्रखिपतिदिगताई ॥ कंपतकहीतोरिकर ॥  
श्रीपतिकेसखातूमहो ॥ ८ ॥ चोपाई ॥ शरणप्रदक्षणपत्रइदेवेऊं ॥ निवासरुपसाधुकेतेऊं ॥ या  
दिगताऊं ॥ ब्रह्मधनसोई ॥ हेगोइखिकुंवेकततोई ॥ ९ ॥ भोजदृष्टीअंधककुलस्वामी ॥ धार  
मतिमेंहेअवधामि ॥ याकेचरणकुंस्मरतजोउं ॥ तिनकुंदेतनितमुरतिसोउं ॥ १० ॥ धनकेलिये  
भतेजोकोई ॥ ताकुंदेतगतगुरुसोई ॥ शुककहेपारथनावऊं ॥ किना ॥ दारानेतवद्विजपविना  
११ ॥ कहेममपरमलाभभयेऊं ॥ हरिदर्शनहोवेगेतेऊं ॥ युंमनमेंचितनकरिणहा ॥ जावनकुं

मतिकरतहितेहा ॥ १३ ॥ गेहमेतोउपायनहोई ॥ नारिलायदेमोकुंसोई ॥ तबनारिचक्रंमुष्टितेहा  
 तंडुलताचिलायकेतेहा ॥ १३ ॥ वसनदुकसेवांधकेकां ॥ देतउपायनपतिकुंते ॥ सोनेडुलले  
 केथीदामा ॥ गयेहारकांतोहरिधामा ॥ १४ ॥ दोहा ॥ दर्शनमोयश्रीहरमकी ॥ होयकुं करिविच  
 र ॥ त्रिसैयथानउलेघके ॥ त्रिषेतोलिपार ॥ १५ ॥ चोपाई ॥ अस्वंधर्मसहीतनडगेहा ॥ विप्र  
 कुंअगम्यहेतेहा ॥ १६ ॥ सोलहजारहरिनारिगेहा ॥ तामिाकदेखदिततेहा ॥ येउरुंदरगेहमा  
 १ ॥ अनुसखिन्नदानेदपाई ॥ १७ ॥ द्विजकुंडरसेदेविधाये ॥ श्रीकृतपलेगतजिदिगन्नाये ॥ मि  
 लतपधुधुजमेंभरिताई ॥ सखाकुं कुंपरसीमुदपाई ॥ १८ ॥ विद्यमिलिषसनभयेउतवही ॥ क  
 मलनेनतलवर्षततवही ॥ पुनिपलेगपरदितवेजाई ॥ भेत्यधरिपुनतपधुताई ॥ १९ ॥ पुनिच  
 रनहरिद्विजकेधोई ॥ यदजलेशिरचडावतसोई ॥ कुंकुमअगरुचदनते ॥ करतहीलेपनअगमी  
 ते ॥ २० ॥ धुपसगंधिअरुदिषमाला ॥ करतपुजाकृतविधिविशाला ॥ ताबूलअरुगौदितकुं  
 दिना ॥ पुनिकुवालतापुछतपविना ॥ २१ ॥ सोरवा ॥ जिरणपरतनक्षाम ॥ मिलनधमनिवा ॥ १६ ॥

तद्वित ॥ चमरअंजननाम ॥ करतसाक्षातश्रिते ॥ २२ ॥ चोपाई ॥ अमलकिरतिवंतहरमने ॥  
 मलिनद्वितकुंपुनतते ॥ अंतरपुरतनहरिकुंतोई ॥ विस्मितहोइरहेसचसोई ॥ २३ ॥ मलिनभिस्  
 श्रीहिनका ॥ अधननिद्याकरनतोगपते ॥ कहापुस्यकितोअगोहा ॥ त्रिलोकगुरुनेसमकिनने  
 हा ॥ २४ ॥ श्रिकृतपलेगकोकरिमागा ॥ वउबंधुजुमिलेकतरगा ॥ आगेथेतोगुरुकेगेहा ॥ गा  
 थकरतकरपकरितेहा ॥ २५ ॥ धुधुकहेगुरुगेहसेअई ॥ समापिविद्याकुं किलाई ॥ भार्यातुसपर  
 नेहोतोउ ॥ त्रिजवयकरतुसहेसोउ ॥ २६ ॥ घरमेंकामकृततचचितनोई ॥ धनपरअदिमेंपिती  
 वहाई ॥ विसेवासनासागिए ॥ कर्मकरतनिकापिते ॥ लोकमिखाचनमेंकरतेसे ॥ तमभि  
 कर्मकरतहोतेसे ॥ २७ ॥ दोहा ॥ गुरुकुलमेंवासतो ॥ स्मरतहोकिनाई ॥ अपुनेगुरुसेविप्रतो  
 आत्मज्ञानहिपाई ॥ २८ ॥ चोपाई ॥ जन्मकुंकोपारहेतोउ ॥ ताकुंपावतहेद्वितसोउ ॥ जासेतन्महो  
 तहेते ॥ पुथमपितागुरुतानकुंते ॥ २९ ॥ द्विजातिसंस्कारकरतेहा ॥ विद्याधदगुरुडतोतेहा  
 आश्रमिकुंज्ञानकेदाता ॥ गुरुएकमेहोउंसाक्षाता ॥ ३० ॥ ज्ञानधदगुरुमोकुंपाई ॥ तन्मतेबुधि

भा. २. ३.  
॥ ११ ॥

वंतकहाई ॥ मम उपदेश भवसिंधुतेऊं ॥ विनाश्रमत रिजातहेतेऊं ॥ २१ ॥ गृहीरुब्रत्यचारिकेधर्मा  
वनिश्रुततिऊंकेअनुकर्मा ॥ पालेतीभिप्रसननहोउ ॥ सुगुरुसेवासेहमसोउ ॥ २२ ॥ हेद्विज  
गुरुगेहरहेतवही ॥ गुरुदागपववायेतवही ॥ इंधनलेवनऊंकुतेहा ॥ अचतमसं भारलेहोते  
हा ॥ २३ ॥ ममवा ॥ महावनमेंप्रवेश ॥ किनोतववायुचरषतघन ॥ दुबगयेउसचदेश ॥ अकाउ  
गात्रविजहोतही ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ कुर्यअस्तभयेतेहिवाग ॥ सबदीशहोइरहिअंधकारा ॥ उं  
चनिचस्थलजानतनाई ॥ जलसेंइवरहेतरमांई ॥ २५ ॥ नायुविंडसेंअपनेदोउ ॥ इखपायेतल  
समुहमिसोउं ॥ वनमेंदिशकोउदेशर्तनांई ॥ हस्तपकरिभरकेतामांई ॥ २६ ॥ रविउगोसांदिपि  
निजाउं ॥ दुंदननिकसेशिषकुंसोउं ॥ अपनेअतिप्रातुरकुंजोउं ॥ चोलतगुरुसांदिपिनिसोई  
२७ ॥ हेकतममअरथेदमतेऊं ॥ देहकुंडखपमायेतेऊं ॥ सबपाणिकुंषियहेदेऊं ॥ ममलिये  
दमगनेनहीएऊं ॥ २८ ॥ साचेशिष्यहिहावेतेहा ॥ याविधगुरुसेवाकरिनेहा ॥ सबहिअर्थको  
साधकदेऊं ॥ गुरुकुंअर्पणकरनोतेऊं ॥ २९ ॥ प्रसनभयोमेंदमपरजोउं ॥ सममनोरथहोउ ॥ ११ ॥

अ. ७७

॥ ११ ॥

सोते ॥ असपरलोकमिविद्यातोरि ॥ अचभनेसुरहोनिशाभोगी ॥ ४० ॥ याविधअनंतचतहितो  
उ ॥ गुरुगेहकेस्मरतहोसोउ ॥ गुरुअनुग्रहसेंशिष्यजोउं ॥ प्रगांतपुरणहोतहेतेऊं ॥ ४१ ॥ ब्राह्म  
णकहेअधाप्रनाई ॥ तुमजगगुरुदेवदेवकहाई ॥ तुमसंगवासगुरुकेगेहा ॥ भयोहमारपुणते  
हा ॥ ४२ ॥ सबकल्याणरखेतहेतोउ ॥ वेदहीदेहतिहासोउ ॥ ऐसेतुमगुरुकेपरहाई ॥ भनेउसो  
नररितिदेखाई ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ इतिश्रीमत्भागवते ॥ द्नामसंक्षमितिऊं ॥ श्रिदामतंडुललेगथे  
भूमानंदकहेऊं ॥ ४४ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंददत्तभाषायांअज्ञातीतमोः  
ध्यायः ॥ ७७ ॥ दोहा ॥ तेडुलुसखाकिपायके ॥ श्रीअश्रममेकिन ॥ इंदुंकुंडुर्लभहेतो ॥ एकार्शी  
मेदिन ॥ १ ॥ चौपाई ॥ शुककहेद्विजसेकहिगाथा ॥ हसिबोलेद्विजसनाथा ॥ ब्रह्मणपदेवमत्  
किगतिरुपा ॥ प्रेमसहीतदेवहीअनुपा ॥ २ ॥ हसिब्राह्मणकुंकहतएऊं ॥ देऊंउपायनलायेतेऊं  
भक्तवेमऊंसेअणुलाई ॥ देतमोयचऊंमानतताई ॥ अभक्तवऊंदेतहेमोई ॥ ममत्रसिलियेहो  
तनसोई ॥ ३ ॥ पत्रपुष्पफलतलहितोउ ॥ भक्तिसेंदेवतमोयकोउ ॥ भक्तिऊंसेंदिनेतोमोई ॥ तीम

१२१

१३

तमेषु संन प्रतिहोर्द ॥ ४ ॥ युं प्रभूनेताचे द्विजाङ्गं ॥ अतिलजिन श्रीपति कुंतेङ्गं ॥ देतनते डलहरी  
 कुंजबही ॥ गदेवेंको मुख करितबही ॥ ५ ॥ सोरगा ॥ द्विजप्राये किकारन ॥ जानत अंतरतामीह  
 वि ॥ धनलियेन हि भजन ॥ करतमेगे युं चिंतत हि ॥ ६ ॥ चोपाई ॥ पतिरुताना रिक्केताता ॥ धनलियुम  
 मरिग आयेगता ॥ संपतहमदेवेगेता ॥ देवनकुं डलभकहाई ॥ ७ ॥ याविधविचारके प्रभुएङ्गं ॥  
 लेतल्लिनाइतं डलतेहा ॥ परटकसें बांधेथेतेहा ॥ क्याहे युं कही रोजततेहा ॥ ८ ॥ हेमखादमला  
 येतोङ्गं ॥ तं डलममत्रमिलियेतेङ्गं ॥ युं कहि मुष्टि एकतिमेउ ॥ दुसरिलियेतिमनकुंतेउ ॥ ९ ॥ त्वश्री  
 हरिकरपकरिकीना ॥ पुरनभयो अवररतो प्रवीना ॥ असपरलोकस्मरधि तोउ ॥ एकमुष्टितिमि  
 दिनि सोउ ॥ १० ॥ दुसरिमुष्टितिमोगेतबही ॥ द्विजप्राधिनममकरो गितबही ॥ ब्राह्मणहरिके  
 मंदिरमाई ॥ रतनिराकरहेउताई ॥ खानयानकतनितकुं एङ्गं ॥ स्वरगवासिसममानततेङ्गं ॥ ११  
 दोहा ॥ निजस्वसं पुरणप्रभु ॥ विश्वरुधिकरतेङ्गं ॥ पुतिद्विजकुं पगावत ॥ संगचलिमगमेङ्गं  
 १२ ॥ चोपाई ॥ रविकोउदयभयेउतबही ॥ ब्राह्मणनितगेहचलेउतबही ॥ हृद्यं संकलुधन ॥ १७ ॥

नपाई ॥ आपे प्रभुमें ताचतनाई ॥ १३ ॥ गेहचलेलजितअति एङ्गं ॥ हृद्यमदस्वसं मुदकततेङ्गं ॥  
 ब्राह्मणपदेवपनी हेतोउ ॥ प्रभुको अवदेव्यो मेसोउं ॥ १४ ॥ अतिदरिद्रिनिचकुं मोई ॥ मिलेभु  
 जमेभरिषिपुतिसोई ॥ कहां मंदरिद्रिकहां श्रिधामा ॥ अधमविषकुं मिलिघनसामा ॥ १५ ॥ श्री  
 सेवनकतपलंगता ॥ मोयवेतायेवेधुनाई ॥ चालविं तनलक्ष्मिकरधारी ॥ पुवनकरतममचा  
 रमचारी ॥ १६ ॥ दोहा ॥ परमसेवापगचंपिहि ॥ करकेपुतामोर ॥ सबदेवनकेदेवतो ॥ करतही  
 नेदकि तोर ॥ १७ ॥ चोपाई ॥ स्वरगारसातलमें हेतोउ ॥ मोक्षअरुभुसपुनसोउ ॥ सबसिधिकी  
 कारणतेङ्गं ॥ प्रभुचरनको अरचनतेङ्गं ॥ १८ ॥ सबधनकेकारणहरितेहा ॥ तनिकमोयधन  
 दियोनतेहा ॥ निरधनधनपाइमदेगेतबही ॥ मोकुनहिस्मरेगेतबही ॥ युंविचारकरिके मन  
 माई ॥ निश्चधनमोयदिनेनाई ॥ १९ ॥ युंउरमेचिंततद्विजाङ्गं ॥ नितगेहरीगप्रायेतेङ्गं ॥ सूर्य  
 अनलइं डलुत्यतेङ्गं ॥ विमानलाइरहेसवगेङ्गं ॥ २० ॥ विचित्रवनउपचनअरुवाटि ॥ चङ्गो  
 रभुवनकेअतिघाटि ॥ तामेपक्षिवालेबहीगा ॥ कुलकंजतसरगोरगोरा ॥ २१ ॥ कङ्कारकु

मुदउत्सलनाती ॥ तलमेकमल-अंभोजवक्रभांनि ॥ भूषणतृत्चाकरसें ॥ १३ ॥ मृगनयनिदामिसें  
 ते ॥ १४ ॥ सोहननिजभवनद्विजगोई ॥ अतिअद्भुतदेखरहेमोई ॥ १५ ॥ सोरजा ॥ युंविचारतमनमांई  
 द्विजतवदेवतृत्पदेखि ॥ नूरनारितो-आई ॥ पुजा-आदिलाइपुजतही ॥ १६ ॥ चोपाई ॥ गितगात  
 अरुवाजोवताई ॥ पधगयेनिजभवनकिमांई ॥ पति-आयेसंजियलिते ॥ १७ ॥ अतीहरवउछव  
 कृतते ॥ निकसेघरुमेंकंततकाला ॥ सुंलक्ष्मिधरिहपविज्ञाला ॥ १८ ॥ पुनिवतापतिदेखी  
 एहा ॥ उछव-आद्युक्तभइतेहा ॥ मिचिनेनचुधिसेनमिण ॥ मनसंकल्पसेंमिलतते ॥ १९ ॥  
 अलंकारकृतदासीमांई ॥ देविसमनिजनारिकहाई ॥ जनुंविमानलोरके-आई ॥ देखिद्विजरहे  
 विस्मोपाई ॥ २० ॥ अतिप्रसनहायकेद्विजे ॥ नारो-कृतमदिरमेगये ॥ मणिकेस्तंभमातहेजा  
 मांई ॥ २१ ॥ इंदुभवनसमरहेकहाई ॥ २२ ॥ इतहेमकेपलेगते ॥ उधकेनसमजायेते ॥ मीतनमा  
 जाललहीजामे ॥ तेजोमयचंद्रवातामे ॥ २३ ॥ दोहा ॥ मारकतस्फारिकमणी ॥ ताकीहेदेवाल  
 नारिरत्न-अरुत्नके ॥ दिपहे-अतिउज्ज्वल ॥ २४ ॥ चोपाई ॥ सबसंपत-अरुसमृधितेहा ॥ वि

षुविचारतकारणतेहा ॥ सदादरिदिभागपसेंहिना ॥ कहांसंश्रि-आइहमनहिचिना ॥ २५ ॥ स  
 वविभूतिपतिप्रभुजे ॥ इनकिहगसेंभयेसबए ॥ तइमेंवरेसराममजेहा ॥ विनबीलताच  
 ककुंतेहा ॥ २६ ॥ बक्रुधनदिनममतेडलपाई ॥ सागरधुरकमेघकिनाई ॥ मेरुसमधनदासकुंए  
 ॥ देकेराइसममानेते ॥ दासदिनराइजितनोतेहा ॥ कंचनमेरुमानततेहा ॥ २७ ॥ मप्रएकमुही  
 तेडलपाई ॥ दियेउसमृधिवरनिनताई ॥ कुरुदसरवाममहृमहो ॥ मैत्रि-अरुसेवकपवुंजो ॥  
 २८ ॥ जन्मजन्मयामेहोसो ॥ सबगुननिधितानितनजोउ ॥ हरमकुंमेंजोगयेकोउ ॥ याकोम  
 गसदाप्रमहो ॥ २९ ॥ सोरजा ॥ भक्रुंकुंभगवान ॥ धनराज्यनारिदेतनही ॥ विवेकविनमम  
 जान ॥ गिरेगेयुंविचारहरि ॥ ३० ॥ चोपाई ॥ मुदसेंधनवंतिगिरतजोइ ॥ साक्षातधनदियोनसोई  
 युंविचारिबुधिसेण ॥ सागरकरनउरइछतते ॥ अतिलंपरगेहमेंनहोई ॥ विरोभोगतनारि  
 तसोई ॥ ३१ ॥ देवनदेवतज्ञपतिते ॥ याकोकारणत्राट्यणते ॥ विप्रविनदेवहरिकुंनोई ॥ त्रय्यण  
 देवाककहाइ ॥ ३२ ॥ प्रोरनरकुं-अजितहेते ॥ नितजननेजितिजियेते ॥ याविधहरिकुंदेखि

एहा ॥ ध्यानधरतउरमें द्विजनेहा ॥ ३७ ॥ ध्यानकुंसेंसागिन्प्रहंकारा ॥ हरिधामपायेतेहिवाग ॥ ब्रह्म  
 एषदेवकीहेतीतेहुं ॥ ब्रह्मएषताकं निनरतेहुं ॥ प्रभुमेंभक्तीपावेएहा ॥ कर्मबंधधसेंछुटेनेहा ॥ ३८ ॥ दो  
 हा ॥ इतिश्रीमत्तभागवत ॥ दशमस्कंधमितेहुं ॥ श्रीरामकितेहुंलज्जिते ॥ भूमानंदकरेहुं ॥ ४७ ॥ इ  
 तिश्रीमद्भक्तानंदस्वामिप्रियाभूमानंददत्तभाषायोएकाश्रितीतमो ॥ ध्यायः ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ रा  
 जासवकुंरुक्षेत्रमी ॥ रविप्रहणामेआई ॥ तइदेखिहरिकथापुनि ॥ कहतहीव्यासिमांइ ॥ १ ॥ चौपा  
 इ ॥ शुककहेहरिचलदेवदीउं ॥ द्वारमतिमेंवसतेउंसोउ ॥ रविसवप्रहणभयेथेनेसें ॥ प्रलेकालहुं  
 मेंथेतेसे ॥ २ ॥ तिनकुंजानितनसचतेहुं ॥ कुरुखेतमेंआयेतेहुं ॥ नक्षत्रिमहिगमनेकीना ॥ नृप  
 धिरहृदसानभरदिना ॥ ३ ॥ कर्मरामकुंलगोनतीउं ॥ लोकहुंकुंशिरवावनसोउ ॥ यज्ञकरतपरशुगंम  
 तांइ ॥ अघमेदनअज्ञानकियाइ ॥ ४ ॥ तेहिथलतिरथकरनेएहुं ॥ आइभरतखंडप्रजातेहुं ॥ वरु  
 देवनेआदितादवतोउं ॥ गदप्रशुमनसांचहीसोउ ॥ ५ ॥ सूचंदसकसारणसहीता ॥ हतवर्मानरुअ  
 निरुधमिता ॥ द्वारवतीरक्षाकेकाता ॥ रवेप्रभूनेनूतसमाता ॥ ६ ॥ सोरगा ॥ विमानसमरथजोई ॥ ६७ ॥

नरंगसमगतिघोराकी ॥ वदरसमगतसोई ॥ विद्याधरसमनरसबही ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ अतिउन्नमप  
 टस्रतसवधारी ॥ मानुदेवसगोलेनारी ॥ अतितेतचंतसबही ॥ ८ ॥ मगहुंमेंअतिसोहनतेहुं ॥ ८  
 आइनिरथमेंस्नानहीकिना ॥ उपोषणाएककरिप्रविना ॥ पुनिद्विजकुंदिनधेनुंएहा ॥ वस्त्रहेमपा  
 लकृतनेहा ॥ ९ ॥ परशुरामहृतहृदमेंआई ॥ स्नानकरतपुनितइविधिलाई ॥ त्रिमावतहीजकुंस  
 वाहा ॥ हृदमेंभक्तिजाचतनेहा ॥ १० ॥ तइसबहृदमकिआग्यापाई ॥ द्वारमुखमेंकतेजाइ ॥ तेही  
 थलकहृदसबनृपआये ॥ तइसबदेखअतिमुदपाये ॥ ११ ॥ मछउशिनरकोशाल्यतेहुं ॥ विदर्भ  
 कुंसंतयतेहुं ॥ काभोजकैकयमइतेहा ॥ कुंतीनारदकेरलतेहा ॥ १२ ॥ दोहा ॥ जोरअरुनितप  
 क्षके ॥ नृपसबआयेतेहुं ॥ कुरुदनेदादिगोपतो ॥ गोपिबहुदिनमिलेहुं ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ अस्यो  
 अस्यदर्शकरिआहा ॥ हृदयवदनकुलितभयेतेहा ॥ मिलेउलोचनमेंतललाइ ॥ रुंधगिरतेमखडे  
 मुदयाइ ॥ १४ ॥ तइकुरुनारिपरस्परजोई ॥ अतिसोहृदसेंहास्यनूतहोई ॥ अमलदृगनसेंहेरत  
 एहा ॥ मिलतहेतआशुज्जनसेहा ॥ १५ ॥ छोटनेवृधकुंवेदनकिना ॥ कुशालपुलतवृधप्रविना ॥



भा. द. उ.  
॥६१॥

रुधाकरतपुनिहृष्टमक्रिण्डं ॥ असौ अससवमिलकेतेडं ॥ देखएथाभावापरुभाई ॥ वैनरुभात  
किनारिआई ॥ हृष्टमकुं देखिकेपुनिण्डं ॥ कुत्रालपुछिसागिगोकरतेडं ॥ ११ ॥ सोरमा ॥ एथावसुदे  
वताई ॥ करतगाथाहीनितडरवकी ॥ मनोरथममभाई ॥ पुरनभयेयुमानडं ॥ १० ॥ चोपाई ॥ आप  
तकालपरिमीयभारी ॥ ममगाथातूमनोहीउचारी ॥ जिनडं कुं देवअवलेहीडं ॥ तीनकेसरुदती  
सोई ॥ १२ ॥ आतसतमावापरुतेहा ॥ स्वजनअरुसंभारिनतेहा ॥ याकारनतवअप्राधनाई ॥ वसुदे  
वचोलेभग्निताई ॥ २० ॥ ममदूरथापतकरनावाई ॥ कालक्रिउरुपहेहमताई ॥ कंसडंनेडखदिनेत  
बही ॥ भागगयेदशीदिशातवही ॥ २१ ॥ निजथानकमेंअवहमआये ॥ याविधपारअयेपिराये ॥  
शुककहेवसुदेवतडतेहा ॥ उपसेनुआदिकहेतेहा ॥ सवनृपकुं पुजतहेण्डं ॥ हरिकुं देखनिवृत्त  
भयेतेडं ॥ २२ ॥ भिष्मद्रोणधतराष्ट्रतोउं ॥ गांधारिपुत्रकतसोउं ॥ दाराकतपांडुं औरनृपा ॥ कुंतावी  
डरसंतयहपा ॥ २३ ॥ विगटभिष्मककुं तीभोता ॥ पुत्रुजितनग्नतितनूतओता ॥ धष्टकेतुपुपद  
शासतेडं ॥ दमघोषकाशिगतातेडं ॥ २४ ॥ मैथिलविशालाक्षससमां ॥ मद्रककैकेयनूतधर्मा ॥ ६१ ॥

अ-६२

॥६१॥

युधामन्युवाङ्गिकनोउ ॥ युधिष्ठिरआश्रितनृपसोउ ॥ सवनारिक्ततहृष्टमकुंण्डं ॥ देखिविस्मित  
होरहेतेडं ॥ २५ ॥ लोहा ॥ हृष्टमबलनेपुतेसब ॥ मुदकतभदृनृपतेडं ॥ हृष्टमयेनजादवडंकुं ॥ अ  
तिबखानतण्डं ॥ २६ ॥ चोपाई ॥ हेउप्रसेनतूमसवतोउं ॥ सफलतन्मनरमध्येसोउ ॥ तोगिनहिरे  
सतहेताई ॥ हरिमुखहेरतखलाखणताई ॥ २७ ॥ इनकिर्तिपदतलगां गतेडं ॥ सबतगकीअ  
घहरहेतेडं ॥ इनकेअचवेदनास्त्रतोउं ॥ विश्वपवित्रकरतहीसोउं ॥ २८ ॥ कालसेंतरेमातम्यभुते  
हा ॥ प्रभुपदपरससेंपादतेहा ॥ सोभूमिसवरसहेतेडं ॥ हृष्टमकुं देवतहेपुनितेडं ॥ २९ ॥ दशमप  
संगतिइनसंगा ॥ गोष्ठिशायनआसनउमंगा ॥ भोजनविचारसंबंधतेहा ॥ देहसंबंधतवुं इनसं  
तेहा ॥ तवगेहृषगटभदृहरिण्डं ॥ तृष्णाविनतूमकुं किनतेडं ॥ ३० ॥ तन्मडंकोकारणतोगेहा  
तामंरहेषगटहरितेहा ॥ युंसबनृपनेतडकुं किना ॥ पुनिशुककहेसंनुं नृपप्रविना ॥ ३१ ॥ हृष्ट  
नडकतआयेयुतोनि ॥ आयेमिलननेदकतरानी ॥ वेतसकरपरगोपहतण्डं ॥ तिनकुं देखि  
जादवतेडं ॥ ३२ ॥ अतिहरखाईउडेउणहा ॥ वडकालसेमिलेउतेहा ॥ पुनिवसुदेवभीरिभुज

मांई ॥ नंदकुं मिले प्रेम उर लाई ॥ ३३ ॥ **मोरगा** ॥ संभारत वसुदेव ॥ कंसने डर दिने तेऊं ॥ सतथापण  
 धरेव ॥ गोकुलमिताकुं समरे ॥ ३४ ॥ **चोपाई** ॥ हृद्यमरामकुं मिलिके दीउं ॥ नंदतज्ञो दातनि सोको  
 उ ॥ सतलने नहोयके ताई ॥ मुखसे कळुनवोलेतेऊं ॥ ३५ ॥ पुनिदेवकिरोहिलीआई ॥ तज्ञीमती  
 कुं मिलिके वलगाई ॥ याकिमे त्रिसंभारोसोउं ॥ बोलेअश्रुलाईके दीउं ॥ ३६ ॥ तूमने मे त्रिकिनेहेते  
 हा ॥ हमकुंकवुनविसरेतेहा ॥ जनकजननि तूमहोतोउं ॥ तवगेहवाल धरेथं दीउं ॥ ३७ ॥ यालनयो  
 षणतूमसेयाई ॥ निजमाचापकुं देखेनोई ॥ निरभयरहेउतवघरुमांई ॥ रक्षाकिनहगापांणमांई ॥  
 ईईऊंकोशेष्यतेऊं ॥ तवहृतेमे त्रिसमनहीतेऊं ॥ ३८ ॥ **दोहा** ॥ शुककहेगोपीहृद्यकुं ॥ बरुका  
 लसेयाई ॥ हगायापनकरअतऊं ॥ शापदेतआकुलाई ॥ ३९ ॥ **चोपाई** ॥ हगसेहरिकुं उरमेउता  
 रि ॥ मिलिकेतदरुपभईसोनारी ॥ जोगिताकुं यावतनांई ॥ याविधगोपिऊं कुंबीलाई ॥ ४० ॥ मिले  
 प्रभुएकांतमेजाई ॥ हसीकुं जालपुछेपुनिताई ॥ हृद्यमकहेगोपितूममोई ॥ संभारतहोवऊं दिन  
 होई ॥ ४१ ॥ शत्रुपक्षहनेतामांई ॥ बरुकालवितिगयेताई ॥ कियेगुनकुं तानतनांई ॥ ऐसीतूमकुं

संका-आई ॥ सो संकानतिदेकऊं तोई ॥ जोगवितोगकरे कालसोई ॥ ४२ ॥ घनरत्नतृणतूलवायुते  
 ये ॥ करहिभेलेभिनभिनतेसे ॥ सुंकालवज्ञानसबएऊं ॥ मोरवितोगतवबदेस्नेऊं ॥ ४३ ॥ स्नेह  
 तिहारिमोमेतेऊं ॥ मोरिप्राप्तिरुपहेतेऊं ॥ घटआदिमेंपंचभुततेसे ॥ मेंसवतनुंमेंव्यापकतेसे ॥  
 अक्षररुपतोमेहोतेऊं ॥ लोकसकलरहेमोमेएऊं ॥ ४४ ॥ अक्षररुपतूममोकुंयाई ॥ हेगोपिसस  
 मानोताई ॥ शुककहेस्वरुपउपदेराकिना ॥ प्रभुनेगोपीकुंबोधदिना ॥ हृद्यकोस्मरणकरकेतेहा  
 देहृत्तियाई हरिकुंएहा ॥ ४५ ॥ गोपिकहेप्रभुपदकुंजेऊं ॥ वरुतो गिचिंतवतउरतेऊं ॥ भवसागर  
 में गिरितनतेहा ॥ ताकिनोकाहेपदतेहा ॥ ग्रहकेमोडरहेहृद्यतेऊं ॥ ताकेमनमेंरहोपदतेऊं ॥ ४६ ॥  
**दोहा** ॥ इतिश्रीमत्भागवत ॥ दशमस्कंधमीतेऊं ॥ ग्रहणमेंकुरुचेतआतही ॥ भूसानंदकहेऊं  
 ४७ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूसानंदहृतभावायांछासितितमो ॥ आयः ॥ ८३ ॥ दोहा  
 हृद्यनारिनितव्याहकी ॥ दुपदिंकुं हृदिगाथा ॥ त्रासिमेंहृद्यमकथाकही ॥ ओरसबनारिसाथ  
 १ ॥ **चोपाई** ॥ शुककहेगुरुश्रीहृद्यतोउं ॥ प्रनुंग्रहकरिगोपिपरसोउं ॥ पुनिपुधिधिरसेजडना

भा-द-उ-  
॥६३॥

था ॥ पुच्छतस्करदकुशलकिगाथा ॥ २ ॥ प्रभुपुच्छेनववोलेमोई ॥ पापरहीनहरवितमनहोई ॥ हे  
प्रभुतेरचरणजज्ञातोउं ॥ करणहारसंपिवेकोउं ॥ ३ ॥ ताकुं कालसेइवुनहोई ॥ आसमुखसं  
निकसेतज्ञासोई ॥ देह-प्रभिमानतिवकुंतेऊं ॥ तवमुरतिको-प्रज्ञानतेऊं ॥ तवतज्ञामेदिदेवतसो  
ई ॥ तोयतानितनइसिनहोई ॥ ४ ॥ नमस्कारहमारतोउं ॥ मानलियोहेप्रभूत्ससोउं ॥ सरुपज्ञा  
नऊंसेत्सतेऊं ॥ मेतेतिन-प्रवस्थातेऊं ॥ ५ ॥ आनंदरुप-अखंडहीतोउं ॥ अकुं वचिदज्ञाक्षिप  
तिसोउं ॥ कालेनाज्ञानिगमभयेतबही ॥ तिनस्वप्नाधरिपुरतितवही ॥ ६ ॥ मोरता ॥ शुक्रकहे  
सवतनकिन ॥ स्तुतिधनधामसबंधितती ॥ जडकुरुनारिप्रविन ॥ करतकथा मिलिहृद्यमडकी  
७ ॥ चोपाई ॥ दुपदिकहेरुक्मीणिसतभामा ॥ भद्राजाववतिसत्यानामा ॥ मित्रविंदाकालिदिते  
हा ॥ लक्ष्मणारोहिणी-मोरतेहा ॥ तुमकुंहरिपरनेहेतेसं ॥ कहोगाथनिजनिजकितैसं ॥ ८ ॥ रु  
क्मिणिकहेचेछकुंमोई ॥ देवनमागध-आदिकसोई ॥ धनुषचराई-आयेतेहा ॥ अनेयज्ञासो  
सवतेहा ॥ ९ ॥ इनके शिरउपरपगधारी ॥ सुसिंहभागभेइसंहारि ॥ तेसंहरप्रभूनेमोई ॥ चरण ॥ ६३ ॥

अ-६३

॥६३॥

किंकरिकरोममसोई ॥ १० ॥ सुसभामाकहीमोरताता ॥ बंधुवधसंनितापउरताता ॥ इतुंने-अपज  
सहरिकुदिना ॥ सोमेरनतिंतरिंछप्रविना ॥ स्पमंतकलाइदिनेजबही ॥ अषाधमेरनदिनममत  
बही ॥ ११ ॥ ताववतिकहीतातममतोउं ॥ निजनाथनहिजानेसोउं ॥ सिताकेपतिसंलरेतेहा ॥ स  
त्याविश्रादिनपर्यंततेहा ॥ निजस्वामिकुंतानेतबही ॥ मणिज्जतमोकुंदिनेउतबही ॥ १२ ॥ दोहा  
कालिदितपकरततो ॥ निजपदपरसकी-आस ॥ अरक्तनक्तनहरि-आयके ॥ दरिमोयकीनेदास  
१३ ॥ चोपाई ॥ मित्रविंदास्वयंवरमोई ॥ श्वानतूथसंसिंहकिसाई ॥ अति-अप्रमानकरतममभाइ  
हरलिनमोयतितकेताई ॥ इनकेचरणधोनपणुतोउं ॥ जन्मजन्मप्रतिहोममसोउं ॥ १४ ॥ सुसा  
कहेसमरुषतेहा ॥ अतिबलविर्येनिलिष्टंगतेहा ॥ नृपबलपरिक्षालियेएहा ॥ मोरतातनेपा  
लेगेहा ॥ १५ ॥ सरविरकोमदमेरनएऊं ॥ पकरप्रभुनेवाधेतेऊं ॥ प्रयासविनप्रभुनेएहा ॥ तेसंभे  
इबालकुंतेहा ॥ १६ ॥ प्राकममुत्पहिमेरोताई ॥ चतु-अंगिसेनासोहाई ॥ दक्षिणतमोयपुरपो  
चाये ॥ तितिनृपतोमगमें-आये ॥ १७ ॥ भद्राकहेपिताममतोई ॥ मोरमायासतकुंमोई ॥ दिनेमो

यनिजघरुं बोलाइ ॥ शोहिणी येनाकृतममताई ॥ १८ ॥ इनकेचरणपरसहेजोते ॥ जन्मजन्ममें होम  
मसोते ॥ कर्महुं सें भ्रमतेमतेहुं ॥ चरणपरससंमिरेउतेहुं ॥ १९ ॥ सोरजा ॥ लक्ष्मणाकहेसंनि ॥ प्र  
भुजन्मकर्मनारदसं ॥ प्रभुमेंममचितपुनि ॥ निवासकरिकेरहेते ॥ २० ॥ चोपाई ॥ पुनिविचारिके म  
नमांई ॥ चुरेप्रभुनेकमलायाई ॥ इहत्सेनममतातहितोते ॥ मममतज्ञानिउपायकियोते ॥ २१ ॥ तो  
रस्वयंवरमेमछकिना ॥ अरजूनपावनलियेषविना ॥ सोमछचहिरहेउछाई ॥ स्तंभरिगउंचहृगे  
देखाई ॥ तेसेमममछदरशोनाई ॥ स्तंभमूलकलज्जातलमांई ॥ २२ ॥ यहवृतिपांकेनिनृपसवतेहुं  
मोरतातपुरआयेतेहुं ॥ प्रसूवास्त्रज्ञानेहाहा ॥ गुरुकृतआयेहजाकतेहा ॥ २३ ॥ मोरतातनेपु  
जेउतवही ॥ धनुषबाणसभामेतवही ॥ जिनेउगाइचरावनहा ॥ समरथनोहितनेकोतेहा ॥  
कोउचापकुंलेतचराइ ॥ पणछमारसंगिरिभुजाई ॥ २४ ॥ शिशुपालमागधसुरविरा ॥ भिमइयो  
धनकराणसंधिरा ॥ इनुंनेलिनेधनुषचराइ ॥ मछकिस्थितिज्ञानतनांई ॥ २५ ॥ लोहा ॥ अर्कन  
धनुषचरायके ॥ मछचेखितलमांई ॥ स्थितिज्ञानिज्ञाररारेते ॥ परसेउविधेनाई ॥ २६ ॥ चोपाई ॥

निवरनिपायेउनृपहा ॥ मानभंगभयेउसवतेहा ॥ तवप्रभुग्रहीधनुषसतकिना ॥ तामहीसांधे  
बाणप्रविना ॥ २७ ॥ देखिमछजलमिणकवाग ॥ बाणहुंसेहरिमोकदराग ॥ रविअभितितमुहुं  
रुंकुंपाये ॥ जयशहकृतहुंभिचताये ॥ २८ ॥ देवसमनकरिकितेतवही ॥ रंगमंउषमिमाइहमत  
वही ॥ पगमेंनुपुरबोलेविज्ञाला ॥ कटिपरहेमजतरत्वमाला ॥ २९ ॥ हिगालवसनअंगभारी  
हसतवदनकचरीफुलधारी ॥ केरासहीतकुंडलकिनेहा ॥ कांतिपरतकपोलपरतेहा ॥ ३० ॥ क  
राक्षकृतमुखउंचठवाई ॥ चहुंओरदेखिनृपसवताई ॥ धिरेहोइप्रभुकुंभमांई ॥ मालाधरकेउर  
हरताई ॥ ३१ ॥ सोरजा ॥ मृदंगपटहाशांस ॥ भेरिआनकआदिवजही ॥ नरवृत्किआंजिअंरव  
नचतगायकगावततो ॥ ३२ ॥ चोपाई ॥ याविधहरिवरेमेंतवही ॥ इरषाकृतनृपसहृतनतवही  
तवहरिमोकुरथवेवाई ॥ सारंगधरिगादेरणांमांई ॥ ३३ ॥ कुंचनरथराकचलाई ॥ नृपदेखतके  
सरिसिंहनाई ॥ कितनेनृपमगहंधतआई ॥ धरिधनुषसिंहश्वानकिनाई ॥ ३४ ॥ सारंगबाणस  
मुहसेणहुं ॥ करपदकांधकरायेतेहुं ॥ सवराणमेंगिरेउततकाला ॥ कोउरगततिभगेउपाला ३५ ॥

भा. द. उ.  
॥ ८५ ॥

युनिषु भुजितपुरिगये सोऽं ॥ धृजपटविचित्रोरणतोऽ ॥ कररहेजायासवपुरमां ॥ छरमतिरुं  
मेप्रभुः प्रा ॥ ३६ ॥ पुनिसवेधिं कुं ममताता ॥ पुजतवसनभूषनमेख्याता ॥ शशाः प्रासनः प्रादि  
कतेऽ ॥ दासीसेपनप्रभुकुं तेऽ ॥ भटरथवातीः प्रायुधतेहा ॥ दिनपुरणकुं भक्तीसेतेहा ॥ ३७ ॥  
प्रष्टपतराणीहमहेतेऽ ॥ याकेगेहदासीभइतेऽ ॥ सोलहनारमिलिकहेमोऽ ॥ दिगविजयुं  
भुमाकरसोऽ ॥ रातकन्यारुंधेघरमां ॥ छोराइलेगयेहनितां ॥ ३८ ॥ दोपदिसवभूरासहितोऽ  
इइपदकवेतोसोऽं ॥ स्वराभुमिकेभोगहीतेन ॥ अणीमादिवेराजसखतेने ॥ ३९ ॥ ब्रह्माकिस  
सलोकरहावे ॥ हरिपदमेचं मुक्तिरहावे ॥ इतनेसवहमइछतनां ॥ इछतहरिपदरजशिरता  
इ ॥ ४० ॥ श्रीकुचकुं कुमकरतरताहा ॥ वजनारिं इछतहेतेहा ॥ त्णवेलिभिः लत्रियाहीतोऽं ॥ गो  
चारतगोपइछतसोऽं ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ इतिश्रीप्रतभागवन ॥ दशमस्कंधमितेऽ ॥ दोपदिपुछि  
पतराणिहि ॥ भूमानंदकहेऽ ॥ ४२ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामी ॥ शिष्यभूमानंदहतभावायाः  
श्रीतितमोः ॥ ध्यायः ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ वसुदेवजज्ञल्लवही ॥ मुनिहीसमागमतोऽ ॥ प्राग्पादेत

प्र. ८३

॥ ८५ ॥

सबंधिकुं ॥ चोरसिद्धं मेसोऽं ॥ १ ॥ दोपाइ ॥ शुक्रकहेकं निहरिवारगाथा ॥ विस्मितभयेत्रि  
यासवसाथा ॥ पृथागंधारिदोपदितोऽ ॥ सुभद्रासवन्पदारसोऽ ॥ भक्तहृष्टके गोपियुंतेऽ  
हरिमैरतिदेखचारवितेऽ ॥ २ ॥ नागीनारिमैरनरताइ ॥ करतहरिगाथमां होमां ॥ हृष्टमराम  
केदरदानकाजा ॥ तेहिनारः प्रायेमुनिराजा ॥ ३ ॥ आसरुनारदचंचनः अमिता ॥ विश्वामित्रश  
तानंदकीता ॥ देवलगौतमभारदाता ॥ भृगुपरशुरामशिष्यसमाजा ॥ ४ ॥ वसिष्ठगालवपुल  
स्ततोऽं ॥ कश्यपमार्कंडेयः अत्रिसोऽं ॥ हितव्रिताकृतब्रह्मसता ॥ बृहस्पतिः अगिराः प्रबंधुता  
५ ॥ प्रगस्ययाज्ञवल्करहितोऽं ॥ नामदेवादिः प्रायेकोऽं ॥ प्रागेवेवेथेनूपतेहा ॥ रूषीदेख  
खरेभयेतेहा ॥ ६ ॥ हृष्टमरामपोरवसवतेऽ ॥ जगतपुत्रतानिनमेतेऽ ॥ सवन्पकृषीकुपुन  
तजेसे ॥ रामहृष्टपुत्रतपुनितेसे ॥ ७ ॥ दो रक्तः ॥ प्रादरः प्रासनदिन ॥ पाशः अर्घ्यधुपदिप  
पुनि ॥ सुमनचंदनतनकिन ॥ सुखिहोइवेवेसबसो ॥ ८ ॥ दोपाइ ॥ धर्मकेरक्षकप्रभुहीतो  
उ ॥ सभासुनतचौलेहिसोऽं ॥ सुफलतन्मः प्रवभयेहमारा ॥ योगेश्वरकिनदर्शतिहारा ॥ दे

भा. द. उ.  
॥ ६६ ॥

वनकुंभिडुलभतेऽङ्गं ॥ दर्शनकिनतन्मफलतेऽङ्गं ॥ ८ ॥ तिर्थस्नानमैतपबुधिताई ॥ प्रतिमामेदेवबु  
धिरहाई ॥ असेहमकुंदरशनजोते ॥ पद-अरचनस्यत्रापुनिसोते ॥ अघ्नवदनसाक्षातभयेऽङ्गं ॥ अ  
संभवितहेहमकुतेऽङ्गं ॥ १० ॥ गंगा-आदिकतीरथतेहा ॥ मृत्तिकपालामयदेवतेहा ॥ अघकुनह  
रेअसेनाई ॥ वरुकावेहरिलेतहीताई ॥ साधुदरशनदेवेजवही ॥ तुरतहि-अघहरिलेवेतवही ॥  
११ ॥ अगनीसूर्यचंद्र-अरुतारा ॥ भूमिजलवायुनभही-अपारा ॥ मनवचक्रियेनपासनातेऽङ्गं ॥  
भिनभिनरुपसदाहेतेऽङ्गं ॥ सोईसवे-अज्ञाननहरही ॥ साधुमुरतमेंहरे-अघतवही ॥ १२ ॥ सोहा  
वातपितकफरुपदेहकी ॥ तामी-अहंबुधितेऽङ्गं ॥ दारादिकमेंममबुधि ॥ जलमितीरथबुधिते  
ऽङ्गं ॥ १३ ॥ प्रतिमामेदेवताबुधि ॥ सदारहनहेताई ॥ याविधबुधिसाधुविषे ॥ नहीसोत्वरकहा  
ई ॥ १४ ॥ चोपाई ॥ शुककहेहृदमकेवचएऽङ्गं ॥ इनकुंनहीघटितसवतेऽङ्गं ॥ संनिसबकृषीकिवु  
दिस्रमाई ॥ चुपहीइरहेसंनिकेताई ॥ १५ ॥ अनिश्वरपनोघभुकीजोते ॥ मुनिसवउरमेंविचारासा  
उ ॥ जनविारवाचनप्रभूतेकिना ॥ प्रभुसेबोलेउमुनिप्रविना ॥ १६ ॥ तत्ववतामैउत्तमतेहा ॥ त

अ. ६४  
॥ ६६ ॥

यदरा

वमायानेमोहेतेहा ॥ नरचेणसेमूरकिमाई ॥ आचरणकरतअनिश्वरतांई ॥ याविधतवचेणकुं  
जोही ॥ जगकरताकेइराहममोही ॥ १७ ॥ अक्रिय-आत्मस्वरुपसेतमही ॥ जगकरहरपालतन  
बेधही ॥ भुसेघरादिहोतहेनैसे ॥ सोसबभुमिहोइरहेतेये ॥ १८ ॥ सोरज ॥ निजजनरक्षणकात  
शुधसत्वमयरुपधरही ॥ वेदमगारखहीराज ॥ युंतानिद्धितकुंमानत ॥ १९ ॥ चोपाई ॥ दंड-रुही  
द-रि-आ-ले-ति-हारी ॥ सोवेदहेहृदयतिहाग ॥ कार्यकारणब्रह्म-आगारा ॥ सोवेदकुंवरताचही  
जोते ॥ ब्राह्मणकुलतूममानतसोते ॥ तीरगेहरुपवेदहीएऽङ्गं ॥ ब्राह्मणपदेवुपालहीतेऽङ्गं ॥ २० ॥  
तपविसाहृगतन्मकितोते ॥ फलपायेतवसंगसंसेतोते ॥ नमस्कारहमारउतेऽङ्गं ॥ मानंअप्रभुह  
याकरितेऽङ्गं ॥ २१ ॥ नहीजानततोयभुपसवेऽङ्गं ॥ एकथलवासितादवतेऽङ्गं ॥ जगकरदरपालक  
तुमतेऽङ्गं ॥ नितमायामैतूमछुपेऽङ्गं ॥ २२ ॥ स्वप्रकुंनरपायेउतोते ॥ मनरुपसिंदकुंजानतसोते ॥  
तासेपरनितनररुपतेसे ॥ ताकुंनहीजानेजनतेसे ॥ २३ ॥ स्वप्रतल्पविषयमेंतेहा ॥ इंदिघहन  
नमायतेहा ॥ तासेभ्रमतचितविवेकनाशि ॥ तोयनजानेप्रभुसखरासी ॥ २४ ॥ सोहा ॥ अघ

वेद-जन

श्रीघहरंगतिरथ ॥ तिनकारणापदतोर ॥ वउजोगिनहीदेखेतो ॥ हमदेखननिशिभोर ॥ २५ ॥  
 चौपाई ॥ वडुभक्ति करि आगेतिहारी ॥ पायेतुमकुं वध्याजारी ॥ भक्ततिहारा हमकुं जानि ॥ क  
 रहुं प्रभुं युहसारेगपानी ॥ २६ ॥ शुक्रकहे हृदमदिगमुनिआई ॥ धृतराष्ट्र युधिष्ठिरताई ॥ आ  
 ग्यामागिनि ज्ञानाश्रमएहुं ॥ ज्ञानेकुं मनधरतहीतेहुं ॥ २७ ॥ ताकुं देखवसुदेवजोउं ॥ कृषीदि  
 गताईनाई शिरसीउं ॥ पकरेउचरनकृषीकेएहुं ॥ युबोलतही वसुदेवतेहुं ॥ २८ ॥ हेकृषयोनसु  
 मेंतूमताई ॥ सुवदेवतारहही तूममाई ॥ कर्मसे कर्मनाशसुहीई ॥ सोउपायकहौ तूममोई ॥  
 २९ ॥ नारदकहे सुनो कृषिसोउं ॥ वसुदेवसुभलियुं पुछतजोउं ॥ तजी हृदमकुं निजसुतजानी  
 याकी आश्रय तूममतमानि ॥ ३० ॥ सारग ॥ वडुभलयहेजोउं ॥ जनकुं प्रनादरकारण ॥ गंग  
 तटवासिसोउं ॥ सुभलिउं प्रौरतिरथकरही ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ लयउसतिरुपकालजोउं ॥  
 हरिज्ञाननाशनकरेसोउं ॥ सो प्रोर आपसैंक बुनजावे ॥ गुणसैंज्ञाननाशनही पावे ॥ ३२ ॥  
 अदितिई श्वरहेतेहुं ॥ सुखदुखरागकर्मकततेहुं ॥ सत्वादिगुणहेजोउं ॥ इनकोज्ञान

नहनहीसोउं ॥ ३३ ॥ प्राणआदिनिजकार्यकहाई ॥ तासैं हृदमरहेउछाई ॥ बदरधवरराहुं सैंतेसे  
 सुखछाईरहेतेसे ॥ त्रैसे हृदमकुं प्रज्ञतेहुं ॥ मनुष्यतुल्यमानतहितेहुं ॥ ३४ ॥ शुक्रकहेसुनी  
 वसुदेवताई ॥ बोलतवलहरिनुपहीसुनाई ॥ कर्मसैं कर्मनाशहीतेहुं ॥ अज्ञासे विष्णुमख  
 करितेहुं ॥ यतही यज्ञपुरुषकुं तवही ॥ कर्मनाशहीवेसबतवही ॥ ३५ ॥ चितउपनामदेखाये  
 एहुं ॥ ज्ञासुज्ञानकवानेतेहुं ॥ सुगमयोगधर्महीएहा ॥ आत्माकुं सुखदायकतेहा ॥ ३६ ॥ दि  
 ज्ञातिज्ञागृहस्थहेताई ॥ एहीविन प्रौर मोक्षमगनाई ॥ अज्ञाकतशुधधनसेतोउं ॥ इराकुं यज्ञ  
 नोमखकरसोउं ॥ ३७ ॥ हीहा ॥ यज्ञदानसैंदुषला ॥ वितकिततेबुधिमान ॥ सुतदारकी  
 तोइत्राणा ॥ भोगभोगितजज्ञान ॥ ३८ ॥ चौपाई ॥ स्वरगलोककीदुषलातेहुं ॥ देहनाशसैंतज  
 हितेहुं ॥ यामसुखकिदुछासागि ॥ वनमेंतपकरहीचितरागी ॥ ३९ ॥ तिनकृणकतजन्मेदि  
 जतोउं ॥ देवकृषी प्ररुपीतरणसोउं ॥ ब्रह्मचर्यसैंकृषीरणतेहुं ॥ देवराणयज्ञसैंतेहुं ॥ ४० ॥  
 प्रज्ञासैंपितरुणतरेंतना ॥ त्यागकरेसोगिरेमतिहीना ॥ कृषीपितरणछुदेदोउं ॥ मखक

रिद्धदेववरासोऽत्र ॥ निनराकुं लुप्तोत्तमवही ॥ गेहसागकरं पुनितवही ॥ ४१ ॥ वसुदेवपरम  
 भक्तिसेवा ॥ पुत्रोहरितवसु नभयेते ॥ शुक्रकहेरुपीवचवसुदेवा ॥ संनितिनहीवरेकृत्विज  
 भेवा ॥ ४२ ॥ सिरनाधर्मसेवरेते ॥ कुरुवितमेतजावतते ॥ उन्नमसामधिहेतामो ॥ वसुदेव  
 कुंसेयत्करा ॥ ४३ ॥ मरुकिदिशाचलेजवही ॥ तदुसवस्त्रानकियेउतवही ॥ वसनभूषणक  
 मलस्रतपारी ॥ ओरनृपभयेहिअलकारी ॥ ४४ ॥ सोरना ॥ तदुअरुनृपकिदार ॥ तदुशालाम  
 हिआये ॥ नविनपदअलंकार ॥ भेटनसराजामकरधरि ॥ ४५ ॥ चौपा ॥ शंखमुदंगपटहअरु  
 भरी ॥ आनकरआदिवाताचनेरि ॥ नटरतकियुनाचतवही ॥ गंधर्वगातनारिकृतवही ॥  
 ४६ ॥ स्तवनकरतकतमागधनेहा ॥ करतअभिवककृत्विजतेहा ॥ नेत्रमेअननवसुदेवा ॥ त  
 तुंमारवणलिपेततवेवा ॥ ४७ ॥ अष्टादशपत्निकृतसेहे ॥ ताराविचरात्रिसुमनमोहे ॥ हारव  
 सननुपुरस्तेधारी ॥ कुंडलभूषणकृतसवनारी ॥ याकृतवसुदेवदिक्षितते ॥ मृगचर्मअभि  
 शेकयुंतेते ॥ ४८ ॥ तिनकेकृत्विजसभासदेहा ॥ रत्नहिरागलपटधरतेहा ॥ सोहतवसुदेवम

स्वमितेसे ॥ इंदुकेयागमेंतेसे ॥ ४९ ॥ बलहृदप्रसारकृतमहीता ॥ सोहतसवतीवकेदुश्रमिता  
 अग्निहोत्रआदिकनेहा ॥ आकृतविकृतभेदहीतेहा ॥ असेवदुमरुक्रियाते ॥ विधिनुतक  
 रिततदुश्रकुंते ॥ ५० ॥ दोहा ॥ पुनिकृत्विजकुदक्षिणा ॥ गोभूमिकसादान ॥ अलंकारकरीदेत  
 सो ॥ वदुधनकरकृतान ॥ ५१ ॥ चौपा ॥ पत्नीसंयातअचभृथते ॥ स्नानकरावतरुषीसव  
 ने ॥ पुनियरघुरामरुदमें ॥ यजमानकृतद्विजनाये ॥ ५२ ॥ स्नानकरिषटभूषणनेहा ॥ वे  
 दिजनकुदेवततेहा ॥ पुनिध्यानआदिकजननेता ॥ अनकुंसेपुनतनृपतेता ॥ ५३ ॥ कृतदामान  
 तबंधुता ॥ विदर्भकीशालकुरुपुनितो ॥ काशिकेकेयसंतयतीउ ॥ सरचारणकृत्विजतीसो  
 उ ॥ ५४ ॥ सभासदसवअरुपीत्रहितो ॥ ताहिपारिवहेदिननृपसो ॥ पुनिहरिआगपामागि  
 कुं ॥ वस्त्रानकरतगयेतकाले ॥ ५५ ॥ धतराघुविडरभिष्ठातो ॥ मिमअरुनयुधिष्ठिरसो  
 उ ॥ नकुलसहदेवद्रीणपृथ्याही ॥ आसअरुनारदकुरुदमाही ॥ ५६ ॥ सोरना ॥ मिलततदकु  
 कृतहीत ॥ बांधवसवबंधुता ॥ सगपनसेभितचित ॥ विरहकष्टकृतदेशगहि ॥ ५७ ॥ चौपा ॥



भा. द. उ.  
॥ ७८ ॥

ओरजनसविगयेनितगोहा ॥ रामहृद्यप्रयसेनतेहा ॥ नंदकुं वरुधनदिनेहा ॥ तानकरिअतिर  
खेउतेहा ॥ ५७ ॥ यत्तरुपमनोरथजोते ॥ वरुदेवतरेउसिधुसोउ ॥ कुरुदवृतप्रसनमनहोई ॥ बोल  
तनेदकरपकरिसोई ॥ ५८ ॥ नंदतीपाशस्त्रिहरुपतेई ॥ करयोगिकुंडसजतेई ॥ हमारउपकारकि  
नतूमभाई ॥ अज्ञहमसोतानतनोई ॥ ६० ॥ उपमाविनमैत्रिकिनतेहा ॥ तूमकनुनेहिलुटेउतेहा ॥  
पेलेअस्मरथहमजोते ॥ तोरपियकलुकिनसोउ ॥ अवश्रीमदकुसेअधहाई ॥ आगुखडेनदे  
खततोई ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ कस्मानवहतेपुरुषकु ॥ रामकिश्रीमतहोई ॥ स्वजनबंधुकुनदेखत ॥ अ  
धरुहोईसोई ॥ ६२ ॥ चौपाई ॥ शुक्कहेअतीकरुदसेएई ॥ वरुदेवत्रोखिलचितभयेई ॥ नंद  
हृतमैत्रीकुसेभारी ॥ रोवतनेनमैलाइवारी ॥ ६३ ॥ रामहृद्यप्रवसुदेवकीएई ॥ प्रेमसेप्रियकरनेदने  
ई ॥ अज्ञकालकरीतडेमाने ॥ तिनमासवसेनेदसयाने ॥ ६४ ॥ परहिगालभूषनअमूया ॥  
ओरसामगिदिनेअतूया ॥ इच्छितसेपुरणकिनजोउ ॥ शकटजोतरिनदनेसोउ ॥ ६५ ॥ सोस्ती ॥ व  
रुदेवउग्रसेन ॥ बलहृद्यउधवआदितो ॥ पारिवर्हजोदिन ॥ ग्रहणकरिनेदचलेतव ॥ ६६ ॥ चौपा

अम. ७४

॥ ७८ ॥

ई ॥ वदेसेनसेतादवहा ॥ नंदपवाचनचलेउतेहा ॥ गोपगोपिनंदहरिपदमांई ॥ धरेउमनहरिशक  
तनताई ॥ ६७ ॥ गोपमधुरंगेगयेउतवही ॥ ओरसबंधिगयेनडतवही ॥ घृषाकृतूनजिकआयेतो  
ई ॥ करवृत्रिगयेउसवसोई ॥ ६८ ॥ वरुदेवमखकोउलवतेई ॥ कुरुवेतमैभयेउतेई ॥ कुरुदकेद  
रज्ञानभयेतेहा ॥ सवतनसेतडकरुदहीतेहा ॥ ६९ ॥ दोहा ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ रामस्कंधमि  
तेई ॥ वरुदेवमखकिनतिर्षमि ॥ भुमानंदकहेई ॥ ७० ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभुमानं  
रुहृतभाषायांचतुस्त्रीतितमोःध्यायः ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ हृद्यज्ञानदिनतानही ॥ पातकुंमृतकृत  
दिन ॥ बलहरिकिप्रारथना ॥ पंचाशिअध्याकिन ॥ १ ॥ चौपाई ॥ शुक्कहेवलहृद्यप्रसुतेरोई ॥  
तातनेकिनप्रार्थनासोई ॥ तासेवरुदेवचोलेआई ॥ मुनिवचकनकेविश्वसपाई ॥ २ ॥ प्रभाचवि  
जकृतईकोतानी ॥ हेहृद्यकहीबोलतवानि ॥ हेसकषणजगकेरोउ ॥ कारणप्रधानपुरुषसोउ  
र ॥ तिनकेभिकारणात्प्रमतेहा ॥ साक्षातईधूरतानितेहा ॥ तामेहेतगतीनसेहोहि ॥ ज्ञासेहोतनिन  
सबंधिसोही ॥ सप्तविधजगकारणजोते ॥ तूमविननांहिडसरोकोउ ॥ ३ ॥ प्राणहिक्रियाशक्ति

कदाई ॥ तिवही ज्ञानशक्ति कदाई ॥ सो त्मविश्वसरतके एऊं ॥ धारणयोषणाकरतहितेऊं ॥ ५ ॥ प्राणा  
 दिविश्वकारणतेऊं ॥ परतंत्रमसदृशदेतेऊं ॥ तामें कारणशक्ति तेहा ॥ परमकारण ईश्वरकी तेहा ॥  
 ६ ॥ सोरता ॥ शशिकांति अग्नि तेज ॥ रविप्रभासो त्मप्रभो ॥ तारो वितमे एज ॥ सताचलपणुं सोभि  
 तुमही ॥ ७ ॥ चोपाई ॥ गिरिकिथिरताभुमिगंधतोउ ॥ प्राणिधरभुशक्तिवसोउं ॥ त्मिजिवनप  
 णुतलमेंतेऊं ॥ रसपणुं यामें तो त्मतेऊं ॥ ८ ॥ सहस्रोतबल गति चेष्टा तेति ॥ वायुमें तवशक्ति हे  
 तेती ॥ दिशामरुदिशामें प्रवकाशा ॥ तवशक्ति नभसृकभासा ॥ परापरुपेंति मध्यमावानी ॥ वे  
 खरिसोतवशक्ति ही तानी ॥ ९ ॥ विषयप्रकाशपणुं इंद्रिमांई ॥ इंद्रिकेई राते देवकदाई ॥ बुद्धिनि  
 श्चै तिवस्मृति तेहा ॥ सो सवहेतवशक्ति तेहा ॥ १० ॥ भुतही कारणतम अहंकार ॥ इंद्रिकारणराज  
 सधार ॥ देवही कारणसात्विक तोउं ॥ तिवजन्मकरप्रधान सोउ ॥ ११ ॥ दोहा ॥ नाशवंतसचव  
 स्ममें ॥ नाशनपावे तोउं ॥ भुमिकनकसुरहनही ॥ तवशक्तिसवसोउं ॥ १२ ॥ चोपाई ॥ सत्वरत  
 तमगुण तोतिना ॥ इनकार्यमदतत्वादि किना ॥ त्मत्रयमिक ल्ये हे एऊं ॥ तवयोगमायानसव ॥ ६० ॥

तेऊं ॥ १३ ॥ विराटनुमें हे सव एहा ॥ त्मयामें अनवे हो तेहा ॥ सचप्रपंचपरहो त्म तोउ ॥ अज्ञां  
 निनरताने नसोउ ॥ देह अभिमानसे कर्मकरही ॥ चक्रवानिमें सो अचरही ॥ १४ ॥ ज्ञानकृत इं  
 द्रि हेतामांई ॥ अतिडलंभनरकितनुं आई ॥ स्वारथमें प्रमत्त ऊं किएहा ॥ नयद्युगदमायासे ते  
 हा ॥ १५ ॥ देहमें अहंमति कृतमें तेऊं ॥ मममति छोहपाससे तेऊं ॥ प्रधानपुरुषके ईश्वर सोउ ॥ ना  
 हिहमारे कृत त्मसोउं ॥ १६ ॥ भुभारक्षत्रिमारनकाता ॥ प्रगतभये त्मस्कर शिरताता ॥ याका  
 रणतवशरणहमाई ॥ संसृतिभयदेतहो मिटाई ॥ १७ ॥ सोरता ॥ विश्रायुतदृष्टाकरेऊं ॥ देहमें  
 आत्मबुधिममही ॥ परमेश्वर त्ममें ऊं ॥ पुत्रबुधिसोरीनुं मिटो ॥ १८ ॥ चोपाई ॥ कृतिकागेह  
 में किनतुममोई ॥ अज्ञतमे युगयुगधरुं तनुं सोई ॥ धर्मरक्षालियुं धारत तोउं ॥ वरतवमायाताने  
 नकोउ ॥ १९ ॥ शुककहे प्रभुसुं नीतातचोनि ॥ हसिबोलतनश्रुता आनि ॥ ताततवचच अर्थत  
 तमाने ॥ तत्वसमुह त्मकिनहमतावे ॥ २० ॥ हमत्तमवलपुस्के तन जोउं ॥ सचतगत्रद्युहे युं ज्ञा  
 नोउं ॥ निरगुणनिस्यतोतिरुपएक ॥ नितहतगुणसे रचिअनेक ॥ देहपुं नितामें अनवे एऊं

वक्ररूपहीतस्युतिवहेतेऽङ्ग ॥ २१ ॥ सुयंचभुतनेरचिसवदेहा ॥ तामेवप्रतीखपेभुताहा ॥ वरजोद  
 होवतहिभुताङ्ग ॥ तिसैजनातपृथुकतिवतेऽङ्ग ॥ २२ ॥ दोहा ॥ शुककहेषभुनेकिनतो ॥ वचनकं  
 निवसुदेव ॥ अज्ञानबुधिमिरायके ॥ सुयभयेउततखिव ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ गुरुसुतलाईदिनेसंती  
 तेऽङ्ग ॥ देवकीविस्मोपाईकेतेऽङ्ग ॥ हरिबलकुं सनाईसुततेहा ॥ कंसहनेसुतसमरेतेहा ॥ २४ ॥ इख  
 सेलोचनमैजललाई ॥ बोलतदेवकीनिजसुतताई ॥ हेबलहृदमसुवदेवइत्रा ॥ जानेअतआदि  
 केअधिया ॥ २५ ॥ भूमिभाररूपन्यहेतेता ॥ वेदमगलोपिचरततेता ॥ तिनकेनात्राकरनलियु  
 सेजे ॥ मोरविषेषगदेत्ससोउ ॥ २६ ॥ तवअत्राप्रुषतिनअत्राभाया ॥ तिनअत्रागुणातिनता  
 रचाया ॥ पालननात्राकरतजगताई ॥ आद्यपुरुषतवत्रारणेआई ॥ २७ ॥ सोरग ॥ गुरुनेधरेतो  
 ई ॥ वक्रकालमृतसुततेऽङ्ग ॥ तमपुरिकंलाईसोई ॥ गुरुकुंदक्षिणादिनत्स ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ यो  
 गेश्वरकेईश्वरसोउ ॥ ममसुतआनमिलाओसोउ ॥ भोजपतिनेमारैउतेऽङ्ग ॥ देखनमैइछतेहोते  
 ङ्ग ॥ २९ ॥ मातपगयेहरिगमसोउ ॥ सुतलगयेयोगसेसोउ ॥ सुतलमैबलिप्रभुकुपाई ॥ करी ॥

दर्शनआनेदकृतआई ॥ निजदेवतानिआयेधाई ॥ परिचारकृतदंडवतनाई ॥ ३० ॥ सिंहासन  
 परसोउबेगाई ॥ चरणधोतयाकेसुदपाई ॥ ब्रह्मारिकुं सुधकरतोउ ॥ जनकतबलिधरिगिरसो  
 उ ॥ ३१ ॥ अमृत्यपटभुषणगंधलाई ॥ अमृतताबुलदियतगाई ॥ सुतधनगेहदेहनिजतेऽङ्ग  
 पुजतबलिअरपणकरिाङ्ग ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ बलिषेमभित्तुधिसै ॥ धरिचरणाकीधान ॥ स  
 जलनेनरोमुहरवही ॥ बोलतगदगदवान ॥ ३३ ॥ चौपाई ॥ नमोतगधरशेषबलदेवा ॥ नमुह  
 झसदानेदभेवा ॥ रततमस्वभावकृतहमसोउ ॥ योगेश्वरकुंडलभतोउ ॥ सादरानत्सुहमनेपा  
 वा ॥ छपाकरिकेतूमतोआवा ॥ ३४ ॥ दैत्यरुदानवगंधवतेहा ॥ सिधविद्याधरचारणतेहा ॥ य  
 क्षरक्षपित्राचभुततोउ ॥ तोरेनिसवैरिहमसोउ ॥ ३५ ॥ वैरकरिचैसुआदितेऽङ्ग ॥ कामकुंसेगो  
 पिसवतेऽङ्ग ॥ इतनेसवहरितूमकुपाये ॥ सतगुणीकरतवधामनआये ॥ ३६ ॥ याविधयोगमा  
 यातवतेऽङ्ग ॥ ज्ञानतनहियोगेश्वरतेऽङ्ग ॥ तबहमकेसैतानेस्वामी ॥ ममप्रसनहोअंतरतामी ॥  
 ३७ ॥ शिवनेसेतोगिहेतोउ ॥ तोरचरणदुंदतहेसोउ ॥ तिनमेमचितरेवेजवही ॥ गेदअंधकु

भा. द. ३.  
॥ ६२ ॥

पसेनिकसिनतवही ॥ ३७ ॥ एकाएकीवनमेंताई ॥ श्रांतरकुंगिरेकलपाई ॥ अथवासवकेसखा  
कहाई ॥ वदेसाधुसगरकुंमेंताई ॥ ३८ ॥ सबतीवइत्राआप्यातयजोउ ॥ ताकुंपालतजोतनसोउ  
विधिनिषेधसेलुटतएऊ ॥ पापरहीतकरीकतेऊ ॥ ३९ ॥ सुदमकहेसंतुंचलिकऊंताई ॥ स्वा  
यंभुमनवंतरमांई ॥ मरिचिसैतुणांमैजाता ॥ घटपुत्रसोदेवविख्याता ॥ ४० ॥ सुतासंगविद्यु  
वीरततोई ॥ जलाऊंकुंहसतहीसोई ॥ इनअथसेअकरभयेउ ॥ हिरण्यकुत्रिपुसेंनयेउ ॥ ४१ ॥  
योगमायापगवायेएऊ ॥ देवकीउदरमीजायेतेऊ ॥ कंसऊंनेमारिपुनिएहा ॥ करतवोकसत  
मानितेहा ॥ ४२ ॥ सोरता ॥ तवदिगआयेएऊ ॥ ताकुंलेवनहमन्ताई ॥ शोकमेरिमानेऊ ॥ सा  
यलुटिकरलोकजही ॥ ४३ ॥ सोपाई ॥ सारउफीथपरिषंगतेहा ॥ शुकभुक्घृणीपुतंगतेहा  
मोरुषसादसेंघटएऊ ॥ मुक्तिकुंपावेगेतेऊ ॥ ४४ ॥ शुक्रकहेबलिहरिवचसंनि ॥ पुनेउवलह  
मकुंपुनी ॥ सुतलसेंघटपुत्रकुंलाई ॥ देतमातकुंघारकोआइ ॥ ४५ ॥ देववाखकुं देवकीएहा  
मिलीगोदवेगयेतेहा ॥ पुनिपुनिमस्तकसंधिमाता ॥ धवरावततनपयसाक्षाता ॥ ४६ ॥ वि

अ. ८५

॥ ६३ ॥

धुकिमायाऊंसेंमोही ॥ निजसुतमानिषसनभइसोही ॥ षभुपितपयअववोषरदेऊं ॥ अम  
तत्स्यकोपानकरीतेऊं ॥ ४७ ॥ नागयाणकुंपरशितेहा ॥ देवरुपपुनियायेउएहा ॥ हरिवलवस  
वेवंदेवकीताई ॥ नमनकियेचरणेशिरनाइ ॥ ४८ ॥ सबजनदेखरहेथेएऊं ॥ देवलोकमेंगयेउते  
ऊं ॥ मृतसुतआतजातकुंजोई ॥ त्रिस्मितहोरहीदेवकीसोई ॥ मानतमायासुदमकिएहा ॥ नि  
जसुतरुपरचाइतेहा ॥ याविधहरिकेपाकमजोउ ॥ अनंतआशुूरुपहीसोउ ॥ ४९ ॥ सुतकहे  
हरिकेचरितनेऊं ॥ अखिलनरुकेअघहरतेऊं ॥ आससुतनेवरणीताऊं ॥ भक्तकानकेभूष  
णतेऊं ॥ याकुंगातसुनावतकोउं ॥ निरभयधामहीपावेसोउ ॥ ५० ॥ दोहा ॥ इतिश्रीमतभाग  
वत ॥ इमामस्कंधमितेऊं ॥ मृतसुतमाकुंलाइदिन ॥ भूमानंदकहेऊं ॥ ५१ ॥ इतिश्रीसहजानं  
दस्वामिशिष्यभूमानंददत्तभाषायांपंचावृत्तितमोःध्यायः ॥ ८५ ॥ दोहा ॥ अर्कनसुभद्रा  
हरे ॥ सुदमिधिजाताई ॥ रूपविप्रकुंआनदही ॥ जगामिअध्यायमां ॥ १ ॥ सोपाई ॥ परिक्षी  
तकहेपितामहीमोरी ॥ भगिनवलहरीऊंकीकिशोरी ॥ याकुंअरकनपरनतनेऊं ॥ जाननइछा

भा. २. ३. ॥ ६३ ॥ हेकहोतेऽं ॥ २ ॥ शुक्रकहेऽर्कननिर्थाई ॥ फिरतभूमिपरप्रभासआई ॥ निजमायाकिसृतासं ॥ ६६ ॥  
 ॥ ६३ ॥ निरु ॥ बलदेतडयोधनकुतेऽं ॥ ३ ॥ याकुइछीदारकांआई ॥ त्रिदंदिंकीवेषवनाई ॥ पुरजन  
 याकुपुनतसबही ॥ वरपरहेकयालियुतवही ॥ ४ ॥ याकुजानतनही बलजेऽं ॥ जिमावनघरुले  
 गयेतेऽं ॥ बलपिरसेश्रद्धाकृतजवही ॥ निमतअरकनएकहीतवही ॥ ५ ॥ सोरगा ॥ वरिक्सा  
 घरुमांई ॥ देखतअरकनपितिकृत ॥ मनधरतइतनाई ॥ सभडाइनकुंइछत ॥ ६ ॥ सोपाई ॥ दे  
 खरही लज्जातूततेहा ॥ मनहगधरिअरकनमेहा ॥ सकामचितपुनिजिष्णुजेऽं ॥ हरन  
 कुंअवसरदेखतेतेऽं ॥ बलआदिसबपुनततीउ ॥ कामातुरसरुखातनसीउ ॥ ७ ॥ देवता  
 नाकरनकुंहा ॥ रथपरडुरगबही गइतेहा ॥ हरतमहाधिअर्कनतोउ ॥ वरुदेवदेवकीह  
 रिमतसीउ ॥ ८ ॥ तवशूरविरतइरुंधतआई ॥ तिनकुंनशावतधनुंचराई ॥ करतकुलाहलज  
 डसबाएऽं ॥ केनारिभागसुलेचलेऽं ॥ ९ ॥ सुनिबलशोभकियेउजेसे ॥ पुनमचददेरुसिधु  
 तेसें ॥ इष्टमरुआरसबंधिआई ॥ पदपकरिरोकतबलताई ॥ १० ॥ दोहा ॥ मुदकतबलपर ॥ ६३ ॥

नायके ॥ वरवधुं कुं देत ॥ गजरथनरधनदासितो ॥ ओरसमाजनुतहेत ॥ ११ ॥ सोपाई ॥ शु  
 ककहेइष्टमकोश्रुतदेवा ॥ प्रभुभक्तिसेपुरणरहेवा ॥ सोतसुजानअलेपटाएऽं ॥ मिथिला  
 मेंरहेदिततेऽं ॥ १२ ॥ प्रहीअरुउद्यमविनमिलेआई ॥ भोजनतासेंजिचतसदाई ॥ देहनिरवा  
 र्मात्रमिलेतेऽं ॥ तासेतुष्टरहतहितेऽं ॥ १३ ॥ मैथिलरूपवक्रुलाश्रुतोउ ॥ अहमानहिनह  
 रिजनदोउ ॥ तापरप्रसनहेइहरिणऽं ॥ वारुकलायेरथबैवितेऽं ॥ १४ ॥ मिथिलोगयेमुनिक  
 नतेहा ॥ नारदअत्रिवामदेवेहा ॥ व्यासपरशुरामअरुणीअसिता ॥ मैत्रेयवृत्तिकणव  
 किता ॥ १५ ॥ ह्यमअरुचवनआदिकतेहा ॥ इष्टमसहितचलतमगतेहा ॥ पुरअरुदेवासी  
 जनतोउ ॥ पुजासमाजलाइपुनतसोउ ॥ १६ ॥ सोरगा ॥ आनतरुपांचाले ॥ कुरुतांगलकेक  
 यधन्व ॥ मलकंकभूषाल ॥ कुतीप्रधुकोनालअरण ॥ १७ ॥ सोपाई ॥ ओरगाजानरनारिजे  
 ता ॥ हरिमुखपानकरतहगतेता ॥ हरिहगभरिदेखेइतनाई ॥ सबजनकोगयोपापपलाई  
 १८ ॥ तत्वज्ञानदेतहरिताइ ॥ सरनरनेतोनिजतशागाइ ॥ सोतज्ञसबदिश्रअप्रघरतोउ ॥ ति

भा. २. ३.  
॥ ६४ ॥

नकुं सुनत चलत हरिसोत्र ॥ २० ॥ पुरदेववासिहरिकुं जानी ॥ आसिनमुखभेटधरपानी ॥ प्र  
भुनारखिमुखनेनकुलाई ॥ जोरि करनमसबमुनिताई ॥ २० ॥ मेथिलनृपश्रुतदेवसोत्र ॥ नितश्रुभ  
लीयेआयेयुसोई ॥ मानिकेप्रभुकेपदमाई ॥ गिरतहीनुंदेइकीनाई ॥ २१ ॥ लोहा ॥ बकुलाश्रुश्रुत  
देवजो ॥ सोनुहीनोतादित ॥ भेलेकहीकरजोरके ॥ दृष्टकुंमुनिसमेत ॥ २२ ॥ चोपाई ॥ करिअंगीका  
रनोतादोउं ॥ छिरुपहोईरूषीकृतसोत्र ॥ देरगयेदोनिजनीजगेहा ॥ द्विघरुआयेयुजानततेहा  
२३ ॥ असतनरताइसुनतनाई ॥ निजगेहलाइजनकनृपताई ॥ उन्नमआसनपरवेगाई ॥ उरमे  
हरखनेनजलाइ ॥ २४ ॥ भक्तिरुंसेनाइशिरएऊं ॥ चरनपरवालिपुनितलतेऊं ॥ कृतकुंदुव  
जलशिरचहाई ॥ ईशतूल्यरूषीकि करतपुताई ॥ २५ ॥ गंधसुमनपटभूषनलाई ॥ गोवृषदेतधु  
पदिपजगाई ॥ मिश्रबचनसेरूषीकुंरिआई ॥ चरणओलासतगोदउगाई ॥ २६ ॥ सोरग ॥ जनक  
कहेप्रभुजोउं ॥ चेतावतप्रकाशतही ॥ सकलजीवइकुंसीउं ॥ चरनस्मरतममदशीहि ॥ २७ ॥  
चोपाई ॥ ममएकातिभक्तसेंतोउं ॥ बलअरुलक्ष्मिवलभनसोउं ॥ सोतववचससकरनकाता

अ. ६६

॥ ६४ ॥

मोयत्समदर्शदिनमहाराजा ॥ २० ॥ तवमहीमाकुंजानतजोउं ॥ चरनकमलनतजेउसोउं ॥ अकिंच  
नअरुशगतमुनीतेहा ॥ ताकुंदेतनिजमुरतितेहा ॥ २१ ॥ जनकेजन्महीमेदनकाजा ॥ जइकुलमे  
प्रगटिमाहाराजा ॥ त्रिलोककोइरवहरहीजोउं ॥ याविधनवाविस्तारहीसीउं ॥ २२ ॥ नमुमेनाराय  
णरूषीतोई ॥ सांतसदातपकरतहीसोई ॥ बकुदिनममगेहरूषीकृतहरइऊं ॥ पदरजसेनिमिकु  
लसुधकरऊं ॥ २३ ॥ जनकइनेजाचेयुंजबही ॥ मिथिजासिसभकररहेतबही ॥ प्रभुकुकीनेज  
नकनेजेसें ॥ श्रुतदेवघरुंघभुकुंतेसें ॥ २४ ॥ लोहा ॥ मुनिकुंनमनकरीहर्षही ॥ वसनहीकरमे  
धार ॥ प्रभुआयेयुपोकारही ॥ धुनातचारमवार ॥ २५ ॥ चोपाई ॥ तणयीअरुसादीमाई ॥ प्र  
भुसबरूषीकुंकुंवेगाई ॥ प्रच्छिकुशालमुदपायेतेऊं ॥ धीतचरणदाराकृतएऊं ॥ २६ ॥ पदजल  
स्नानकरततेऊं ॥ देहसबधिपुनिनिजगेऊं ॥ हरषसहीतमनोरथपाई ॥ आमलअ्रादिकलदे  
तलाई ॥ २७ ॥ विरणमूलसेंवासीतजोउं ॥ अमृततूल्यस्वाइतजसोउं ॥ कस्तुरिकुशालसीआ  
दि ॥ अमविनसवपुजाप्रतिपादी ॥ प्राणीदोहविनमिलेआई ॥ असेअनसेंदिनजिमाई ॥ २८ ॥

भा. द. उ.  
॥ ६५ ॥

हरिकुंकेगेहरुपकृषीतेहा ॥ तिरथकारणापदरजतेहा ॥ हृष्टमन्नादिमीलेमोयुआई ॥ ग्रहअंध ॥ ५६ ॥  
कुपमीगिरेउताई ॥ ५५ ॥ असेतर्ककरिउरमाई ॥ वैवेकृषीकृकेदिगजाई ॥ सबंधिसतदाराकृत  
एऊं ॥ प्रभुपदचोपनबोलितेऊं ॥ ५६ ॥ मोरवा ॥ नितराकिसेंतूमकिन ॥ जंकपुनिपरवेशकिये ॥  
अबमोयदरशानदिन ॥ अंतरजामीआगोथे ॥ ५७ ॥ चोपाई ॥ सुतेउरनरमनऊंमैंरचेऊं ॥ स्वप्न  
किसृष्टीमाहिवसेऊं ॥ अचणकीर्तनादिभक्तीतेऊं ॥ करकेशुधकियेचिततेऊं ॥ तिनकेतूमचि  
तमाहिरहेऊं ॥ ममहृगगोचरभागपुचरेऊं ॥ ५८ ॥ कर्ममेंविक्षिपितचितजाके ॥ रहीउरमेंतूम  
डुरहोताके ॥ अचणकीरतनभक्तिसेंतोउं ॥ सुधचितमेंहोसमीपसोउं ॥ ५९ ॥ देहअभिमानसा  
गितेहा ॥ ताकुंमुक्तिपदतूमतेहा ॥ देहअभिमानीजीवताई ॥ ताकुंसंमतिदेतपमाई ॥ ६० ॥ कार  
णमुलप्रहृतीतेऊं ॥ कार्यमहतत्वादिकतेऊं ॥ उभयशरिरतीहागस्वामी ॥ सबनियंतातोयन  
मामी ॥ तवमायासेंओरकीतेहा ॥ हृष्टितूमआचतहोतेहा ॥ ६१ ॥ किंकरहमनिहारेस्वामी ॥  
शिक्षाकरमअंतरजामी ॥ नरकुंकेराकीअवधिएऊं ॥ हृष्टिगोचरतूमतोतेऊं ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ ॥ ६५ ॥

शुककहेश्रुतदेवचही ॥ संनिजनसरवकरतेऊं ॥ निजकरसेंकरपकरीके ॥ हसिहरिवोलत  
तेऊं ॥ ६५ ॥ चोपाई ॥ श्रुतदेवतवकल्याणकाजा ॥ आयेजानोसबमुनिराजा ॥ मोयउररस्विकी  
रतहेएहा ॥ पदरजसेंसुधकरेजगतेहा ॥ ६६ ॥ देवक्षेत्रतिरथसबतेहा ॥ दरशापरशान्तरचन  
सेतेहा ॥ बऊं कालेंसुधकरहीएऊं ॥ यहकृषीरगसेंतुरतेतेऊं ॥ ६७ ॥ सबघाणीमेंब्राह्मणतो  
उ ॥ तपविद्यातुष्टिकृतसोउ ॥ मोरकलाउपासहीतेहा ॥ जन्मऊंसेंश्रेष्ठहेतेहा ॥ ६८ ॥ ब्राह्मण  
सेंवलभनहीकोउ ॥ चतुरभुजरूपमेरोसोउ ॥ सर्ववेदमयविप्रतेऊं ॥ सर्वदेवमयहमहेतेऊं ॥  
६९ ॥ मोरगा ॥ डुरबुधिदोषहृष्टिकर ॥ पतिमामेपुसुबुधिपुनि ॥ मोकुंनजानहीनर ॥ अपमानकरी  
ममविप्रकी ॥ ७० ॥ चोपाई ॥ याविश्वकेकारणतेहा ॥ महतत्वआदिकसबतेहा ॥ तामेंजान  
तहेद्विजएऊं ॥ अंतरजामिमोकुंतेऊं ॥ ७१ ॥ श्रुतदेवयहकारणतूमतेऊं ॥ मोयुतानिपुनऊं  
रूषीएऊं ॥ रूषीपुजामेंहमहीपुजाई ॥ याविनबऊं धनसेंदमनाई ॥ ७२ ॥ शुककहेप्रभुनेआगा  
दिना ॥ आसकृतकृषीकुंपुनिप्रवीना ॥ एकात्मपणेआराधिसोउं ॥ प्रभुकीपदविपायेउदोउ ॥ ७३ ॥

सोऽनुनिजभक्तकुंहरितां॥ वेदमगको उपदेशकरे॥ भक्तकिभक्तिज्ञाननतेहा॥ द्वारवतिपुनि  
 गयेउतेहा॥ ५४ ॥ दोहा॥ इतिश्रीमनभागवत॥ दशमस्कंधमिते॥ अर्जनहरिकभद्राकुं  
 भुमानंदकहे॥ ५५ ॥ चौपाई॥ इतिश्रीसहजानेदस्वामिशिष्यभुमानंदहृतभावायोषरु  
 तितमोऽध्यायः॥ ६६ ॥ दोहा॥ नारायणानारदकुंको॥ वादवाताशीमे॥ वेदस्कृतिहिरुत  
 त॥ निरगुणपर्यंतने॥ १ ॥ चौपाई॥ नृपकहेगुणकोकार्यतेहा॥ श्रुतिउंहेतोसबक्युतेहा  
 कार्यकारणपरब्रह्मते॥ अनिर्देवाअरुनिरगुणते॥ तिनकुंकेसंपातहीहा॥ शुकमे  
 योममसंशयतेहा॥ २ ॥ शुककहीबुद्धिमनइदियाण॥ त्रिवकुंसरततईशक्तज्ञाना॥ पंचविष  
 यभोगनसमाजा॥ जन्मलियेकर्मकरनकाता॥ ३ ॥ देवलोकेमतीवसोजाई॥ स्वभोगतहेइ  
 तनेताई॥ मुक्तिकेलियेरचदिनहा॥ बुद्धिमनइदिश्रुतिउंतेहा॥ ४ ॥ ब्रह्मपराउपनिषदे  
 हा॥ सनकादिकधारेथेंतेहा॥ अज्ञातमनइदिसंज्ञीउं॥ उपनिषदकुंधारेकीउं॥ देहउपा  
 धिततीनरए॥ परमधामकुंपावेते॥ ५ ॥ नृपइतिहासकइतूमताई॥ नारायणमहीमा ॥ ६ ॥

ज्ञामांई॥ नारायणानारदकीजीउं॥ संवादअसगाथासिसोउं॥ ६ ॥ सोरजा॥ एकसमेउनारद  
 लोकफीरतगयेदेखन॥ सुनातनरूषीकोपद॥ बदरिआश्रममांइए॥ ७ ॥ चौपाई॥ भर  
 तखंडमेंजनहेतोउं॥ तिनकेसुभलियेषभुसोउं॥ धर्मज्ञानसमकृततपजे॥ कल्पपर्यंत  
 करतहीते॥ ८ ॥ कलापयामकुंकेनिवासी॥ रूषीसभाबैवेचइंपासी॥ ताकुंनारदजीशि  
 रनाई॥ पुछतअसनारायणतांइ॥ सबरूषीसंतकह्योए॥ ब्रह्मवादजनलोकभइते॥  
 ९ ॥ प्रभुकहीनारदआगुंभये॥ जनलोकेब्रह्मविचारजे॥ उर्धरेतामुनिसबएहा॥ मान  
 सिमृष्टीकेसबतेहा॥ १० ॥ श्वेतछीपनारदतूमजाई॥ अनिरुधरुपममदेखनताई॥ तबजन  
 लोकमिवादभयेउं॥ जामेश्रुतीउसइरहेउ॥ ११ ॥ दोहा॥ इनमेंअसप्रधमभयो॥ जोतूमपुछत  
 मोई॥ सनकादिकएककहतही॥ तिनूसनतहेसोई॥ १२ ॥ चौपाई॥ सनंदनकहेनिनहृतने  
 ॥ पलपसमेपुनिहरिजगते॥ जोगनिद्राकरिस्तेएहा॥ शक्तिकरनितियामेंतेहा॥ १३ ॥  
 सृष्टीसमेनिजश्यासक्तजाई॥ श्रुतिजगातइनकेतशागाई॥ पुंनृपस्तेकुंचंदिजनआई॥ ज



गातकिर्निघाक्रमसंनार्इ ॥१४॥ श्रुतिगंकहेहेअजितआइ ॥ जयकारिवरतकुंजगमांइ ॥ स्या  
वरजंगमशरीरधारी ॥ निवकीअवीद्याकुं देऊंमारी ॥१५॥ अविद्याके गुणहेजेऊं ॥ निवबंधन  
विउतरखरहीतेऊं ॥ प्रभुत्तमनेस्वरुपसेएहा ॥ वशकरिरखिहेमायातेहा ॥१६॥ अखिलजीव  
कुं ज्ञानकेदाता ॥ सृष्टिसमेसोत्तमसाक्षाता ॥ मायाकेसंगक्रिंतजवही ॥ वेदप्रतिपादनकर  
नतवही ॥१७॥ सोरमा ॥ स्यावरजंगमजोउं ॥ इंद्रप्रादिअवरोषसब ॥ ब्रह्मज्ञानतहीसोउ  
प्रलेउसतिहीतजामि ॥१८॥ चोपाई ॥ ब्रह्मकुंसेसबहोतहीतोउं ॥ निरविकारिरहूतहीसोउ  
घटआदिविकारहेतेता ॥ अंतैमृत्तिकाहोवततेता ॥१९॥ याकारणकृषीहेसबतेहा ॥ मन  
वचहृतअपतवतेहा ॥ काष्ठपाषाणपरपगजेसें ॥ भूमिवननहीकावेउतेसे ॥ सबकेका  
रणज्ञानितोई ॥ वेदप्रतिपादनकरेसोई ॥२०॥ त्रिगुणमायामृगीनचनदारा ॥ विवेकीजनजो  
होतउदारा ॥ अखिललोककोअघहूरजोउं ॥ किरतिरुपअमृतसिंधुसोउं ॥ तारीकुंसेवि  
केजनतेहा ॥ पापरुडखकुंतजनहीतेहा ॥२१॥ स्वरुपविचारकरिकेतेऊं ॥ रागद्वेषकुंसा

गेतेऊं ॥ जराआदिपुनिभयतजिणऊं ॥ सदातवस्वरुपस्वरुवकोगेऊं ॥ तिनकुंसेवतहेनरतेहा  
पापतनेक्याकेनोतेहा ॥२२॥ घ्राणधारिनरभक्तवतेऊं ॥ सफलनिवतहोतहेतेऊं ॥ तोरभ  
क्तनहिहेनरतेता ॥ स्वासभरतधमनसुंतेता ॥२३॥ दोहा ॥ अहंकारमहतत्वतो ॥ तवप्रवेशकं  
सोउ ॥ सामर्थ्याईअंडसृजि ॥ समष्टिअष्टितोउ ॥२४॥ चोपाई ॥ अनमयादिपंचकोशामांइ  
अन्वयत्तुमचितावतताई ॥ पंचकोशमेंअंतहीतोउं ॥ ब्रह्मरुपपुरुषतुमसोउ ॥ स्थूलसूक्ष्म  
अनमयादिनेहा ॥ तिनपरससुअबाधतुमेहा ॥२५॥ कृषीमगकुंमेस्थूलदगतेऊं ॥ मणीपु  
रचक्रउदरमेतेऊं ॥ तामेंब्रह्मकोध्यानधरेऊं ॥ मणीपुरकस्थानसोदेऊं ॥ सक्ष्मरगवंतकृषी  
हेतेता ॥ उरमेंअकाशकुंभजोतेता ॥२६॥ चक्रुंओरचलतहिनाडितोउं ॥ तिनकोमगहेरुदय  
सोउं ॥ उरसेपरप्रारधामतवतेऊं ॥ सधुमणानामतेजमयतेऊं ॥ ब्रह्मरंध्रकुंसोपाई ॥ यातग  
मेंधुनिनन्मतनाई ॥२७॥ नितहृतउंचनिचमध्यमदेहा ॥ कारणपणीतामितुमतेहा ॥ अ  
धिकचुनहिभावसेणती ॥ तनुंसबतुमप्रकाशाहीतेती ॥२८॥ नितकियेसबयोनितेऊं ॥ नि

नकेपिलेऽप्रत्येतेऽं॥ छोरवडोऽग्निनहीनेसे॥ काष्टकित्पदरशतहीनेमें॥ २६॥ जोनिमिथ्या  
 होतहेनवही॥ निरमलबुधिवंतनरतवही॥ तवस्वरूपसजानताऽं॥ सागोहीव्यवहारनरते  
 ॥ २७॥ सोरवा॥ नितकर्मपाईदेह॥ नरऽप्रादिकृतीवनेतामी॥ पुरुषशक्तिधरतेह॥ फलप्रदतवरु  
 पकुंकही॥ २१॥ चोपाई॥ मायारूमायाकार्यहीउं॥ इनकुंआचणीकरतनसोउं॥ युंजीवतलहरी  
 कुंजानी॥ रायानेतोहेनरधानि॥ २२॥ वेदकर्मकेखितरुयनेऽं॥ तोरचरनउपासततेऽं॥ पदमें  
 अरपेकरमहीतोउं॥ मुक्तिफलकुंदेवतसोउं॥ जन्मनिवरतकपदकुंजानी॥ सेवतसयानावि  
 श्वासऽप्राणी॥ २३॥ इखसेजानपरतहेतोउं॥ आत्मतत्वतनावनसोउं॥ ग्रहाणकियेमुरतीत्  
 मणहा॥ तोरचरितऽमृतसिंधुतेहा॥ २४॥ तामेंस्नानकरिअमृततेउं॥ मोक्षकुंनहिइलतते  
 उं॥ पुनितवचरणकमलमेंतेऽं॥ रहतआनंदरूतभरूतेऽं॥ तिनकेकुलकिसंगकरितेहा॥  
 इतुंनेसागकियेनितगेहा॥ २५॥ सेहा॥ तोरसेवाकेजोग्पही॥ मनुष्यशरिरहेताई॥ आत्मा  
 स्रुददषियत्स॥ जानिसेवहीसदाई॥ २६॥ चोपाई॥ सखप्रदहितकारित्पतोऽं॥ सखाप ॥६८॥

लोहहिभजतहिसोऽं॥ देहादिककीसेवासंजेहा॥ तामेंवासनाजतहीतेहा॥ २७॥ निचदेहकुंध  
 रिकेएऽं॥ भयरुपसंसारमिभमितेऽं॥ आत्मघातिइनुंकुंकहही॥ कुलितशरीरसदाततीलहरी  
 ॥ २८॥ प्राणइंद्रिमनजितेउंतेहा॥ हतजोगकुं कियेमुनितेहा॥ उरमेंतलपायेउंतेऽं॥ अरिपायेता  
 यस्मरितेऽं॥ २९॥ नागदेहत्सभुजकिमोई॥ शक्रबुधीगोपिसोपाई॥ श्रुतीअभिमानिदेवी  
 हमजतेती॥ चरणध्यानधरिपायेतेती॥ ३०॥ सोरवा॥ जगपैलेसिधतोऽं॥ पिलेजन्मनाशवंत  
 कुननरजानेसोई॥ न्रसाभयेहेतूमसे॥ ३१॥ चोपाई॥ अतपिलेअध्यात्मिकदेवा॥ अघिदेवी  
 कभयेततखेवा॥ सबसंहारकरीसुवततवही॥ नरहेनभादिस्थुलभुततवही॥ ३२॥ महतत्वा  
 दिकसूक्ष्मतेऽं॥ स्थूलसूक्ष्महतदेहनरेऽं॥ कालनिमितविश्रामपणुतेहा॥ प्राणइंद्रिआदि  
 रहेनतेहा॥ ३३॥ सबकुंबोधकरासूतोउं॥ इतनेसबकछुरहेनसोउं॥ असतजगतकिउसती  
 तेहा॥ वैशेषीप्रतियाकहेतेहा॥ ३४॥ पातंजलमतिएकिशंप्रकार॥ इखनाशसोमोक्षनिरधा  
 रा॥ नियाइकआत्ममेंभदकहही॥ सांख्यमतिहेसोभियुंग्रहही॥ ३५॥ मिमांसकाकर्मफलतेऽं

सोहा॥ परइंद्रियविषयपर परउरमिनिरधार सखजलऽमरुशरितो तहीएकीशंप्रकार चोपाई

व्यवहारसत्यकहतहीतेऊं ॥ सबआरोपितभ्रमसंएहा ॥ कहहिबिनपिलानेउतेहा ॥ ४६ ॥ अज्ञान  
 सेंभेदेकीनोतेऊं ॥ तोरविषेप्रभुनहीहेतेऊं ॥ अज्ञानऊंसेपरतूमस्वामी ॥ ज्ञानरूपतोयनमोनमामी  
 ४७ ॥ **रोहा** ॥ मनमावतिनगुणरूप ॥ जक्रूपसतहेतेऊं ॥ तोरनिवासपणाऊंसे ॥ सतसुभासतते  
 ऊं ॥ ४८ ॥ **चोपाई** ॥ आत्माकेताननहेतेऊं ॥ आत्मपणेससमानतसोउं ॥ पुंजानिकंचनकेतेऊं ॥  
 कुंरलआदिविकारतेऊं ॥ ४९ ॥ कंचनकेरूपरश्मिहेतेता ॥ कनकरूपसवज्ञानततेता ॥ निजरचित  
 असविश्वकेमाई ॥ अनेपणेनिजरूपकहाई ॥ ५० ॥ ज्ञानरसकनजिचमैतानी ॥ निवासतेरोपुंउर  
 मानि ॥ असेतूमकुंज्ञानततेऊं ॥ मूसुकुंतरिज्ञानतहितेऊं ॥ ५१ ॥ अभक्रहेतोपंडितताई ॥ वचंसंबा  
 धतपशुकीयाई ॥ तूमसेंसगपुनकरतहीजेहा ॥ पवित्रकरतनीवफुदरतेहा ॥ तुमसेउविमुखहे  
 जनतेऊं ॥ सुधनकरेनीजतिचकुंतेऊं ॥ ५२ ॥ प्रभूतमईदिसबंधरहीता ॥ निजज्ञानसेंराजतअमी  
 ता ॥ सबनीचईदिकीशक्तिजेती ॥ पवरतावहोतूमसवनेती ॥ ५३ ॥ इंद्रआदिकदेवहेतेता ॥ माया  
 आत्रणकृतसबतेता ॥ तोरपुजाकरतहीसबतेऊं ॥ जगकरतात्रसादिकतेऊं ॥ स्वामितानीसेव ॥ ६६ ॥

ततेऊं ॥ दाराकृतदेवसबएऊं ॥ ५४ ॥ **सोरता** ॥ सबभुमिपतिकुंतेऊं ॥ खंडपतिसुंदेतबलि ॥ निज  
 प्रजासेलेऊं ॥ देवतपुनिआयेपात ॥ ५५ ॥ **चोपाई** ॥ तुमथलदेवकुंदिनेतेऊं ॥ भयकृततामेंरहीके  
 तेऊं ॥ प्रनुषदिनेहअकअपाई ॥ देवदेतबलिहरिकुंलाई ॥ ५६ ॥ निसमुक्तोमीयासंगा ॥ होवत  
 क्रिडाकृतउमंगा ॥ तवहृष्टिकेलेरासेंएहा ॥ जिचकुंभयेउश्चिरचरदेहा ॥ ५७ ॥ पुरवकर्महेकारण  
 ताके ॥ जिवदेहपायेजीताके ॥ मायासेंपरतूमतोताउं ॥ परपोताकीतवनहिकीउ ॥ ५८ ॥ नभसम  
 अरुमनवाणिजाई ॥ सोमितूमकुंयावतनाई ॥ छुमसमताकुंरहेधारी ॥ पदरहीततूमअंतरचा  
 रि ॥ ५९ ॥ **रोहा** ॥ ध्रुवअनेतनिसतनुंधर ॥ सबयापितिवहोई ॥ तवतूम्यउपरसासता ॥ तोरी  
 नघरहीसोई ॥ ६० ॥ **चोपाई** ॥ तिनकिउपाधिसेंजिचभयेउं ॥ तिनकुंलइनियंताघरेउं ॥ समजा  
 नतकीमतहेतेऊं ॥ केवलअज्ञानरूपहीतेऊं ॥ मतकेइष्टपणासेंएऊं ॥ कुमतइनकीनामभयेऊं  
 ६१ ॥ प्रकृतीपुरुषकीजन्मतोउं ॥ अज्ञहेयाकोघरेनसोउ ॥ सबंधरोनुकीहीततबही ॥ जलबुद्  
 बुदसुजीवहेततबही ॥ ६२ ॥ प्राणरुचक्रनामगुणकृतएऊं ॥ पुनिकारणमलिनहीततेऊं ॥ सु

सिंधुमें सरितही जावे ॥ सबस मनरसमधमें समावे ॥ ६३ ॥ त्रिवमें तवमायामें तेऊं ॥ भ्रमजा निरु  
 बुधिवें ततेऊं ॥ जन्ममें टनतूमकुं जानी ॥ तवअनुं सुनी करतहि प्राणी ॥ ६४ ॥ सो भ्रमके सोहे कऊं तो  
 ६ ॥ जन्मऊं को भयहेतामां ॥ तोरत्वारणआये तनतेऊं ॥ यो निरसंकरभोगेनतेऊं ॥ ६५ ॥ सोरवा ॥ तो  
 रभ्रकुटिरुपकाख ॥ उनालादिनिनधारतो ॥ तवत्वारणो वृधवाज ॥ ताकुं जन्ममृतुनकरही ॥ ६६  
 चोपाई ॥ तोरत्वारणनपायेउतेऊं ॥ ताकुं भयकरतकालतेऊं ॥ घाणइंदि जितेहेतेहा ॥ नासेंच  
 जमनहयतेहा ॥ ६७ ॥ जितनकुं जतनकरेणऊं ॥ गुरुचरणकुं तजिकेतेऊं ॥ उपायमें डखपातहीए  
 हा ॥ बऊंकष्टतहोइकेतेहा ॥ ६८ ॥ भवसागरऊं में सबतेना ॥ अतिडखकुं पावतहेएना ॥ कर्ण  
 धारविनवणिकजेसे ॥ सागरमें डखपावेतेसे ॥ ६९ ॥ सरुदसततचुंदारधनगेऊं ॥ भूमिअरुप्रा  
 णादिमचतेऊं ॥ तवसेवककुं तुछसचतेहा ॥ उपजोगमें नआतहीएहा ॥ ७० ॥ सबही सरुखरहेतु  
 ममां ॥ परमआनेदरुपकहाइ ॥ याविधतूमकुं जानतनतोउं ॥ नरत्रियामें धुनसरुखरतसोउ ॥  
 ७१ ॥ असें जनकुं संसारमां ॥ सरुखप्रदकी उपदारथनोइ ॥ आपेनात्रारुपसंसारें ॥ आपेस ॥



खरहितपुनिएऊं ॥ ७३ ॥ सोहा ॥ निरअहंकारिषुभुपद ॥ उरमें धरिऊषीतोउं ॥ जितपदतलसें  
 पापसच ॥ जनकीहरतहि सोउ ॥ ७४ ॥ चोपाई ॥ सोरुषीतिरथरवेतमेंनाई ॥ बऊंपुसस्थानसेव  
 हितार् ॥ सोनिससरुखरुपधुकिमाई ॥ मनकुं धरतसचविधिमुदपाई ॥ सोनरगेहमेंरुतनांई  
 धिरजविवेकरुहरजानिताही ॥ ७५ ॥ तूमसें भयेअसविश्वतोउं ॥ तवससतासेसत्यहेसोउं ॥ क  
 बुअभिचारपावतएऊं ॥ कबुकमिथ्याहीतहीतेऊं ॥ ७५ ॥ दोनुं कुं जानतहेतोउं ॥ क्रियाजियेभ  
 मदेखतसोउं ॥ प्रभुतववेदरुपतोबानि ॥ अधपरंपराऊंसेप्राणी ॥ बऊंरुतिसेंकरकेएहा ॥ क  
 र्मजडकुं भ्रमाततेहा ॥ ७६ ॥ सृष्टियेलेविश्वनहोहि ॥ लयकेपीछेहीतनसोही ॥ याकारणकेवल  
 तुममाई ॥ मिथ्यारुपहीआततनाई ॥ ७७ ॥ मरिक्चनद्रव्यतातिकेऊं ॥ भेदभयेघटकुंरलतेऊं  
 ताकेबऊंप्रकारसेएऊं ॥ मनसंकल्पसमदुवहीतेऊं ॥ याकुंससतानतहीनेता ॥ अतिअज्ञानि  
 होतहेतेता ॥ ७८ ॥ सोरवा ॥ मायाऊंसेअसजीव ॥ मायाकुंआखिं गनकरि ॥ देहइंदिपाइइव ॥  
 तासेंविषेकुंसेवत ॥ ७९ ॥ चोपाई ॥ आनेदआदिगुणविनएऊं ॥ समृत्तिकुं पातहेतेऊं ॥ सर्पकां





॥ १०२ ॥

इवतनाई ॥ तिवन्प्रविद्यादेतवसाई ॥ सुतेनरनिजदेहकुंतेसें ॥ ओरकी नाइनदेस्वततेसें ॥ ६७ ॥  
 भयकेमेरनहरिहेतेई ॥ स्वरुपसेमायातजहीतेई ॥ निरतरनमिप्रभुमेतोई ॥ ध्यानधरतऊउरमे  
 शोई ॥ ६८ ॥ **होहा** ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमीतेई ॥ स्तुतिकिनेउवेदने ॥ भूमानंद  
 कहई ॥ ६९ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामी शिष्यभूमानंदहृतभाष्याथोसमाप्तीतिमोः ॥ **आपः**  
 ६७ ॥ **होहा** ॥ विष्णुभक्तकेवल्यकुं ॥ ओरंदेवभक्ततेई ॥ सुतवित्प्रादिकपावही ॥ अगना  
 सिमेंहेएई ॥ १ ॥ **चोपाई** ॥ करुप्रकरमनुष्यमेंतोउ ॥ अशिवशिवभतेधनवंतसोउ ॥ लक्ष्मी  
 ऊंकेपतीप्रभुताई ॥ बरुप्रकारभजनहिनाई ॥ २ ॥ यहजाननकिइछामोई ॥ वरसंदेहभयोमम  
 सोई ॥ समृथविरुधशिलवंतदीउ ॥ भक्तकुं विरुधगतिप्रदसोउ ॥ ३ ॥ शुक्रकहेशक्तिरत्नशि  
 वतेई ॥ मत्तत्रिलंगगुणसेचततेई ॥ अहंकारकेतिनप्रकार ॥ सात्विकराजसतामसधारा  
 ध ॥ मनइंदिरांपंचभुततेई ॥ विकारसौलनामहेतेई ॥ इंद्रदेवकुंभजनहितोउ ॥ विशुतिकुंया  
 वेरसोउ ॥ ४ ॥ साक्षिसबकुंदेखततेई ॥ प्रहृतिपरपुरुषहतेई ॥ इनकोभजनकरतजनता ॥ ॥ १०२ ॥

॥ १०२ ॥

निरगुणपदपावतहेतेता ॥ ६ ॥ **सोरवा** ॥ राजायुधिहिरतेई ॥ अष्टमोधभयेपिछे ॥ हरिधर्मसं  
 नितेई ॥ पुछेप्रथमप्रभुकुंही ॥ ७ ॥ **चोपाई** ॥ संननकुंइछतनपतेई ॥ तासेंचोवनहेप्रभुतेई  
 सवजनकल्याणकरताएई ॥ तडकुलप्रगरिवसदेवगेई ॥ ८ ॥ प्रभुकहेअखेप्रहकरुंताई ॥  
 हरलेगेंधिरेधनताई ॥ सोजननिरधनसोतहीनवही ॥ इखिकुं सुहदतजीदेततवही ॥ ९ ॥ जब  
 धनसबंधिहिनहोतएई ॥ तबउरुंवेरागपपावंततेई ॥ मोरेजनसेंतोरातजवही ॥ ताकुंकरतअ  
 लुप्रहृतवही ॥ १० ॥ इतसेंसेवनतोप्रहमेई ॥ सुक्ष्मअनंतसततोहेई ॥ परब्रह्मसतामाचमोई  
 ओरसचनतीभजनममसोई ॥ ११ ॥ यहकारनशिवकुंभतेपानि ॥ पुसनहोतत्तरतयुंजानी ॥ या  
 इरासलक्ष्मिकुंसोई ॥ मतप्रमतउधतअतिहोई ॥ वरदाताकुंभुलकेएई ॥ अतिअपमानक  
 रतहेतेई ॥ १२ ॥ **होहा** ॥ शुक्रकहीशापप्रसादमि ॥ विष्णुश्रीवअजइशानिन ॥ अजशिवत्र  
 तफलशापद ॥ नहीसुविष्णुप्रविन ॥ १३ ॥ **चोपाई** ॥ इतिहासकरतयामोई ॥ रुकासरवरद  
 शिवइखयाई ॥ शकुनिस्तृकनामकहाई ॥ देखिनारदकुंमगमाई ॥ १४ ॥ पुछततिनदेवन

भा-द-उ-  
॥१७३॥

मेंसोई ॥ तुरत प्रसन होत को मोई ॥ सोक हे शिव उपासकंताई ॥ तुरत प्रसन होसे तू मताई ॥ १५ ॥ अ-  
त्यदीष गुण कूंसे अकूं ॥ प्रसन होत को पत हेते कूं ॥ रावणावाणा कर दिगताई ॥ स्तवन करत वेदित  
नसाई ॥ अति श्रेष्ठ ये दइ के हा ॥ किलानारवनाइ पुरपा लेहा ॥ १६ ॥ नारद न यु किने तव ही ॥ सो अ-  
कर नित मांस कुं तव ही ॥ हो प्रतः प्रभिन कुं उं मे अकूं ॥ केदार उपासत शिव तै कूं ॥ १७ ॥ सोरता ॥ शि-  
व को दरान पाई ॥ सप्तमे दिन विरागा कृत ॥ शिर ले दइ लाई ॥ छुरि सें भिते के रात ॥ १८ ॥ तो पाई  
तव करुणा निधि शिव तो उं ॥ कुड से भये अग्नि सम सो उं ॥ नित कर सें प करि करताइ ॥ मरन इच्छत  
कुं लिन वचाई ॥ १९ ॥ पुराण दे दृष र्शिर हे होई ॥ शिव क हे वर मांग हो तोई ॥ देह कुंड र वृथा म न दे  
कूं ॥ मम भक्ति को कारण अकूं ॥ जासे प्रोय पावेत न के कूं ॥ तापर प्रसन भये हम ते कूं ॥ २० ॥ अति  
पापिवर मागत अकूं ॥ जासे सवत न विवेते कूं ॥ तिन तिन शिर कर धरुं मे तव ही ॥ धान रहित हो रे व  
तव ही ॥ २१ ॥ सं निवच उ दास मन शिव होई ॥ अहि अमृत सुं देत वर सोई ॥ यु शिव ने वर दिने तव  
हि ॥ इच्छत गौरि हरन कुं तव ही ॥ २२ ॥ वर परिक्षा करने उ अकूं ॥ धाये शिर कर धारन ते कूं ॥ करत प

अ-७६

॥१७३॥

लायन शिव भय पाई ॥ पिछे रक देख कं पे काई ॥ २३ ॥ सोहा ॥ सब देव लोक में दोरत ॥ भुमि द्रो  
दित्राताई ॥ अखिल देव तो हि तानत ॥ पिछे हगान तां ॥ २४ ॥ तो पाई ॥ उत्तर मिग ये श्रेत धियाई  
वासुदेवर ही ता माई ॥ निरण मु कू निवास ते कूं ॥ जाकुं पाई तन गिरने ते कूं ॥ २५ ॥ इरव कृत शि-  
व रक देख मु राशि ॥ जोग कला से बट रूप धारी ॥ मृग चर म रं मे खला धर ही ॥ कुत्रा कर मां ई न  
जिक गति कर ही ॥ २६ ॥ सुछत प्रभु न मरता लाई ॥ हे श कु नि सुत क्यु ड र माई ॥ चक्र वरग को का-  
रण देहा ॥ क्या करने कुं पी रत ते हा ॥ २७ ॥ क्षण एक विराम कर कूं तोई ॥ जो तव कात सनाओ  
मोई ॥ सहाय वान सोधी जन ते कूं ॥ नित कार ज सिध करत हे ते कूं ॥ २८ ॥ शुक क हे अमृत सम व च  
सो ही ॥ सं नि हरि के सावधान हो हि ॥ सुं नि श्रे किने उ मन माई ॥ सो सब की ने प्रभु के तोई ॥ २९ ॥  
सो स्वा ॥ प्रभु क हे शिव कि वाच ॥ हम क बुस सन ही माने ॥ शाप सें भइ पिशाच ॥ दक्ष कूं के वेत  
भुत पती ॥ ३० ॥ तो पाई ॥ शिव व च कि वि श्वा सत वत व ही ॥ कर परिक्षा कूं मे तव ही ॥ नित कर  
नित शिर से पर धारी ॥ तुरत पिछे ले कूं उ तारि ॥ ३१ ॥ अस स व च इन को हो ये तव ही ॥ वडे देखे

भा. २. ३.  
॥ १०४ ॥

तुममारोतबही ॥ करुं शिक्षा करुं मेतोई ॥ पुनि असत वचवोलेनसोई ॥ ३२ ॥ भ्रमकृतमनोहर  
वचसेणुं ॥ अज्ञितमतिप्रभुकिनतेऊं ॥ निजकर शिरधारतेहिवाग ॥ कुटगयो शिरगिरेतका  
रा ॥ ३३ ॥ जयजयनमोनमोकहीदेवा ॥ करतहिसमनळरिततखेवा ॥ हनेटकाकरपापितव  
हि ॥ सकरसे शिवलुटेतवही ॥ ३४ ॥ पुरुषोत्तमवोलतशिवताई ॥ निजपापे गयेपापिहनाई  
वडसेवैरकरिनरकोई ॥ कुत्रालकबुनरेवेसोई ॥ ३५ ॥ मनवानिगोचरनहीतेऊं ॥ याविधशक्ती  
सागरतेऊं ॥ यहल्लपकोचरात्रनेहा ॥ शिवकण्ठो गयेतेहा ॥ याकुंगावेसुं नही कोउ ॥ संसृ  
तिसें लुटेतनसोउ ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ इति श्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमीतेऊं ॥ वृकसें लो गये  
शिवकुं ॥ भ्रमानंदकहेऊं ॥ ३७ ॥ इति श्रीसहजानंदस्वामी शिष्यभ्रमानंदसहजभावायाः प्रष्टा  
श्रीनितमोः प्रायः ॥ ६६ ॥ दोहा ॥ विष्णुवरेतिनदेवमें ॥ भृगुनेकहीमुनिताई ॥ संशयतनी  
प्रभुभजतही ॥ नेवासिकेमांई ॥ १ ॥ चौपाई ॥ शुक्रकहेसरस्वतीकेतिरा ॥ यज्ञकरतहीरूषीम  
हाधीरा ॥ तिनदेवनमेंहेचरकोउ ॥ सुवविचारकरतरसोउं ॥ २ ॥ सोताननः अजसतभृगुनामा

अ. ६७  
॥ १०४ ॥

रूषीपगयेगये अजधामा ॥ सत्वपरिक्षाकरनकुंणुं ॥ स्तवनपूणामनकिनतेऊं ॥ ३ ॥ तापर  
कोधतातनेकिना ॥ निजमनमेंअतज्ञानिप्रवीना ॥ निजबुधिसेंसमावृतएहा ॥ निजकार्यन  
लअग्निस्तुतेहा ॥ ४ ॥ पुनिकेलागयेततरखेवा ॥ भ्रातकुमिलनेधायेशिवा ॥ भृगुमीलन  
नहीइछेतवही ॥ अमगचलकहीकोपेउतवही ॥ ५ ॥ त्रिशुलहननशिवावेउगाई ॥ उमाशि  
रनाइकोधसमाई ॥ भृगुगयेपुनिवैकुंठमांई ॥ विष्णुपोढेश्रीगोदताई ॥ ६ ॥ सोरगा ॥ उरमेमा  
रेजात ॥ रमाकृततवउकेप्रभु ॥ पलंगसेसाक्षात ॥ उतरिमुनिकेयावपरि ॥ ७ ॥ चौपाई ॥  
तुमआयेसोअतिसुभकारी ॥ शुधकरआसनममक्षण्वारी ॥ तूमआयेहमज्ञानतनाई  
कीनअपराधक्षमाकरताई ॥ ८ ॥ कीमलपदममुकायकवीरा ॥ निजकरसेमरदनकरिजोर  
करऊंपवित्रलोकनृतमोई ॥ तिर्थकरपदतजसेंसोई ॥ ९ ॥ अत्रवममदृश्यचरनकृततोर  
श्रीवासकरिरहेनिशिभोर ॥ शुक्रकहीगंभिरगिरसेंतेऊं ॥ वोलतप्रभुकुंसेनकेतेऊं ॥ १० ॥  
भयनिदततसोपाइएहा ॥ सतलनेनचुपहोइउतेहा ॥ पुनिमुनिकेयागमेंआइ ॥ आपवि



तिभृगुदेतसंनार्द्धं ॥ संनिके मुनिरसंशयहोई ॥ अतिवदविष्टमुकुंमांनिमोई ॥ ११ ॥ **सोहा** ॥ गो  
 संप्रभयशक्तिंके ॥ ज्ञानधर्मकेजोउ ॥ विरागपञ्चैश्वर्यप्रहरी ॥ शुधनत्राकेगृहसोउ ॥ १२ ॥  
**चोपाई** ॥ सागिसमचिन्नांतमुनिजोउ ॥ अकिंचनसाधुकहाईकोउ ॥ इनकुंपरमगतीरुपए  
 ऊं ॥ सुधसत्वमयपुरतीतेऊं ॥ १३ ॥ ब्राह्मणादृष्टदेवहेजाई ॥ युजानीशांतजनभजेताई ॥ जिनकी  
 मायानसरतीऊं ॥ करुप्रकराक्षसजोतेऊं ॥ तामेंसतोगुणहेतेऊं ॥ धर्मप्रर्थकाममोक्षसोउं  
 १४ ॥ शुक्रकहेसरस्वतिकेतिरा ॥ वसतहि विप्रज्ञानगंभिरा ॥ सुवजनसंशयमेहनएऊं ॥ भजी  
 विष्टमुपदपायेतेऊं ॥ १५ ॥ श्रुतकहेशुक्रकेसुखसेजोउ ॥ निकसेहरिजनाप्रमृतसोउ ॥ अचए  
 पानकरतवेरवेरा ॥ मुक्तहोवतहेजनरेरा ॥ १६ ॥ **सोरजा** ॥ शुक्रकहेएकदिन ॥ विप्रपत्तिकी  
 कृततेऊं ॥ भुगिरेतन्मजबलिन ॥ तुरतमरगयेउतवही ॥ १७ ॥ **चोपाई** ॥ मृतकृतकुंविप्रउ  
 गाई ॥ धरेउराजकारपरजाई ॥ करतबोलापदिनमनमिहोई ॥ बोलतवचनछोतकऊंसोई ॥ १८  
 शत्रुबुद्धिदितकेद्वीएहा ॥ अतिलोभिविदोदृष्टपतेहा ॥ असेंनृपकेदोषसेतेऊं ॥ मेरोरु ॥ १७५ ॥

तमरगयेउएऊं ॥ १९ ॥ इरत्रिलहिंसारुपविहारी ॥ अजितइंद्रियलोलुपभारी ॥ असेंनृपकि  
 प्रजाहितेती ॥ निजइखवरिद्रुपिडाहितेति ॥ २० ॥ याविधरोतिनकृतमृतजवही ॥ नृपछारध  
 रिकहेसुंतवही ॥ नवबालब्राह्मणकेतेऊं ॥ मरगयेसंनिकेप्ररुनेऊं ॥ २१ ॥ **सोहा** ॥ हरिही  
 गबोलतविप्रसें ॥ तवपुरमिकीजनाई ॥ धनुषधरतानृपतिजो ॥ दितगातेमरेवताई ॥ २२ ॥ **चो  
 पाई** ॥ धनकृतनारिविनदिततेहा ॥ जिवतपर्यंतरहहीतेहा ॥ उदरभरनृपकीवेराजोउ ॥ न  
 रसुंजिवतहेसबसोउं ॥ २३ ॥ दिततवबालकहोसेतवही ॥ हमहीकरेगेरक्षातवही ॥ तोबा  
 लकनहीलावेतोग ॥ पावकमेंजाऊंदेहमोरा ॥ २४ ॥ दितकहेसंकरणाहीतेऊं ॥ धनुषधरष  
 ट्टुमंतेऊं ॥ अनिरुधवाकदेवहेजोउं ॥ रक्षाकरनसमथनहीसोउं ॥ २५ ॥ जगईश्वरसेंहोत  
 नतेऊं ॥ कर्मकरनइछतत्सतेऊं ॥ बोलतबालकईशाकियाई ॥ तोरप्रतितिमोयनहीआई ॥  
 २६ ॥ **सोरजा** ॥ अर्जनकिनहमनाही ॥ पद्युमनहृदमबलदेव ॥ अर्जननामहीताई ॥ गोशिव  
 धनुषहेतीनकी ॥ २७ ॥ **चोपाई** ॥ दितअप्रवत्तामतकरमोरा ॥ शिवकुंजितिलियेममतोरा ॥ मृ

सुकुंकुंजितिरणमांडुं ॥ तव प्रजादेवेहमलाई ॥ ३० ॥ शुंअरऊननेविष्णामदिना ॥ नित्तगोहगये  
 द्विजप्रविना ॥ नारिकुं संनायुगहा ॥ प्रायेषसतीकालदिगतेऊ ॥ ३१ ॥ अतिआतुरअरऊ  
 नदिगताई ॥ किनपोकारमृत्युसेपाही ॥ द्विजवचसंनकेसुधतलमांडु ॥ स्नानकरिगिरिशिवकुं  
 नाई ॥ ३० ॥ दिव्यअस्त्रसंभारोणऊ ॥ गोदिवलिनेचराईतेऊ ॥ शारबऊविधअस्त्रसेनेऊ ॥ पंज  
 रकरीविचक्रिकागेऊ ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ तामहीद्विजपत्निकत ॥ तमोतवततकार ॥ तनूऊत  
 नभमगातातसो ॥ देखीगेतचऊंवार ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ तवद्विजहृदमकेदिगताई ॥ निंदतअरऊ  
 नऊकुं संनाई ॥ मुठपनोममदेखऊंभाई ॥ नपुंसकवचसतमानेताई ॥ ३३ ॥ प्रद्युमनअनि  
 रुधहरिबलजोगे ॥ रक्षाकरनसमृथनहीसोउ ॥ यहविनअोरइराकोउनाई ॥ धोकप्रऊनकुं  
 चोलेताई ॥ ३४ ॥ धिक्धनुषगोदिवधरतोई ॥ इरमतिमृतलानइछिसोई ॥ याविधवचकिनेकीजत  
 वही ॥ वितयविद्याविस्तारितवही ॥ ३५ ॥ यमराजाकेपुरमेंजाई ॥ द्विजकेसुतकुं देखेनाई ॥ इ  
 इपुरिअग्निपुरिजोगे ॥ चंदनैरतपुरिदुंदिसोउ ॥ वरुणअरुचायुपुरिनेहा ॥ दुंदिगयेरसा ॥ १०६ ॥

तलतेहा ॥ देवुलोकदेखेसवनेऊ ॥ द्विजकेसुतनपायेउतेऊ ॥ ३७ ॥ सोरठा ॥ नियमकियेथे  
 जोउ ॥ समरकेनरनइछिजव ॥ अग्निपैउतसोउ ॥ हृदमकहेमतिनरऊतूम ॥ ३८ ॥ चौपाई ॥  
 विप्रसुतदेखाउंताई ॥ अगनिमेंअंगजागेनाई ॥ आत्माघातकरतहेसोउ ॥ निश्चलकिन्तीपावे  
 नसोउ ॥ ३९ ॥ युंकीअरऊनऊतईराएऊ ॥ दिव्यनितरथपरचैगितेऊ ॥ आथमनिद्विगमें  
 चलेणहा ॥ सप्तसप्तगिरिद्विपजेहा ॥ सिंधुऊतगयेउलेधितेहा ॥ लोकालोकउलेधगयेहा  
 ४० ॥ पुनिपुवेइकियेतममाई ॥ तामेंघोरारहेअंताई ॥ सग्रीवसैमचलाहकतेऊ ॥ मेघपुष्य  
 चऊंघोरातेऊ ॥ ४१ ॥ चलतनदेखयोगेश्वरजोगे ॥ सहस्ररचितस्यचकसोउ ॥ शारतसोअतीत  
 ममेंतवही ॥ चलतहयकरेतममेंतवही ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ सोतमऊंकेपारजोगे ॥ तेजपुजविस्वा  
 र ॥ देखिअरऊनअस्त्रिउंदो ॥ मिचिगयेतेदिवार ॥ ४३ ॥ चौपाई ॥ सोतेजमेंतलहेजोगे ॥  
 तरंगभूषणचायुसेसोउ ॥ सोतलमेंमंदिरअप्रधुता ॥ मणीसंभरतारदिव्यतता ॥ ४४ ॥ ता  
 मेंअतिभयंकरतेहा ॥ शेषसहस्रमुखऊततेहा ॥ फणपरमणीउहेतेऊ ॥ तिनकोतिसेंसो

भा. द. उ.  
॥ १६१ ॥

हस्तनेत्रं ॥ ४५ ॥ द्विहजारहगशांमकं गतिभा ॥ हिमाचलतूत्यश्चेतसीसोभा ॥ नागदेहआसनसू  
स्वकारी ॥ तापरपुरुषोन्नमरहेवारी ॥ ४६ ॥ घनसमतनुपरपितपदधारी ॥ घुसनमुखहगकं  
तन्ननुसारी ॥ अससखदियमणीतामोई ॥ किरिकुंरुलरहेसहाई ॥ तिनकांतिसेचलकही  
तेहा ॥ करहीकांतिशिरकेरातेहा ॥ ४७ ॥ अष्टभुतसुंदरवरेताई ॥ कोस्तभश्रिवलवनमाला  
ई ॥ नंदसुनंदपार्षदमुख्येई ॥ मुरतीकृतआयुधसवतेई ॥ ४८ ॥ पुष्टिशीकिरतिअरुमाया  
अष्टसिधिमुरतिमानकहाया ॥ सोसबमिलिउपासनताई ॥ अर्कनकृतहरीदेवतताई ॥ ४९  
मोरजा ॥ करतवंदनदोउ ॥ भुमाकुंअरकनहृदमही ॥ वरदानकरकेसोउ ॥ अतिउछाहकृत  
होतही ॥ ५० ॥ चोपाई ॥ परमेष्टिकपतिभुमातोउ ॥ बालतहृदमअरकनसेसोउ ॥ हसतवद  
नदोनुकरजोरी ॥ तवदरदानदुछाउरमोरी ॥ ५१ ॥ याकानदितसुतहमलाये ॥ तासेंतोरेदर्शन  
पाये ॥ धर्मरक्षालियुभुपरतोउ ॥ मममुरतिप्रगतेत्तमदोउ ॥ ५२ ॥ भुपरभारअसुरहनिताई  
पुनिममदिगआन्नाशिघधाई ॥ नरनारायणरूपीत्तमदोउ ॥ पुरणकामहोतीभिसोउ ॥ ५३ ॥ १७१ ॥

लोककुंशिरवावनकेकाता ॥ धर्मरगतहोत्तमरूपीराता ॥ ५४ ॥ भूमानेयुंकिनेदोउ ॥ यहीआग्गानाई  
शिरसोउ ॥ दितसुतकुंजेकेपुनिरहा ॥ द्वारवतीआयेदोउतेहा ॥ ५५ ॥ तधावयरुपचालकराई ॥ ही  
जकुंलाइदिनेउतेई ॥ विद्युधामकुंअरकनतोई ॥ परमविस्त्रेपायेउसोई ॥ सबनरमेंसामरचितेनी  
हृदमदिनयुंमानततेती ॥ ५५ ॥ बकुंधाकसअसविधदेखाई ॥ विषेभोगतसवजनकिनाई ॥ चरे  
यागकरिदुछितराई ॥ दितआदिकुंदेवततेई ॥ ५६ ॥ सुंईदुचरषतहेवारी ॥ सुंपताईकुंदेतमुरा  
री ॥ पापिनृपकुंहनिहरिणई ॥ अर्कनधर्मआदिसंतेई ॥ विनधयासपरमेष्टरतेई ॥ धर्मवरता  
तनिमिपराई ॥ ५७ ॥ लोहा ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमीनेई ॥ दितकेनवसुतलाय  
तो ॥ भूमानंदकहेई ॥ ५८ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिश्रियभूमानंदहृतभाषायांनवाशीतित  
मोःप्यायः ॥ ६८ ॥ दोहा ॥ हृदमखिलासंशेषपुनि ॥ जडवंशकृतकीनेई ॥ अनंतपणंकारण  
कृत ॥ अंतअध्यामिणई ॥ १ ॥ नोयाई ॥ शुक्कहेलक्ष्मिजीकेस्वामी ॥ द्वारवतीकुंकेहोईधामी  
सबसेपतिकृतपुरिणई ॥ वरनादवसेंपुरणतेई ॥ २ ॥ नवजोवनउन्नमवेषधारी ॥ वितसमकं

निरुततडनारी ॥ मेदिमिकरेकंडकविहारी ॥ तासेंपुरसोभाहेभारी ॥ ३ ॥ मद्रकरगजकिभीररहाई ॥ अ. ८० ॥  
 नरवातीरथमगमेंनमाई ॥ कुंचनभुषणकृतसवणहा ॥ फुलवाडिसोहेपुरतेहा ॥ ४ ॥ मधकरपंथी  
 सबदुममाई ॥ बोलतनासेंरहेकहाई ॥ सोलहजारपल्लिगहनाई ॥ रमतप्रभुतितनेरुपपाई ॥ ५ ॥  
 उसलकझरकुमुदतीउं ॥ प्रफुलप्रभोतरिणुसोउ ॥ ताहीसेवासिततलमाई ॥ बोलतपश्चिमो  
 हचक्रताई ॥ ६ ॥ सारजा ॥ नहियुंमेपेविनात ॥ निजनारिकुचकुं कुमकृत ॥ पुरुषोत्तमसाक्षात  
 नारिसेंमिलिवेभवकृत ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ गंधर्वगोनकरतहिताई ॥ कृतमागंधवेदिननआई ॥ विला  
 पणवमृदंगवताई ॥ सिंचतनितनारीमुदपाई ॥ ८ ॥ रेचकसेजलपतिपरधाई ॥ किरतप्रभुसिंचत  
 पुनिताई ॥ तक्षनारितक्षगतामाई ॥ दारवसनसवरहेभिंताई ॥ ९ ॥ कुचअरुतुरुदतीततामाई ॥  
 गिरतकमनवडसिरकेराताई ॥ कांतकुषकरिसचभुतमाई ॥ करसेरेचकलेतछिनाई ॥ १० ॥ उसन  
 कामउल्लवसेणुं ॥ प्रफुलवदनसोहतेहतेऊं ॥ स्वनकुं कुमकृतस्तनधरतीउं ॥ किराकरतचलत  
 केससोउ ॥ सिंचतदारकुंरागताई ॥ हस्तिनिदूथमेंहस्तिकिनाई ॥ ११ ॥ दोहा ॥ नरनरतकि ॥ १०८ ॥

युंनितनिहे ॥ तिवतरुगाईवताई ॥ किराकरिपरभूषणप्रभु ॥ देतउतारिताई ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ विहा  
 रकरतहृदयकेतीउं ॥ गतिनिरिक्षणहसनोसोउं ॥ हासिमसकरिअंगसंगतेऊं ॥ हरतबुधिराकी  
 सचनेऊं ॥ १३ ॥ प्रभुमेंएकबुधिवंतणहा ॥ जडउन्नतसुबोलतेहा ॥ चितनकरिहरिकीउरमाई ॥ बो  
 लतनारिसोकऊंनृपताई ॥ १४ ॥ हेकुररीप्रभुपीलतजबही ॥ निदभंगकरतहीबोलितबही ॥ रतिया  
 मेंतगसोवतसबही ॥ टिरोरितुमसवतनकबही ॥ १५ ॥ हास्यसहीतविलोकिएऊं ॥ नहीतवचो  
 कहस्योचिंततेऊं ॥ जेसैंहमतेमेंतप्रहीई ॥ रतियांनिदकरतनहिमाई ॥ १६ ॥ हेचकवीरतियामेंनेऊं  
 रोवतस्वामिनदेखिगेऊं ॥ दासीहमइछतहेतेसे ॥ प्रभुपदकिसजगिरधरनेसे ॥ हगमिचितुमइ  
 छतहोतेसे ॥ १७ ॥ दोहा ॥ सिंधुतुमसचतनाई ॥ बोलतहिइस्विरमजेसे ॥ संगकरिहमताई ॥ ह  
 रिगयोकुचकुं कुमचित ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ चंद्रक्षयरोगभयोहितोई ॥ निशातमनहिरतहिमाई ॥  
 हरिकिवचणकांतकेतेऊं ॥ विसरिहमचिंतासैंणऊं ॥ तेसैंतप्रचिततहोतेऊं ॥ हयकुभासतहोत  
 मतेऊं ॥ १९ ॥ हेमलयचंद्रनकेवापु ॥ हमतोरकछुनहिविगारायु ॥ कामउपजाचतहमकुंआई ॥

भा. द. उ.  
॥ १७८ ॥

सोतेरेकुंउचिननाई ॥ १७ ॥ मेघत्तमलत्रशरिरकाकिना ॥ वधुकुंवलमसखाघविना ॥ जेसेंहमनेसेंत्  
प्रताई ॥ श्रिवुलचिनचित्तमनमाई ॥ बेरबेरसेंभारिउताई ॥ अश्रुमुं कतहोहममाई ॥ १९ ॥ कोकील  
हरमकेपदतोउं ॥ सुंदरकंठसेंबोलतसोउं ॥ मृतकुं कुंजिवातहोतेऊ ॥ प्रियहमक्याकरेअबतेऊ ॥ २० ॥  
गिरित्मचलतरुबोलननाई ॥ बजोअर्थचित्तमनमाई ॥ हरिपदस्तनधरनहमजेसें ॥ शिखरधर  
नत्तमइछततेसें ॥ २१ ॥ दोहा ॥ शुकैरुदकांगनदित्म ॥ कमलकिसोभाहीन ॥ हेततृहरिनिरी  
शरणी ॥ नपाइहमसुंरिवन ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ हंसपैलेएकांतमितेऊ ॥ हमसेंकहीस्मृतप्रभुतेऊ ॥ ह  
रिकेइततानेहमतोइ ॥ इंधुपियोआयेत्तमसोई ॥ २५ ॥ वधुकिबतीयांकहोहमताई ॥ चलरुहदरु  
खिहेकिनोई ॥ हमकुंछोरगयोहेएऊ ॥ श्रिकेसंगरमतहेतेऊ ॥ २६ ॥ सबत्रियाऊंमेहेएऊ ॥ वधुमेए  
कनिष्ठाश्रितेऊ ॥ असविधभावकरिहरिमिएऊ ॥ परमगतिपाइसारसवेऊ ॥ २७ ॥ केवलप्रवण  
कियेयेतेऊ ॥ योषितमनतानतनसतेऊ ॥ हगभरिहरिकुंदेखतताई ॥ असमनहरेसोअधिकनाई  
२८ ॥ पतितानिअतिप्रेमसेंतेऊ ॥ चरणसेवादिकरततोतेऊ ॥ जगतगुरुसेवतमुदपाई ॥ ताकोतपक

अ. ८७

॥ १७९ ॥

छंवरमोनताई ॥ २९ ॥ सोरगा ॥ वेदकेधर्मज्ञोउं ॥ तिनकुंपालतईशसदा ॥ गेहमेंरखतसोउ ॥ अर्थ  
पैरमकामदिखात ॥ ३० ॥ चौपाई ॥ गृहीकेधर्महेज्ञोतोउं ॥ सबदेखावनहरमसोउ ॥ सोलहजारशत  
नारिताई ॥ अष्टपदराणीअधिकरुहाई ॥ ३१ ॥ एकएककुंदशदशतोउं ॥ उननकरतहिसुतहरी  
सोउं ॥ एकसउसहस्रसेसीएहा ॥ इतनेअधिकअरुलक्षतेहा ॥ ३२ ॥ तिनमिमहारथिअगारता  
ता ॥ इनकेनामसेनासाक्षाता ॥ अनोहधप्रद्युमनदिप्रिमानुं ॥ सांभधुवृकरहज्ञानुं ॥ ३३ ॥ भानुं  
रुचित्रभानुंअरुणा ॥ पुंकरवेदबाहुनिपुणा ॥ सुनेदनश्रुतदेवविरुया ॥ सगोधचित्रबाहुंकवी  
धुपा ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ मधुसूदनकेसुतसवे ॥ प्रद्युमनवरकहाई ॥ सोपरनतरुक्मियाऊंकी ॥ सु  
ताकुंअतिमुदपाई ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ तासेभयेअनोरुपतोउं ॥ दशहजारगजसमबलसोउं ॥ सोरु  
क्मिकेसुतकीसुता ॥ परणतसुतासुतअहुता ॥ ३६ ॥ तासेवजनाभभयेऊं ॥ मुशालसेअवशी  
घरहेऊं ॥ तिनकेप्रतिबाहुसबाहुताई ॥ सुबाहुसुतसातसैनसहाई ॥ ३७ ॥ ताकोसतसैनसुतभ  
येऊं ॥ वधुकेकुलमीभयेपुनितेऊं ॥ अधनअशास्त्रिहीतनएऊं ॥ बऊंविर्व्याधुषवंततेहा ॥ ३८

अ. ८८

॥ १८० ॥

त्याण्डेवभयेसवणहा ॥३०॥ जडवंशामेनरभयेतेऊं ॥ तिनकी गणाना करे जोतेऊं ॥ एकप्रयुतवर्षे  
 जवही ॥ वंश कि संख्या पातनतवही ॥ ३१ ॥ जडकुमार परावनहारा ॥ तिनकी उप्रगा विवातधारा  
 ॥ असंख्यतादवडके मोई ॥ प्रयुतप्रयुतके लाखकहाई ॥ इतनो आडकनूपकोतेऊं ॥ वंशभयेउ  
 कहेहमतेऊं ॥ ३२ ॥ सोरवा देव अकरजधताई ॥ दैतहनाये जितनेही ॥ उसनभयितनमोई ॥ पी  
 रतसोसवजो कडुंऊं ॥ ३३ ॥ चापाई ॥ तिनकुं जितनलियेसवरेवा ॥ प्रभुधरेतजडकुलमितेवा ॥  
 आईअवतारधरेहेनेऊं ॥ एकप्रधिकशतकुलहेएऊं ॥ ३४ ॥ तिनको घुमाणप्रभुकहाई ॥ वरे  
 भयेतजडप्रनुंसरिताई ॥ शयाआसनचलनरुहसही ॥ क्रिडास्नानमेंभेलेबसही ॥ ३५ ॥ चितश्री  
 हृष्टमितादवजेहा ॥ देहभानभूलेसवतेहा ॥ तिरथमेंगंगप्रधिककहाई ॥ छोरकरिडारतअव  
 तोई ॥ जडमेंहृष्टकी किरती जोउं ॥ सवतिरथमेंबडअससोउं ॥ ३६ ॥ हृष्टकेदेवीरुहेततेहा ॥  
 सारूप्यमुक्किपायेतेहा ॥ लक्ष्मिदेवीहृष्टकिएहा ॥ तिनलियुं प्रजादितपकरितेहा ॥ ३७ ॥ ह  
 रिनामगावेकनहीतेऊं ॥ अमगलकुं हनेनरतेऊं ॥ रूषीवंशामेंधर्महीजेता ॥ सोसवकिनेहृष्ट ॥ ११० ॥

नेतेता ॥ कालचक्रआयुधहेताई ॥ भुमिभारहरेसोआश्रयनोई ॥ ३८ ॥ सबजनअंतरजामितोउं  
 देवकीनिमितअजन्मावोउं ॥ जडउत्तमसेवकहेतीरा ॥ अधर्मरारतभुजसेतीरा ॥ स्थावरते  
 गमकेडखहरता ॥ व्रतवधुकुं हसीमोक्षदभरता ॥ ३९ ॥ नितमगरक्षाकरनेकाता ॥ मलकळा  
 विरुपधरिगता ॥ तिनकुंघटितकर्मजोतीउं ॥ करतहिहृष्टप्रअघहरसोउं ॥ असहरिचरितकन  
 हितेऊं ॥ प्रभुपदसेवाइछततेऊं ॥ ४० ॥ कंदरकथाकुं कननितोउं ॥ कहनिअरुविचारनोसोउं  
 तामेंनिष्ठासेनराऊं ॥ प्रभुधामकुं पावेतेऊं ॥ कालवेगतामेंकबुनाई ॥ इनलियुंवनसेवेनुपताई  
 ४१ ॥ हरिलिलासेंरतेऊं ॥ पापसमुहमुक्किरुपएऊं ॥ नारिकालगतिमेंरनतेऊं ॥ नृपसेचेवन  
 ततीनितगेऊं ॥ ४२ ॥ सौहा ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमितेऊं ॥ हृष्टलिलावरननतो  
 भूमानंदकहेऊं ॥ ४३ ॥ नरनाशपणचरनदिग ॥ श्रीनगरेकरिवास ॥ किनेउभूमानंदने ॥ दशमस्कं  
 धकीभास ॥ ४४ ॥ संवतअवारअणव ॥ माशुधपंचमीदिन ॥ श्रीनघनरनारायण ॥ चरनदिग  
 ग्रंथकिन ॥ ४५ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदसहजभाषायानवृत्तितमो ॥ प्रायः ॥ ४६

भा.द.उ.

॥१११॥



॥समाप्तम्॥ लि० शवलजेठामोराजी संवत् १९५१ नापोषशुद्धी १५ नेभृगूवासरे श्रीमेंथालाग्रामे  
समाप्तोये ॥ श्री ॥

अ.६०



॥१११॥